पुरुष रोग चिकित्सा

लेखक
डा० हरबंस लाल कपूर

प्रकाशक
रतन एन्ड को० दरीबा कलां देहली
मूल्य ५ रु.

ঠ।

केवल रजिस्टर्ड मेडिकल प्रैक्टीशनर्ज के लिए

श्री हरि

पुरुष रोग चिकित्सा

लेखक व सम्पादक :

डॉक्टर हरबन्सलाल कपूर

प्रकाशक :

रतन एण्ड को०, बुकसेलर्स

दरीबा कलाँ, दिल्ली-६

मूल्य १·५.०० रुपये

प्रकाशक :
रतन एण्ड को० बुकसेलर्स,
दरीबा कलाँ देहली-६

मुद्रक :
शर्मा प्रिंटिंग प्रैस
विश्वासनगर सरवरिया मार्केट
शाहदरा, दिल्ली-३२

दो शब्द

मेरी प्रबल इच्छा थी कि "पुरुष रोग चिकित्सा" पुस्तक को शीघ्रातिशीघ्र लिख कर अपने पाठकों के समक्ष प्रस्तुत कर सकता किन्तु मुझे क्योंकि अपने चिकित्सालय में पर्याप्त समय देना पड़ता है, इसलिए मैं इसको पूरे तीन साल के पश्चात पाठकों की सेवा में प्रस्तुत करने में समर्थ हो सका हूं।

इन तीन वर्षों में जब भी मैं किसी अनुभूत प्रयोग की प्रशंसा सुनता था तो मेरी यह इच्छा होती थी कि यह प्रयोग भी "पुरुष रोग" चिकित्सा में अवश्य प्रकाशित होना चाहिए अतएव जब तक मैं वह प्रयोग प्राप्त न कर लेता था चैन नहीं पड़ता था प्रस्तुत पुस्तक में कुछ एक ऐसे भी प्रयोग हैं जिनके जाननें वाले इस बात पर अड़ गये कि हम अपने इन प्रयोगों को पुस्तक में प्रकाशित करने की अनुमति नहीं देंगे। हमने तो अपने जीवन भर की कमाई—यह प्रयोग आपको केवल इसलिए भेंट किये हैं कि आप इन को अपने चिकित्सालय में प्रयोग में लायें। इस पर महीनों विवाद चलता रहा। अन्त में किसी प्रकार उन को समझा बुझाकर मैंने इन प्रयोगों को प्रकाशित करने की अनुमति प्राप्त कर ली और पुस्तक में उन सभी प्रयोगों को स्थान दे पाया। और मुझे इस बात की वड़ी प्रसन्नता है कि मेरे पाठक इससे पूरा लाभ उठा सकेंगे।

यह पुस्तक चिकित्सा सागर और विज्ञान के अनुसार लिखी गई है। मेरा विश्वास है कि यह एक सर्वोत्तम कृति बन पड़ी है और नवयुवकों के लिए अत्यन्त लाभप्रद सिद्ध होगी।

इसकी रचना के प्रमुख उद्देश्य हैं—नवयुवकों को यौवन सम्बन्धी रहस्यों का ज्ञान कराना, गुप्त रोगों का विश्लेषण करना, जो व्यर्थ की चिन्ता का विषय न बने रहें, दुर्व्यसनों से

पैदा होने वाले दोषों तथा उनकी चिकित्सा से परिचित कराना, दामपत्य जीवन को आनन्द तथा सुख पूर्वक व्यतीत करने के लिए मार्ग का दर्शन कराना जिससे गृहस्थाश्रम स्वर्ग को भी मात कर सके, नौजवानों को सावधान करना कि वह बिना विचार किए विज्ञापित औषधियों पर व्यर्थ हो धन व्यय कर तथा लाभ के स्थान पर हानि न उठावें।

पुस्तक में प्रत्येक रोग के संक्षिप्त लक्षणों का विवेचन करने के पश्चात उसके निदान के लिए आयुर्वेदिक एवं यूनानी औषधियों का वर्णन किया गया है ताकि गुप्त रोग ग्रस्त हुआ युवक वैद्य हकीम एवं डाक्टरों के चक्कर से बच कर अपनी आर्थिक हानि से बच सके। कई स्थानों पर वैद्य हकीम अथवा डाक्टर आसानी से नहीं मिल सकते, वहाँ के रोगी नवयुवकों के लिए तो यह पुस्तक और भी अधिक उपयोगी और उपादेय सिद्ध होगी।

इस पुस्तक में मैंने पुरुषों के प्रायः सभी रोगों का विस्तृत विवेचन करने के पश्चात उनको दूर करने का सरल रास्ता और शास्त्रीय उपाय देने की चेष्टा की है। यदि इस पर भी आपको कोई व्यक्तिगत कठिनाई आ पड़े या रोग का निदान करने में सफलता न मिले, या अन्य किसी प्रकार की व्यक्तिगत सम्मति (राय) की आवश्यकता जान पड़े तो निसंकोच मुझे लिख सकते हैं। मेरी भरसक चेष्टा होगी कि आपकी हर समस्या का समाधान उचित रूप से कर सकूं।

इस विशाल पुस्तक की रचना में मुझे पुरुष रोग चिकित्सा सम्बन्धी हिन्दी, उर्दू तथा आँगल भाषा की विभिन्न पुस्तकों से सहायता प्राप्त हुई है। अतः मैं उन पुस्तकों के रचयिताओं का हृदय से आभारी हूं।

(डाक्टर) हरबंश लाल कपूर,

सरकुलर रोड, शाहदरा दिल्ली-३२

पहला अध्याय

पुरुषों के गुप्त रोग

संसार के समस्त जीवधारियों में मनुष्य सर्वश्रेष्ठ प्राणी है। भगवान दयानिधि ने जैसे प्रत्येक जीव का जोड़ा उत्पन्न किया है उसी प्रकार मनुष्य महोदय के लिए भी उसी के योग्य बुद्धि-शील तथा कान्तिवान जोड़ा उत्पन्न किया। जिस प्रकार ऊँट का जोड़ा ऊँटनी, घोड़े का जोड़ा घोड़ी, कबूतर का कबूतरी, कुत्ते का जोड़ा कुतिया, चिड़िया का चिड़ा बनाया उसी प्रकार पुरुष का जोड़ा नारी बनाया। यह जोड़ा बनाने का अभिप्राय: सृष्टि रचना था। यही कारण था कि परस्पर प्रीति और आकर्षण भी उचित रूप से हृदयों में उत्पन्न कर दिया जिसके फल स्वरूप दिन प्रतिदिन सृष्टि का विस्तार होता रहे।

यहाँ यह समझ लेना चाहिए कि प्रेमप्रीति का साधन, सन्तानोत्पत्ति का हेतु कुशल क्षेम का स्रोत, भोग विलास का आधार शुद्ध तथा स्वच्छ उत्तम शुक्र (वीर्य) ही है। मानव प्राणप्रद द्रव्य (वीर्य) एक उत्तम बीज के समान है जो जितनी उच्च श्रेणी का होगा उसका फल भी उसी उत्कृष्ट श्रेणी का उत्पन्न होगा।

प्राय: पुरुष अपने में कोई दोष नहीं देखता। बेचारी नारी

अबला पर कितने ही अत्याचार किए जाते हैं। सन्तानोत्पत्ति में तनिक भी विलम्ब हो जाने पर तुरन्त ही उस पर बाँझ होने का दोष लगा दिया जाता है। किन्तु यह स्मरण रखना चाहिए कि वीर्य की विकृति (अशुद्धता) के कारण भी प्रायः सन्तानोत्पत्ति में अवरोध हो जाता है। प्रायः सांप्रतिक चिकित्सकों का अनुभव है कि पुरुष व नारी के वीर्य में ऐसे कीटाणु (Sperma toza) पाये जाते हैं जो गर्भ स्थिति के पश्चात वृद्धि को प्राप्त होते हैं और कुछ दिनों के पश्चात एक माँस के लोथड़े का रूप धारण कर लेता है। यह भी माना जाता है कि यदि पुरुष के वीर्य के कीटाणु स्त्री के वीर्य (रज) के कीटाणुओं से अधिक बलवान हों तो पुत्र अन्यथा पुत्री उत्पन्न होगी। इन कीटाणुओं को अणुवीक्षण यन्त्र (Microscope) द्वारा देखा जा सकता है आप इन्हें नंगी आँखों से नहीं देख सकते।

मनुष्य के लिए उचित है कि सर्वप्रथम वह अपनी परीक्षा किसी अनुभवी चिकित्सक से करवाले। यदि कोई रोग हो तो उसकी सुचारु रूप से चिकित्सा करायें। जिन पुरुषों के वीर्य के कीटाणु अपनी अल्हड़पन की काली करतूतों से मर जाते हैं। उनका वीर्य कदापि सन्तानोत्पत्ति के लिए योग्य नहीं रहता। इसके लिए उन्हें वीर्य शोधक औषधियों का सम्यक सेवन करने के पश्चात ही सफलता मिल सकती है।

शुद्ध वीर्य के लक्षण

पुरुष का वीर्य न अत्यन्त गाढ़ा और न पानी के समान पतला होता है। पुष्ट (प्रबल) वीर्य का वर्ण श्वेत और निस्सरण काल में उचित रूप से उछल उछल कर आनन्द के साथ

निकलता है। शुक्र की उत्तमता का लक्षण है कि पहले गाढ़ा फिर शनैः शनैः कुछ कालोपरान्त पतला हो जाये स्त्री का शुक्र (रज) हल्के पीले रंग का होता है। वीर्य का स्वच्छ और स्वस्थ होना अत्यावश्यक है।

वीर्य को अशुद्ध (विकृत) करने वाले कई कारण हैं जिनसे न केवल वीर्य की ही अशुद्धि होती है बल्कि कुछ एक ऐसे रोग भी उत्पन्न हो जाते हैं जिनसे मनुष्य वस्तुतः मनुष्य नहीं रहता अर्थात उसमें मर्दानगी समाप्त प्रायः हो जाती है। जिन व्यक्तियों का वीर्य उत्तम नहीं होता अथवा अशुद्ध व बलहीन होता है प्रथमतः तो उनके सन्तान होती ही नहीं और यदि होती है तो रुग्ण, निर्बल और क्षीणकाय। जो सारी आयु के लिए रोगों का घर बनी रहती है।

वीर्य को विकृत करने वाले कारणों में हस्तमैथुन (Master-bation) अनैसर्गिक मैथुन, मैथुनाधिकता ही तीन बड़े कारण कहे जा सकते हैं जिनके फलस्वरूप अनुमानतः ९० प्रतिशत मनुष्य प्रमेह, स्वप्नदोष, शीघ्रपतन सदृश सन्ततिनाशक और प्राण नाशक अनेक रोगों से आर्त होकर बाजीकरण की दुर्बलता जैसे भयंकर रोगों के शिकार बन जाते हैं। हस्त मैथुन एक दुर्व्यसन है और अत्याधिक घिनौना रोग है। इसका उचित वर्णन इस पुस्तक में अन्य गुप्त रोगों के विश्लेषण के साथ किया जा रहा है और इसके दुष्परिणामों पर विस्तृत प्रकाश डालने का प्रयत्न किया गया है।

वीर्य

वीर्य को उर्दू में 'मनी' पंजाबी में 'धात' तथा आंगल भाषा में 'सीमन' इन नामों से उच्चारण किया जाता है।

जो हम प्रतिदिन भोजन करते हैं, उसका रस भिन्न-भिन्न अवस्थाओं में रहकर, लगभग २८ दिन के पश्चात एक दूधिया रंग की लेसदार गाढ़ी धातु में परिणित हो जाया करता है, जिसे 'शुक्र' तथा 'वीर्य' कहते हैं। जो कि मैथुन (सम्भोग) करने पर अथवा स्वप्न में भी पुरुषेन्द्रिय (मूत्र प्रणाली) द्वारा प्रकट होता है, बस यही वीर्य होता है। उससे विशेष प्रकार की गन्ध आती है। वस्त्र पर लग जाने से कपड़ा सूखने पर अकड़ जाता है। यदि, वीर्य पतला हो तो वस्त्र नहीं अकड़ता। यदि, वीर्य क्षीण और अशुद्ध हो तो केवल हलके रंग का दाग लग जाता है। उस अवस्था में वीर्य को शुद्ध तथा गाढ़ा करने के लिए चिकित्सा की ओर ध्यान देना चाहिए।

वीर्य कैसे बनता है ?

जो कुछ हम प्रतिदिन खाते-पीते हैं उसका पहले आमाशय में पहले घोल बनता है। तदपश्चात् अन्तड़ियों में स्थित पाचक पित्त (जो कि पित्ताशय से बाहर अंगशुति आंत में गिरता है) से खाना हज्म होता है शरीर रूपी यन्त्र द्वारा थूक, मूत्र, मल, (पाखाना) पसीना आदि जितने मल हैं पृथक होकर अपने-अपने आमाशयों में चले जाते हैं। यथा वस्ति (मसाना) में मूत्र-गुदा वलियों अर्थात् मलाशय में पाखाना आदि और भोजन का शुद्ध रस पृथक बन जाता है, उसको रस धातु के नाम से पुकारते है। तिल्ली तथा जिगर जो कि शरीर रूपी यन्त्र के पुर्जों के द्वारा रस धातु का वर्ण लाल हो जाता है और रक्त (खून) का रूप धारण कर लेता है। यह दूसरी धातु रक्त कहलाती है। रक्त अर्थात् खून गाढ़ा होकर मांस से जो चिकनी धातु निकलती है उसे मेद अर्थात चर्बी कहते हैं। इस चतुर्थ धातु के ठोस हो

जाने पर अस्थि बनती है। अस्थि के सूक्षम से सूक्षम, इन नेत्रों से अदृश्य, छिद्रों से निचुड़ कर 'मिख' अथवा 'मज्जा' धातु बनतीं है यह छटी धातु है, जो कि हड्डी को नालो के अन्दर रहती है। फिर मज्जा से शुद्ध वीर्य धातु बनती है। यह सातवीं धातु 'शुक्र' कहलाती है। इसको तिब्ब-ए-यूनानी में मनी कहते हैं।

इस प्रकार प्रत्येक धातु के दूसरी धातु में परिणित होने में लगभग चार दिन का समय व्यतीत होता है तथा भोजन का इस प्रकार उपरोक्तक्रम से रसधातु लेकर सातवीं वीर्य धातु का रूप धारण करने में लगभग २८ दिन का समय लगता है।

उत्तम वीर्य के लक्षण

जो वीर्य बिलौर पत्थर के सदृश सफेद चमकदार दूधिया रंग का न बहुत पतला न बहुत गाढ़ा (गाँठदार) हो, दरम्यान गाढ़ा और चिकना तथा लेसदार हो, जिसमें से मधु की-सी गन्ध आवे। परिमाण में एक वार के मैथुन में ६ माशा से दो तोला तक निकले और जिसमें अणुवीक्षण यन्त्र के द्वारा देखने से तीव्र गति वाले कृमी उपस्थित होते हैं, यह वीर्य या मनी उत्तम दर्जे की होती है।

निकृष्ट वीर्य के लक्षण

पूर्व कथित लक्षणों के विपरीत लक्षण युक्त वीर्य—निकृष्ट वीर्य होता है।

दुष्ट वीर्य के लक्षण

वात दोष अर्थात सौदा खिलत से दूषित वीर्य रूक्ष-सा होता है तथा पीड़ापूर्वक स्खलित होता है अल्प मात्रा में निकलता है।

पित्त दोष अर्थात् सफरावी खिल्लत से दूषित वीर्य पीत वर्ण युक्त ऊष्ण स्पर्श वाला, पतला जलवत होता है और जलन करता हुआ द्रुतगति (तेजी से) बह निकलता है।

कफ दोष अर्थात बलगमी खिल्लत से दूषित वीर्य, गाँठदार, कठिन, शीतल स्पर्श युक्त, मीठी-मीठी खारिश करता हुआ निकलता है। रक्त दोष अर्थात खून की खिल्लत से दूषित वीर्य दुर्गन्ध-युक्त कि जिसमें से खून की-सी गन्ध आती है और प्रयत्न परिमाण में जलन वा धड़कन करता हुआ कई वार पूय (पीप) के साथ मिला हुआ निकलता है।

असाध्य तथा साध्य वीर्य दोष के लक्षण

जिसमें मल अथवा मूत्र की भाँति गन्ध आवे वह वीर्य चिकित्सक की चिकित्सा के अयोग्य होता है। परन्तु जिसमें मुर्दे की-सी दुर्गन्धि आती है अथवा गांठदार है अर्थात मूत्र तुल्य है ऐसा वीर्य ठीक तो हो सकता है, परन्तु बड़े परिश्रम से चिकित्सा करनी पड़ती है। शेष लक्षण युक्त वीर्य दोष सुखः साध्य हैं और शीघ्र ठीक हो सकते हैं।

वीर्य शरीर में रहता है उसका शरीर के किस स्थान से निष्क्रमण होता है और क्यों ?

जिस प्रकार दूध में घी रहता है ठीक उसी प्रकार शरीर के प्रत्येक स्थान में वीर्य रहता है। जिस प्रकार दूध को मथने (बिलोने) से घी निकलता है उसी प्रकार पुरुष के स्त्री के साथ मैथुन करने से वीर्य निकलता है, किन्तु फिर भी शुक्राशय वीर्य के रहने का स्थान है।

लिंग के नीचे जो एक थैली-सी लटक रही है उसको अण्ड-कोप कहते हैं और आंगल भाषा में (टैक्टीकल) जो कि इसथैली में गोलियों के समान दिखाई देते हैं, उनका कार्य वीर्य बनाना यानी मंजा छोटी धातु को वीर्य में परिवर्तित करना है और इन अण्डकोषों से वीर्य दो नालियों द्वारा वीर्यकोष जिसको कि ऊपर शुक्राशय के नाम से सम्बोधित किया गया है, में एकत्रित होता रहता है, और मैथुन के समय बड़े वेग से उछल कर मूत्राशय से बाहर निकलता है।

वीर्य क्यों अमूल्य है ?

जैसा कि ऊपर कहा गया है कि आज का जो भोजन खाया गया है वह प्राय: अट्ठाईस दिन तक रक्त, मांस, चर्वी, हड्डी और मज्जा में क्रमश: प्रतिवर्तित हो अन्त में वीर्य का रूप धारण करता है। अब आप स्वयं ही अनुमान लगावें कि मनुष्य केवल इच्छाओं से प्रभावित होकर इस अमूल्य वस्तु को शीघ्र और एकबारगी नष्ट कर देता है। इसकी एक बिन्दु खून की एक शत बिन्दुओं से तैयार होती है। एक बार के सम्भोग से आप अनुमान लगाइये कितने बिन्दु खून के नष्ट होते हैं। जिस की कमी, मनुष्य की मशीनरी प्रति दिन के भोजन द्वारा रुधिर बनाकर और फिर क्रम से वीर्य बनाकर नहीं पूरी कर सकती। जो प्रति दिन सम्भोग कर रहे हैं वह मानो अपने लिए कब्र खोद रहे हैं और जो एक रात में दो-तीन बार मैथुन करते हैं, उनके बारे में आप यों समझ लीजिये कि वह अपनी मृत्यु को टेलीग्राम द्वारा आमन्त्रित कर रहे हैं। सम्भोग वस्तुत केवल सन्तति उत्पादन के लिए ही करना चाहिए न कि अपनी इच्छाओं का दास बनने के लिए। तनिक सोचिये कि जितने

वीर्य का एक बार के सम्भोग में निष्क्रमण होता है उसमें प्रायः दो करोड़ वीर्य कीटाणु होते हैं। यदि वीर्य को अणुवीक्षण यन्त्र से देखा जाये तो बड़े वेग से चलते-फिरते कीटाणु देखने में मिलेंगे। इन कीटाणुओं की लम्बाई १?७०० इञ्च के लगभग होती है, जो कि केवल अणुतीक्षण यन्त्र द्वारा ही देखे जा सकते हैं। जो कीटाणु वेग से चलते-फिरते दिखाई देते हैं वह गर्भ स्थापन कर सकते हैं। धीमी चाल वाले कीटाणु गर्भ-स्थापन नहीं कर सकते। गर्भ-स्थापन की शक्ति रखने वाले हर कीटाणु में उस मनुष्य का जिसके वीर्य का यह कीटाणु है रूप, रंग, स्वभाव, बुद्धि या इच्छाओं का चित्र खींचा हुआ होता है।

प्रकृति का यह अदभुत चमत्कार करोड़ों कीटाणुओं का संग्रह—जो वीर्य के रूप में एक अमूल्य जौहर है उसको एक ही सम्भोग में वृथा नष्ट कर देना कहां की बुद्धिमत्ता है? यही कारण है कि आजकल के नवयुवकों के चेहरे पीले, शरीर सिकुड़े हुए तथा हड्डियों का ढांचा दिखाई देते हैं। सो मैं निवेदन करूंगा कि नौजवान इस अमूल्य रत्न की कदर करें। क्योंकि यदि यह शरीर में है तो सब प्रकार की शक्तियाँ यथा पौरुष शक्ति, शारीरिक शक्ति, दृष्टि की शक्ति, हृदय शक्ति, मस्तिष्क शक्ति आदि विद्यमान रहती हैं। यदि यह न रहे तो सभी शक्तियाँ प्रायः नष्ट हो जाती हैं। संस्कृत में एक लोकोक्ति है जिसका कि अनुवाद इस प्रकार है—कि ब्रह्मचारियों पर व्याधियाँ (रोग) अपना प्रभाव नहीं डाल सकतीं। यह शत प्रतिशत सत्य है, जिसके अन्दर यह जौहर मौजूद है उसे न सरदी सताती है न गरमी और न कोई रोग। क्योंकि वह

व्यक्ति पूर्ण शक्ति से सम्पन्न है। अतः यह मनी (वीर्य) उसी प्रकार रक्षा योग्य है जिस प्रकार कि दूसरी मनी अर्थात रुपया, जिसको कि सेफ के अन्दर बन्द रक्खा जाता है। आप इस को अपनी शरीर रूपी तिजोरी में बन्द करके रखिए।

वीर्य के शरीर से अत्यन्त निष्क्रमण होने के कारण हानियां और भयानक परिणाम

सबसे प्रथम वीर्य के अत्यधिक निष्क्रमण की व्याख्या की जायेगी कि निष्क्रमण की अधिकता हम कहां तक कर सकते हैं और ठीक ठीक निष्क्रमण कहाँ तक कहा जा सकता है। वैसे तो जैसे कि ऊपर कहा गया है कि सम्भोग केवल सन्तति उत्पादन के लिए ही करना चाहिए। और यदि स्त्री गर्भवती हो जाये तो मैथुन करना बन्द ही कर देना चाहिए और लड़का अथवा लड़की उत्पन्न होने के पश्चात पत्नी का स्वास्थ वैसा ही रहे जैसा कि गर्भवती होनें से पूर्व था। शिशु की आयु जब दो वर्ष हो जाए और वह माता का दूध पीना छोड़ दे, तब, फिर भी यदि सन्तति की और आवश्यकता समझें तो सम्भोग करना चाहिए अथवा नहीं। किन्तु चूंकि लोग ऐसा नहीं करते, क्योंकि साधारण मनुष्य के लिए मन अपने वश में न रखने के कारण काम पर विजय पाना अत्यन्त कठिन है। और जो काम पर विजय पाते हैं वह दोनों लोकों (इस लोक और परलोक) में सुख और शान्ति पाते हैं अतः जो ऐसा नहीं कर सकते अर्थात काम पर विजय नहीं पा सकते, जहाँ तक हो सके अधिक से अधिक समय तक अपने मन को वश में करने का यत्न करें। और जो यह भी नहीं कर सकते वह सम्भोग तीन मास के

पश्चात करें और यदि यहाँ तक भी अपने मन को वश में करने की क्षमता नहीं रखते तो मास में जब तक पत्नी को मासिक धर्म होता है उस दिन से लेकर सोलह रातों तक स्त्री के गर्भाशय का मुँह खुला रहता है हर मासिक धर्म के तीन दिन छोड़ कर शेष बारह रातों का समय सम्भोग के योग्य है और इस काल में एक बार ही मैथुन करना ठीक समझा जाता है। अब तनिक कुछ और आवश्यक बातों पर ध्यान दीजिए। अब इससे अधिक वीर्य के निष्क्रमण के तीन भेद जो कि एक दूसरे से बद से बदतर हैं, वह इस प्रकार हैं कि जो मास में चार बार मैथुन करते हैं अर्थात प्रत्येक सप्ताह में एक बार, यदि वह दूध, दही, घी, मक्खन, मलाई और फल इत्यादि का प्रयोग प्रतिदिन भोजन के साथ करते हैं और मस्तिष्क व शारीरिक परिश्रम कम करते हैं वह तो उस मैथुन की अधिकता को किसी प्रकार सहन कर लेते हैं लेकिन कमी को फिर भी पूरा नहीं कर सकते। किन्तु वह जो एक मास में आठ वार हर सप्ताह दो बार मैथुन करते हैं, वह पौष्टिक पदार्थों का प्रयोग करने पर भी इस कमी को कदापि पूरा नहीं कर सकते, और पूरा करना तो एक ओर कि वह उस सुख को जो कि उनको शक्ति नष्ट करने से पैदा हुआ है, सहन नहीं कर सकते और इसके अतिरिक्त अपनी कई प्रकार की शक्तियां नष्ट कर लेते हैं, और दिन प्रतिदिन क्षीण होते चले जाते हैं. और तृतीय श्रेणी के हैं वह व्यक्ति जो प्रतिदिन मैथुन करते हैं अथवा अनैसर्गिक व्यभिचार अर्थात हस्त मैथुन व गुदा मैथुन जिनका कि वर्णन हम पीछे कर आये हैं, इनके द्वारा वीर्य को वृथा नष्ट करते हैं उन के लिए कुछ अर्से के वाद इस संसार में कोई जगह नहीं रहती।

वह वीर्य के अत्यधिक व्यर्थ निष्क्रमण के कारण सम्भोग करने की शक्ति नष्ट कर बैठते हैं और पत्नी उनसे प्रेम करना छोड़ देती है और पत्नी ही क्या संसार की कोई भी स्त्री उनसे प्रेम नहीं कर सकती। स्त्री ही जीवन का दूसरा साथी है। जब साथी ने ही साथ देना छोड़ दिया तो फिर जीवन दूभर हो जाता है। इसके अतिरिक्त बार-बार के सम्भोग से स्त्री का स्वास्थ्य बिगड़ जाता है। श्वेत प्रदर जिसे उर्दू में "सैलान उर रहम" और आँगल भाषा में "लिकोरिया" कहते हैं का शिकार हो जाती है और गर्भाशय में फोड़ा हो जाता है और औरत दुबली पतली पड़ जाती है यहाँ तक कि क्षय रोग—तपेदिक का शिकार हो जाती है और इस प्रकार कर उसे विवाह के पश्चात जो एक स्वर्ग था श्मशान बन जाता है और दूसरे वीर्य निकलते रहने से पाचन शक्ति क्षीण पड़ जाती है और किसी प्रकार का भोजन नहीं पचता आधा किलो दूध पीने से दस्त लग जाते हैं जब भोजन ही नहीं पचेगा तो रुधिर कहाँ से बनेगा ? तो आप ही बतलाइये कि रुधिर न बनने से या कम बनने से शरीर कहाँ तक काम देगा। और साथ ही सर्व प्रकार के रोग शरीर के अन्दर अपना स्थान बना लेते हैं, और वह दिन आ जाता है, कि मूर्ख युवक जिसने कल अपने पैरों पर आप कुल्हाड़ी मारी थी काल का ग्रास बन जाता है। तृतीय शरीर की शक्तियां और सब की सब धातु जिनका वर्णन ऊपर किया जा चुका है नष्ट हो जाते हैं, नेत्र भीतर धंस जाते हैं। दृष्टि क्षीण पड़ जाती है, काम करने में मन नहीं लगता। थोड़ा काम करने से मस्तिष्क और शारीरिक थकावट महसूस होती है आये दिन जुकाम नजला खांसी, ज्वर आदि घेरा डाले रहते हैं। शरीर जो कल योवन

काल की शक्तियों से सम्पन्न था अब क्षीण हो जाता है। अस्थियों का पिंजर निकल आता है। शरीर पर मांस दिखाई नहीं देता, और दिन रात सम्भोग क्रिया में रत रहने वाले सज्जन कागजी पहलवान दिखाई देने लगते हैं। हृदय में धड़कन होती है कभी सिर फटा, कभी कमर में दर्द, कभी कुछ कभी कुछ, पुरुषत्व का काम नहीं रहता। वीर्य पतला होकर अपने आप अथवा स्वप्न में साधारण सी उत्तेजना होने पर या तनिक सी प्रणय का विचार आने पर निकलना आरम्भ हो जाता है। शरीर पर कड़ियों का एक जाल सा दिखाई देता है। कहीं पर भी कोई प्रसन्नता दिखाई नहीं देती। जलसा जलूस, नाटक, खेल कूद इत्यादि बिल्कुल अच्छे नहीं लगते। उस समय एकान्त वास ही अच्छा तथा अनुकूल प्रतीत होता है और यहाँ तक कि जीवन से ऊबकर आत्महत्या करने की ठान लेता है और अधिक मैथुन व अनैसर्गिक व्यभिचार के कारण वीर्य निष्क्रमण पर पश्चाताप करता है। अब क्या हो सकता है जैसे कि कहा गया है कि "अब पछताये क्या होत जब चिड़िया चुग गई खेत" वीर्य नाश के भयानक परिणामों को कहां तक लिखें। विषय लम्बा होने के डर से मैंने यहाँ संक्षेप में ही लिख दिया है। आखिर में मैं केवल इतना ही कहूंगा कि इन कुटेवों का शिकार मनुष्य न तो अपनी स्त्री का प्रेम पात्र बनने के योग्य रहता है और न ही स्वयं ही शारीरिक और अलौकिक सुखों को प्राप्त कर सकता है।

गुप्तेन्द्रिय तथा वीर्य क्या वस्तुएं हैं। इनकी असलियत क्या है और उनका अभिप्राय: क्या है। इन बातों का ज्ञान न होने के कारण छोटी आयु के भोले भाले लड़के कुसंगति के

कारण कुकर्मों का शिकार बन जाते हैं। प्रायः बारह वर्ष की आयु में लगभग वीर्य प्रकट होना आरम्भ हो जाता है। प्रकट होने से तात्पर्य यह है कि जिस प्रकार मोतिए की कली जब छोटी होती है तब भी उसके अन्दर सुगन्ध विद्यमान होती है किन्तु प्रकट नहीं होती, ठीक इसी प्रकार जन्म से शरीर के भीतर विद्यमान होता है किन्तु कच्चा होता है, जिस को बड़ी आयु वाले दुराचारी व्यक्ति अनुचित लाभ उठाकर अपनी नीच वासना को पूरा करने के लिए अपने जाल में फंसाते हैं और उनको भी आचार हीनता का कुमार्ग दिखाते हैं और कई प्रकार से रुपये, पैसे और खाने पीने की वस्तुओं का लोभ देकर उन्हें अपने जाल में फंसा लेते हैं और धीरे धीरे प्रेम व प्रणय की बातें करके बालक के साथ व्यभिचार करते हैं और इस कुकर्म को गुदा मैथुन करते समय उस बालक की इन्द्रिय में भी जिसके साथ कि मैथुन किया जा रहा होता है सख्ती आती है। अगर ऐसा लड़का जिसको कि एक बड़ी आयु वाले बदमाश ने खराब किया है किसी दूसरे लड़के के साथ वही खराबी शुरु कर देता है और परिणाम यह होता है कि सैंकड़ों, सहस्त्रों अपितु लाखों की संख्या में अल्प आयु में ही एक दूसरे से खराब हो जाते है। दूसरा कारण लड़कों के बुरे कर्मों में फँस जाने का यह होता है कि जब बड़ी आयु वाले बदमाश लड़के अथवा युवक ने अल्प आयु वाले लड़के को यह बुरी आदत सिखाते हैं तो अल्प आयु वाले निर्दोष लड़के को भी इस प्रकार की बुरी आदत पड़ जाती हैं जिससे वह एकान्त में सोते समय, बिस्तर में अथवा स्नानागार या शौचालय में वह ऐसी क्रिया करता है और इस प्रकार स्वाद आने पर वह जोर जोर से अपनी पुरुषेन्द्रिय को

हिलाता है और वार वार के जोर जोर से हिलाने से उसका वीर्य जो कि अभी बना ही था, झटके से बाहर आ जाता है। एक वार इस तरह का अस्थाई तथा भयानक स्वाद ले लेने के के वाद वह कच्ची आयु का मूर्ख लड़का, बार-वार, प्रति दिन, समय पाकर यह क्रिया करता रहता है। इसे जैसा कि मैं आप को पुस्तक के आरम्भ में वतला आया हूं। हस्त मैथुन या हस्त क्रिया कहते हैं। इसका दूसरा नाम आत्म दुर्व्यसन है यह एक ऐसी बुरी आदत है कि जिससे भली भांति, समझ आ जाने पर भी छुटकारा पाना कठिन है।

तीसरे, विना किसी वड़ी आयु वाले आचारहीन मनुष्य की, संगति के, लड़के स्वयं भी इन कुकर्मों का आखेट हो जाते हैं। वह इस प्रकार कि एक ही श्रेणी के, अथवा दो मित्र बालक, कभी-कभी इकट्टे होते हैं तो इस आयु में प्राकृतिक नियम के अनुसार, रात्री में, सोते समय, जव दोनों में से, किसी एक को, या दोनों की, पुरुषेन्द्रियों में, किसी समय, सख्ती आती है तो बिना किसी पूर्व नियम के ही। यदि, पुरुषेन्द्रिय साथ वाले लड़के से, या अपनी रान से ही, रगड़ खा जाए, तो स्वाद की प्रतीति होने पर फिर जान-बूझकर ही पुरषेन्द्रिय को रगड़ने का यत्न किया जाता है।

इस प्रकार की, बारम्वार क्रिया से, हस्तमैथुन के बुरे कर्म में फंस जाते हैं। चौथे कभी-कभी ऐसा भी होता है कि जननेन्द्रिय के, सुपारी वाले ऊपर के पर्दे के नीचे मैल जम जाता है और तनिक सी, मोठी-मीठी सी खारिश होती है। उसको हटाने तथा साफ करने के लिए। लड़के का हाथ जब सुपारी पर पड़ता है तो सुपारी के गोल किनारे पर लगने से, उसके रस

आता है तो फिर वह इस कुकर्म में फंस जाता है। पाँचवें कई बार इस कुकर्म में फंसे हुए किसी लड़के को यह कुकर्म देखने पर, उसकी नकल करने लग जाते हैं और इस प्रकार की नकल करने वाले प्रायः गुप्तेन्द्रिय की आवश्यकताओं से अपरिचित होते हैं। यदि, माता-पिता अपने बालकों को इस घृणित कर्म से होने वाली हानियों तथा गृहस्थ जीवन के विधानों से यथा समय परिचित करा दें तो असंख्य युवक सुरक्षित रह सकते हैं। माता-पिता तो यह समझते हैं कि उनके बालक अलग आयु के और नासमझ हैं और वह उनके सामने कई बार प्रणय की ऐसी चेष्टाएँ करते हैं कि जिनको कि बालक बड़े ध्यान से आँख बचाकर देखते हैं तो वह बालक माता-पिता की एक बार नकल करने पर बार-बार नकल करते हैं और इस प्रकार दुष्कर्मों का आखेट बन जाते हैं।

आनन्दपूर्वक जीवनयापन के लिए—निवास, निद्रा, व्यायाम, ब्रह्मचर्य, मैथुन एवं आचार-विचार

भारतवर्ष विश्व गुरु कहलाता है: वास्तव में विश्व का सर्वश्रेष्ठ देश भारतवर्ष ही है। केवल रहन-सहन, अध्ययन एवं अध्यापन दृष्टिकोण से ही नहीं बल्कि निवास, आचार-विचार, व्यायाम, ब्रह्मचर्य एवं सदाचार आदि के लिए भी भारत का स्थान सदा से श्रेष्ठ समझा जाता है:

मगर हाँ, आज की रहन-सहन एवं आचार-विचार विषयक प्रगति में बहुत कुछ पाश्चात्य देशाभिमुखता देखने में आती है। स्वाध्याय का स्थान अखबारी बहक, स्नेह का स्थान कुत्सित संघर्ष और त्याग का स्थान स्वार्थ इसी प्रकार से विभिन्न

प्रकार की प्रवृत्तियों की अधिकता देखने में आती है। वेद, पुराण एवं शस्त्रादि चर्या को बाजारू वातें कहकर टालने में जरा भी हिचकिचाहट नहीं होती। यही कारण है कि सभ्य कहलाने वाले इस युग में भारतवासी भी संस्कृति एवं सभ्यता से दूर हटते जा रहे हैं।

निवास—हमारे ऋषि महर्षियों के निवास स्थान की चर्चा सुनते ही वनती है। उनके आचार-विचार एवं रहन-सहन से आज की तुलना जमीन को आकाश से मिलान करना है, फिर भी वर्तमान युग के अनुकूल ही निवास का सुप्रवन्ध नितान्त आवश्यक है। परिवार के साथ निवास करने के लिए ऐसे गृह की आवश्यकता है। जिसमें पाकशाला, भण्डार तथा आवागमन का सुन्दर दरवाजा आदि के प्रवन्ध हों। वातों की चर्चा हमारे शास्त्रों में प्रचुर रूप से मिलती है। शरीर की आयु के अनुकूल ही गृह निर्माण का भी प्रसंग है। लिखा भी है—

गृहस्थस्य क्रिया: सर्वा न सिध्यन्ति गृहं विना।
यतस्तस्मादगृहारंभ समयः प्रोच्यते बुधैः॥

ऊँचा और चौकोर जमीन में घर बनाना उत्तम है। हमारे शास्त्रकारों ने केवल गृह काही नहीं वल्कि ग्राम, नगर एवं राज्य प्रासाद से लेकर साधारण गृह पथ एवं गली आदि का भी वर्णन बहुत ही विस्तृत ढंग से किया है। राज्य प्रासाद, राजा के सेनापति, मन्त्री, ज्योतिषी एवं चिकित्सक आदि के गृहों की लम्वाई-चौड़ाई आदि का वर्णन तो है ही, चिकित्सालय भवन की भी लम्बाई-चौड़ाई आदि का विधान वहुत ही सन्तोष एवं स्वास्थ्यप्रद देखने में आता है।

नींद—मस्तिष्क जब अपने कार्यों से थक जाता है तो उसको भी विश्राम की आवश्यकता पड़ती है। प्रकृति औढर-दानी है। इसने सृष्टि के प्रायः प्राणिमात्र के लिए निद्रा की सृष्टि रच कर अनिवर्चनीय सुख प्रदान किया है। श्रम को दूर करने के लिए निद्रा से बढ़कर संसार में अन्य कोई साधन नहीं है दिन भर परिश्रम करने के पश्चात रात को शयन कर लेने पर उक्त थकावट दूर हो जाती है। नियमित रूप से शयन कर लेने पर शारीरिक अवयवों के सभी कार्यों में पुनर्जीवन का संचार हो जाता है। लिखा भी है—

निद्रायत्तं सुखं दुःखं पुष्टिः कार्श्यं बलाबलम्।
बृषता क्लीवता ज्ञानमज्ञानं जीवित न च॥

अर्थात—समस्त सुख दुःख, शरीर की पुष्टता और कृशता, बल एवं निर्बलता, पुरुषत्व और क्लीवता, ज्ञान और अज्ञान तथा जीवन और मृत्यु ये सभी निद्रा के ही अधीन हैं।

मगर हाँ, कुसमय अर्थात अनियमित निद्रा से लाभ के बदले हानि हुआ करती है। अतः स्वास्थ्य सुखाभिलाषियों को नियमानुकूल ही शयन करना चाहिए।

शस्त्रानुकूल रात ही शयन के लिए उपयुक्त समय है। यह समय केवल मनुष्य के लिए ही नहीं बल्कि थोड़े से रात्रिचर पशु और पक्षियों को छोड़कर प्रायः प्राणिमात्र के लिए उपयुक्त है। शीतकाल के अलावा सभी ऋतुओं में चार घड़ी रात व्यतीत होते ही सो जाना चाहिए। शीतकाल में रात्रि बड़ी होती है, इसलिए कुछ देर कर सोने से भी निद्रा पूर्ण हो सकती है।

सोने का स्थान साफ सुथरा और हवादार होना चाहिए। जीवन के लिए भोजन, जल और हवा की विशेषता तो पहले ही बतलायी जा चुकी है। 'शुद्ध हवा के अभाव से हमारे शरीर में नाना प्रकार की बीमारियाँ हो जाया करती हैं।

सोने के लिए विस्तरा साधारण होना चाहिए। विशेष मुलायम बिस्तरे पर शयन करने पर त्वचा एकदम शिथिल पड़ जाती है और कड़े विस्तर पर सोने से लोमकूप बन्द हो जाने की सम्भावना रहती है। बिस्तरे की चादर और तकिए की खोल को बरावर साफ करते रहना चाहिए। सोने पर शरीर से पसीना निकलता है जिससे बिस्तरे से गन्ध आने लगती है। इस दुर्गन्ध को मिटाने के लिए बिस्तरे को साफ करने के अलावा धूप में भी सुखाते रहना चाहिए। जिस कमरे में शयन करना हो उसमें किरासन तेल की लालटेन कदापि नहीं रखना चाहिए। सोने के समय रोशनी की कोई आवश्यकता भी नहीं पड़ती। रोशनी रहने से तो नींद में अड़चन पैदा होती है। अगर रोशनी अनिवार्य हो तो मीठे तेल का चिराग जलाकर बन्द कमरे में सोने से कोई हानि नहीं होती। कुछ लोग मुँह ढककर सोते हैं लेकिन इस आदत से नुकसान होता है। मुँह ढककर सोने से श्वासोच्छ्वास में गड़वड़ी पैदा हो जाती है।

भोजनोपरान्त शीघ्र ही सो जाने से कभी-कभी अन्न के पाक में दिक्कत हो जाती है। अतः भोजन करने के कुछ देर बाद ही सोना उचित है। प्रतिदिन प्रायः आठ घण्टों तक सुख-पूर्वक सोना चाहिए। लेकिन वालक और वृद्ध के लिए अधिक समय तक सोना भी हानिकर नहीं होता। रात्रि के प्रथम पहर में ही शयन करने पर प्रातःकाल उठने में सुविधा होती है।

रात को विशेष देर तक जगने पर सूर्य निकलने तक सोना पड़ता है जिसके चलते शरीर का भारीपन, आलस्य, सिर दर्द, ग्लानि, मन्दाग्नि और अजीर्ण आदि उपद्रव उपस्थित हो जाते हैं रात्रि जागरण से ब्रह्मचर्य में भी विक्षेप होता है।

दिन में सोने की आदत बहुत ही खराब है लेकिन ग्रीष्म-ऋतु क्षीणकाय और श्रान्त पुरुष तथा बालक और वृद्ध को दिन में सोना कोई बुरा नहीं। सोने के पहले शौचादि से अच्छी तरह निवृत होकर हाथ पैर धो लेना चाहिए। बिस्तरे पर जाकर अपने धर्मानुकूल भगवान को स्मरण करके मन को पूर्ण पवित्र कर लेना चाहिए। इस प्रकार अभ्यास डालने से बुरे स्वप्न एवं स्वप्नदोष का नाश हो जाता है।

व्यायाम—व्यायाम करने से शरीर में सुन्दरता, सुडौलता एवं फुर्ती होती है। मानव शरीर को स्वस्थ रखने के लिए व्यायाम बहुत ही उपयोगी है। इससे सुखपूर्वक नींद भी आती है। भारतवर्ष एवं रोम के निवासी व्यायाम के लिए विशेष कार्य कुशल समझे जाते हैं।

नियमपूर्वक व्यायाम करने से आहार का उत्तम पाक, आलस्य का नाश एवं बल तथा उत्साह की वृद्धि होती है। व्यायाम की आदत धीरे-धीरे डालनी चाहिए। अत्यधिक व्यायाम कर लेने पर हानि होती है। व्यायाम के लिए खुला एवं हवादार स्थान नितान्त आवश्यक है। भोजन के बाद व्यायाम करने से नुकसान होता है। व्यायाम विषयक प्रोफ़ेसर राममूर्ति की पुस्तक विशेष उपयोगी है व्यायाम एवं प्राणायाम एक ही शरीर के दो अंग हैं। अतः प्राणायाम विषयक पुस्तकों को भी देखना जरूरी है।

जिन लोगों को आफिस में बैठकर काम करना पड़ता है उन्हें अपने अवकाश के मुताबिक सुबह-शाम दूर तक टहलना चाहिए।

व्यायाम की मात्रा का विचार करना भी आवश्यक है। व्यायाम इतना ही करना चाहिए कि हल्का पसीना हो जावे और हल्की सांस फूलने लगे। शरीर की सामर्थ्य के अनुसार व्यायाम लाभदायक है। थका मारने वाली क्रिया से थकान उत्पन्न होकर दैनिक कर्तव्यों के पालन में बाधा उत्पन्न होती है।

बालकों के लिए दौड़ने वाले खेल, युवकों के लिए दण्ड, बैठक, कुश्ती, घुड़सवारी, तैरना, कुएँ से पानी खींचना, चारा काटने की मशीन चलाना आदि तथा ४० वर्ष से अधिक अवस्था के व्यक्तियों को टहलना अच्छे व्यायाम हैं। ३०-३५ वर्ष से अधिक अवस्था के व्यक्तियों को व्यायाम में विशेष साव-धानी बरतनी चाहिए।

ब्रह्मचर्य—वीर्य रक्षा को ब्रह्मचर्य कहते हैं। हिन्दू शास्त्रा-नुकूल गृहस्थों को २५ वर्षों तक ब्रह्मचर्य व्रत पालन करने का आदेश दिया गया है। वास्तव में शरीर का सर्वप्रथम वस्तु वीर्य ही है। किसी ने सच ही कहा है—"मल के आधीन बल और शुक्र के आधीन जीवन है।" हम जो कुछ आहार करते हैं उसका पाक होने पर रस, रक्त, मांस, अस्थि, मज्जा बनने के अन्त में वीर्य बनता है।

ब्रह्मचर्य से धर्म, यश एवं आयु की वृद्धि होती है साथ ही यह लोक-परलोक के लिए भी परम हितकारी हुआ करता है। ब्रह्मचर्य रहकर विद्या अध्ययन करने से अत्यधिक लाभ होता

है। विद्याध्ययनोपरान्त गृहस्थी में प्रवेश करने पर सुन्दर सन्तान की उत्पत्ति होती है। ब्रह्मचर्य की महिमा अपार है। इससे आरोग्यता ही नहीं बल्कि सौन्दर्य, ऐश्वर्य एवं आयु की प्रचुर वृद्धि होती है। इस विषय पर स्वामी शिवानन्द जी की लिखी पुस्तक "ब्रह्मचर्य ही जीवन है" देखनी चाहिए।

मैथुन—शास्त्रों में आठ प्रकार के मैथुन बतलाए गए हैं। करने पर भी विस्तृत विवेचन देखने में आता है। वीर्य रक्षा के बल पर ही महाबलशाली महावीर, भीष्माचार्य एवं भीमसेन आदि वीर बड़े बेजोड़ साहस का परिचय देने में समर्थ हो पाए थे।

कुछ लोगों का कहना है कि अपनी पत्नी के साथ जब चाहें भोग कर सकते हैं लेकिन ऐसा करना महान मूर्खता है मैथुन केवल सन्तानोत्पत्ति के ख्याल से ही करना चाहिए। इन्द्रिय सुख की लालसा से किया हुआ मैथुन तेज, प्रताप, धर्म, यश एवं आयु के विनाश का कारण होता है।

स्त्री के ऋतुमति होने के बाद (रज दर्शन के दिन से) सोलह दिनों तक जरायु का मुख खुला रहता है। इसी अवस्था में भोग का वर्णन आता है मगर एक मोटे हिसाब से स्वस्थ आदमी को महीने में केवल दो बार मैथुन करना चाहिए।

दिन में उषा काल, देवस्थान, श्मशान, बगीचा, राजगृह तथा शरद नव रात्रादि में मैथुन करना वर्जित हैं। अष्टमी, पूर्णिमा, अमावस्या और रविवार आदि को भी मैथुन न करना चाहिए।

रजस्वला, बूढ़ी, भ्रष्ट आचरण वाली, मोटी, गर्भवती,

प्रसूता एवं सगोत्र वाली स्त्री से कदापि भोग नहीं करना चाहिए ।

आचार—आचार का स्थान विद्या एवं धन से भी सम्मान पूर्ण है । इसके सामने विश्व की सभी शक्तियाँ नतमस्तक हो जाती हैं । जिसका आचार उत्तम है वह मनुष्य दुःखी हो ही नहीं सकता है । आचार पर भगवान मनु ने बहुत ही सुन्दर बातें लिखी हैं ।

विचार—विचार शब्द का अर्थ बहुत ही व्यापक है । विचारवान पुरुष यम और नियमों का पालन करते हुए संसार के वास्तविक सुख को प्राप्त करते हैं । "सत्य, अहिंसा, ब्रह्मचर्य अस्तेय एवं अपरिग्रह को यम और शौच, संतोष, तप, स्वाध्याय और ईश्वर प्राणिधान का नियम कहते हैं ।

स्वास्थ्य और सौंदर्य

स्वास्थ्य के जानने योग्य नियम

१—संसार का प्रत्येक जीव सुख चाहता है, सुख धर्म के विना नहीं हो सकता इसलिए प्रत्येक मनुष्य को धर्म का पालन करना जरूरी है ।

२—हिंसा, चोरी, शास्त्र विरुद्ध इच्छा, चुगली, कूट भाषण असत्य भाषण, असम्द्ध वचन, शारीरिक पीड़ा, दूसरों को मारने का विचार, किसी को नीच निगाह से देखना, यह दस पाप कर्म शरीर वाणी या मन से त्याग देना चाहिए ।

३—शुभ चिंतक मित्रों की सेवा भक्तिपूर्वक करनी चाहिए लेकिन अशुभ चाहने वाले लोगों की भी विपत्ति के समय सेवा करनी उचित है।

४—बेकार रोगी, और शोक वाले की शक्ति के अनुसार सहायता करना आवश्यक है।

५—किसी भी तरह की सहायता चाहने वाले को विमुख न करे, न उसका अपमान करे, न उस पर झूठा कलंक लगावें।

६—उपकार करने वाले शत्रु का उपकार करना योग्य है सम्पत्ति और विपत्ति में एक सम रहना चाहिए। कारण में डाह करना चाहिए, फल में नहीं जैसे राम लखपति किस कारण से हुआ। उस कारण से श्याम को लखपति होने का डाह करना योग्य है। श्याम को यह डाह न करना चाहिये कि राम लखपति क्यों हो गया।

७—समय देखकर थोड़ा और मधुर बोलना चाहिए। परिचित मनुष्यों को देखकर मुस्कराकर खुद पहले बोलना चाहिए।

८—किसी को अपना शत्रु और अपने को किसी का शत्रु नहीं बतलाना चाहिए। अपमान तथा मालिक को अप्रीति प्रकट न करनी चाहिए नहीं तो महान हानि होती है।

९—अकेले अपने आपको सुखी करने की इच्छा खराब है। सब लोगों पर आंख बन्द करके विश्वास न करना चाहिए।

१०—दूसरों को प्रसन्न करने का सबसे अच्छा उपाय यह है कि पहले उसका आशय जाने और फिर उसी आशय के अनुसार आचरण करें।

११—इन्द्रियों का एक दम दमन न करना चाहिए और न उनके बिल्कुल वश में हो जाना अच्छा है। हर काम में मध्यम रहना बहुत अच्छा है।

१२—धर्म, अर्थ और काम से शून्य जीवन विताना अच्छा नहीं है।

१३—प्रतिदिन शेव बनाना, महोने में दो वार वाल कटवाना नाक, कान आँख, गुदा आदि मलके स्थानों को खूब साफ रखना चाहिए। साफ सुथरे कपड़े पहने, लेकिन चमकीले कपड़े न पहनें। सुगन्धित द्रव्य लगायें। लेकिन तेज कड़ी सुगन्धित से परहेज करें।

१४—नदी को तैरकर पार करना, आग की लपटों के पास जाना, सन्दिग्ध जानवर की सवारी करना खतरनाक है।

१५—मुँह बन्द करके हँसने, जम्हाई लेना, या छींकना हानिकारक है।

१६—विना कारण नाक खुजलाना, दांतों से उंगली दबाना या जमीन को खोदना बुरी आदतें हैं।

१७—शारीरिक कार्य, बातचीत और मानसिक विचार थकावट से पहले ही बन्द कर देना चाहिए।

१८—सूर्य की तरफ न देखो, बोझा सर पर रख कर न चलो अत्यन्त महीन चीज को तेज रोशनी को खराव वस्तु को और अप्रिय चीजों को आंखों से ज्यादा न देखो।

१९—शरीर के किसी भाग से, मुँह से, नाखूनों से बाजा न बजायें। मुर्दे के धुएँ से बचें, शराब न पिएँ तथा पराई स्त्रियों से दोस्ती न करें।

२०—इस संसार का फिक्र-सोच करना बेकार समझें जैसे बुद्धिमान आचरण करें वैसे ही आचरण करने में बुद्धिमानी है।

२१—मनुष्य का सबसे उत्तम आचरण यह है कि मन को कोमल रक्खो, शक्ति के अनुसार दान देता रहे, चित्त और इन्द्रियों के आधीन न रहे, परमार्थ स्वार्थ-बुद्धि रखें।

२२—जो आदमी इस बात को याद रखता है कि मेरा दिन कैसे व्यतीत हो रहा है, अर्थात आज का दिन बिना काम बरबाद तो नहीं गया। वह आदमी कभी दुःखी नहीं होता है।

२३—नीचे लिखे वेगों को रोकने की चेष्टा न करें।

१. अपान वायु।
२. पाखाने की हाजत।
३. पेशाब की हाजत।
४. प्यास।
५. भूख।
५. नींद।
७. खांसी।
८. दमा।
६. जम्हाई।
१०. आंसू।
११. उल्टी।
१२. मैथुनेच्छा।

इन बारह तरह के रोगों को रोकने से अनेक तरह के रोग पैदा होते हैं।

२४—नीचे लिखे वेगों को जहां तक बच सके रोकें।

१. लोभ।
२. ईर्ष्या।
३. द्वेष।
४. दूसरों की निन्दा।
५. मोह आदि विकार।

इन वेगों को रोकने वाला सदा सुखी रहता है।

२५—नीचे लिखी बुरी आदतों से बचें।

१—मुँह ढककर सोना मुँह से निकली हुई जहरीली हवा फिर सांस द्वारा शरीर में वापिस जाकर अनेक तरह के रोग पैदा कर देती है।

२—सिनेमा थियेटर आदि का अधिक देखना, इससे खून और आँखें खराब हो जाती है।

३— रात को कमरे के सब दरवाजे बन्द करके सोना, इससे खराब गैस शरीर में प्रविष्ट होकर तन्दुरुस्ती को बिगाड़ती है।

४—अनुपयुक्त स्थान पर थूकना या नाक साफ करना इस से रोग फैलते हैं।

५—बिना हाथ धोये खाना इससे रोग के कीटाणु पेट में चले जाते हैं।

६—मक्खियों या अन्य जीवों से छुआ भोज्य पदार्थ खाना इससे रोग के कीड़े पेट में चले जाते हैं।

७—किसी के साथ या किसी का झूठा भोजन खाना, इससे एक बीमारी दूसरे को पकड़ती है।

८—तिनका कलम और पेन्सिल आदि को दातों से चबाना इससे रोग के कीटाणु पेट में चले जाते हैं।

९—बिना अच्छी तरह चबाये जल्दी जल्दी भोजन करना इससे मन्दाग्नि की बीमारी हो जाती है।

१०—एक बार में बहुत पानी पीना या प्यास को बिल्कुल मारना। इससे अजीर्ण हो जाता है।

११—अधिक खाना इससे अजीर्ण और हैजा हो जाता है।

१२—मैले कपड़े पहनना, इससे खुजली हो जाती है।

१३—कूड़ा करकट जहाँ तहां डालना, इससे गन्दगी और रोग फैलते हैं।

१४—मैला कूड़ा करकट या बच्चों का पाखाना सड़क पर फेंकना इससे सड़क गन्दी हो जाती है और मुहल्ले में बीमारी फैलती है।

१५—दाँतों को साफ न करना, इससे दांतों का मैल पुट में जाकर मन्दाग्नि पैदा करता है।

१६—अधिक विषय भोग करना, इससे क्षय रोग हो जाता है।

१७—चिंता करना, इससे पागलपन हो जाता है।

१८—शौकिया चश्मा लगाना, इससे आंखें कमजोर हो जाती हैं।

१९—दुखी रहना, इससे बुद्धि और शक्ति नष्ट होती है।

२०—डरना, इससे दिल कमजोर हो जाता है।

२१—विदेशी वस्त्र पहनना। इससे देश की गरीबी बढ़ती है।

चरक के वचन

चरक के सूत्र स्थान में १५२ अनमोल वचन हैं जिनमें से कुछ वाक्य सर्वसाधारण के काम के होने के कारण, यहाँ पर नीचे दिए जाते हैं। इन वाक्यों पर गम्भीरता पूर्वक विचार कर इन्हें कार्यान्वित करने से आपको फायदे तो होंगे ही साथ ही यह भी पता लग जाएगा कि आजकल के वैज्ञानिक महापुरुष जिन विषयों को बहुत खर्च करके बड़े अभिमान के साथ संसार के सामने रखते हैं और उसका मूल्य भी चुका लेते हैं। उन्हीं विषयों को हमारे पूर्वजों ने संसार को उस समय विना मूल्य ही दिया था, जब संसार में लोग घोर अन्धकार में पड़े हुए थे। जब मनुष्य के पास कागज और कलम-दवात तक नहीं थे। आशा है पाठक निम्नलिखित वाक्यों का ध्यानपूर्वक मनन करेंगे।

१. अन्न—जीवन निर्वाह करने वाले पदार्थों में सर्वोत्तम।

२. जल - प्यास बुझाने वाले पदार्थों में सर्वश्रेष्ठ है।

३. मुर्गी का मांस (या अण्डे)—बलकारी पदार्थों में से सर्वश्रेष्ठ है।

४. कसरत—शरीर को मजबूत करने वाले उपायों में से सर्वोपरि है।

५. मैथुन—शरीर को दुर्बल करने वाले कामों में सबसे बड़ा है।

६. मांस खाने वाले जानवरों का मांस—संग्रहणी, राज्यक्षमा और बवासीर करने में सर्वोपरि है।

७. दूध और घी—बुढ़ापा नाश करने वाली चीजों में सर्वोत्तम है।

८. सत्तू और घी का सम-भाग में खाना—ताकत बढ़ाने और कब्जियत दूर करने वाले उपायों में सबसे अच्छा है।

९. शुद्ध हवा—बल और चैतन्यता उत्पन्न करने वाली वस्तुओं में सर्वोत्तम है।

१०. जल—स्तम्भनीय द्रव्यों में सर्वोत्तम है। जैसे—गिरते हुए खून पर जल की पट्टी बाँधने से खून बन्द हो जाता है।

११. बुझाया हुआ या औटाया हुआ जल—सर्वोत्तम जल है।

१२. ज्यादा भोजन करना—आम पैदा करने वाली चीजों में सबसे बढ़कर है।

१३. जितना हजम हो उतना ही खाना—हाजमा बढ़ाने वाले उपायों में से सर्वोत्तम है।

१४. अभ्यासानुरूप कार्य (जैसी आदत हो वैसा काम, चाहे वह किसी तरह का भी हो) करना—सबसे अच्छा है (लेकिन यह नियम बुरे कामों या आदतों के लिए भी नहीं है)।

१५. समय का भोजन—आरोग्य को बढ़ाने वाला है।

१६. मलमूत्र आदि वेगों का रोकना—व्याधि उत्पन्न करने वाली चीजों में सर्वोपरि है।

१७. एक समय का भोजन—अच्छी तरह भोजन हजम करने के उपायों में सर्वश्रेष्ठ है।

१८. शराब पीना—चित्त को खुश करने वाले पदार्थों में से सर्वश्रेष्ठ। (महर्षि चरक का यह वचन पढ़कर पाठकों में से कोई महाशय शराब पीना न शुरू कर दें।)

१९. मद्यविकार (बेतरीके शराब पीना)—धृति, स्मृति और बुद्धि का नाश करने में सबसे बढ़कर है।

२०. भारी पदार्थ (घी, मलाई, मांस आदि) कठिनता से हजम करने वाले पदार्थों में सर्वोपरि हैं।

२१. स्त्री सम्भोग—राजयक्षमा पैदा करने वाले कारणों में सबसे बड़ा है।

२२. शुक्रवेग को रोकना—नपुंसकता पैदा करने वाले कारणों में सर्वोपरि है।

२३. अन्न—अन्न में अरुचि करने वाले पदार्थों में सर्वोपरि है।

२४. उपवास—आयु कम करने वालों में सबसे बड़ा कारण है।

२५. भूख मारी जाने पर खाना—शरीर को दुर्बल करने वाले कारणों में से सर्वोपरि है।

२६. अजीर्ण में खाना—संग्रहणो पैदा करने वाले कारणों में से सर्वोपरि है।

२७. कुसमय का भोजन—अग्नि मन्द कर देने वाले कारणों में सर्वोपरि है।

२८. दूध, मच्छी आदि विरुद्ध पदार्थों का एकसाथ खाना—कोढ़ आदि बुरे रोगों को पैदा करने वालों में सबसे बड़ा कारण है।

२९. शान्ति—हितकारी पदार्थों में सर्वश्रेष्ठ है।

३०. शक्ति से ज्यादा परिश्रम करना—सब प्रकार कुपथ्यों में सर्वोपरि है।

३१. आहार विहार का मिथ्या योग—व्याधिकारक कारणों में सर्वोपरि है।

३२. रजस्वला स्त्री सम्भोग—पतित करने वाले कारणों में सबसे सर्वोपरि हैं।

३३. ब्रह्मचर्य —आयु बढ़ाने वाले कारणों में सर्वोपरि है।

३४. संकल्प सिद्ध होना—पुष्टिकारक कारणों में सर्वोपरि है।

३५. मन को सुस्त रखना—शरीर को दुर्बल करने वाले कारणों में से सर्वोपरि हैं।

३६. बल से ज्यादा काम करना—प्राणनाशक कारणों में सर्वोपरि है।

३७. दुःखी रहना—रोग बढ़ाने वाले कारणों में से सर्वोपरि है।

३८. खुश होना—प्रीति उत्पन्न करने वाली वस्तुओं में सर्वश्रेष्ठ है।

३९. स्नान—श्रम दूर करने वाली चीजों में प्रधान है।

४०. सन्तोष रखना पुष्टि करने के कारणों में सबसे बढ़कर है।

४१. अधिक निद्रा—तन्द्रा पैदा करने वाले कारणों में सर्वोपरि है।

४२. पुष्ट होना—निद्रा पैदा करने वाले कारणों में सर्वोपरि है।

४३. सब रसों का सेवन करना (यानी किसी चीज से परहेज न करना)—बल पैदा करने वाले कारणों में सर्वश्रेष्ठ है।

४४. एक ही रस खाना—दुर्बल करने वाले कारणों में सर्वोपरि है।

४५. हिमालय—औषधि भूमियों में श्रेष्ठ है।

४६. मध्य भूमि (मारवाड़)—आरोग्य-प्रदेश में सबसे बढ़कर है।

४७. आनुपदेश (आसाम)—आरोग्य नाशक प्रान्तों में सबसे बढ़कर है।

४८. नास्तिकता—परहेज करने वाली चीजों में सबसे बढ़कर है अर्थात् जब चीजों से अधिक रस (नास्तिकता) से परहेज करना चाहिए।

४९. लोभ—दुःख देने वाले कारणों में सर्वोपरि है।

५०. मन की अस्थिरता—डरपोक मन के लक्षण में सर्वोपरि है।

५१. वैद्य की आज्ञा मानना—रोगों के गुणों में सर्वोपरि है।

५२. विना विचारे बोलना—अहित करने वालों में सबसे बढ़कर है।

५३. सद्वचन—करने योग्य कार्यों में सर्वोपरि है।

५४. दूध—जीवन देने वाले पदार्थों में सर्वोपरि है।

५५. मांस—ताकत लाने वाली चीजों में सर्वोपरि है।

(मांसाहारियों के लिए। शाकाहारियों के लिए नहीं।)

❀

दूसरा अध्याय

प्रमेह

प्रसिद्ध नाम—धातु गिरना।

वैद्यक नाम—प्रमेह।

यूनानी नाम—जिरियानुलमनी।

डाक्टरी नाम—स्परमेटोरिया।

इस रोग में पेशाव या पाखाने के साथ वीर्य निकलता है। शुरू-२ में तो वीर्य तभी निकलता है जब रोगी मल मूत्र त्याग करने के लिए जोर लगाता है। धीरे २ पेशाव करने से पहले या बाद में भी वीर्य निकलने लगता है। पहले तो पेशाब के साथ वीर्य का निकलना महसूस नहीं होता है लेकिन जब रोग बहुत बढ़ जाता है तो वीर्य इतना अधिक पतला हो जाता है कि पेशाब के साथ उसके निकलने का पता भी नहीं चलता। पौष्टिक भोजन करने पर भी रोगी दिन प्रतिदिन कमजोर होता चला जाता है। लेकिन उसे अपनी कमजोरी का कारण समझ में नहीं आता। वह यह सोचता है कि पेशाब के साथ वीर्य का आना बन्द हो गया है, परन्तु उस बेचारे को क्या पता कि उस का वीर्य पानी के समान पतला हो कर शरीर से निकला जा

रहा है और यही उसकी कमजोरी का कारण है। धीरे-२ रोगी अपने यौवन को खो बैठता है। उत्तेजना के समय लेसदार श्राव वहुत अधिक मात्रा में निकलने लगता है और इन्द्री शीघ्र ढीली पड़ जाती है। ऐसे पुरुष से स्त्री मन ही मन घृणा करने लग जाती है लेकिन लोक लाज के भय से अपने मुँह से कुछ नहीं कहती इस रोग में रोगी संभोग में स्त्री को पूर्ण रूपेण सन्तुष्ट नहीं कर पाता और न ही उसकी अपनी सन्तुष्टि होती है लेकिन सम्भोग का शौक उसे अवश्य रहता है।

कारण

मेहनत करने से, हस्तमैथुन, अप्राकृतिक मैथुन, अधिक स्त्री प्रसंग या इच्छा होने पर भी स्त्री प्रसंग न होने से, दिन रात खूब सोने से, मादक वस्तुओं के सेवन से, ज्यादा मिर्च खट्टा प्रयोग करने से, सड़ा भोजन करने से यह रोग हो जाता है।

यह रोग जब शुरू होने लगता है तब कंठ जीभ और तालू में भारीपन हाथों की हथेलियों का जलना, मुँह का स्वाद मीठा मीठा मालूम होना, प्यास अधिक लगना, बाल आपस में चिपकना तथा समूचे शरीर में चिकनाहट आ जाना आदि लक्षण आरम्भ हो जाते हैं।

हर ढंग के प्रमेह को आप निम्न कारणों से जान सकते हैं।

लक्षण

पेशाबके पहले या पीछे लेसदारपदार्थ का गिरना, पेशाब में चींटियों का लगना, पेशाबका गाढ़ी लार जैसा होना, रुक-रुककर पेशाब उतरना। पेशाब का रेत के साथ गिरना, खून के रंग का

पीलापन या नीलापन लिए हुए पेशाब का होना। यह सब तरह के प्रमेह के लक्षण हैं।

प्रमेह पर सरल योग, देहाती टोटके, पैसे पैसे के नुस्खे तथा शास्त्रीय औषधियां।

हरड़बहेड़ा, आँवला, दारू हल्दी, नागर मोथा, देवदारू, गुच इनका काढ़ा बनाकर ठन्डा होने पर शहद डालकर पीने से प्रमेह शाँत हो जाता है।

शतावरी का रस एक दो तोला एक आध पाव गाय के दूध के साथ पियें।

बड़ी इलायची का चूर्ण ६ मांशा शहद के साथ चाटें।

ढाक का फूल एक तोला पानी में पीसकर मिश्री डाल कर पीने से प्रमेह अवश्य दूर हो जाता है।

हमेशा महुआ वृक्ष की छाल को, चार दाना काली मिर्च के के साथ पानी में पीस छान कर चाटने से प्रमेह जाता रहता है।

शतावर सगजरहित दोनों सम भाग लेकर खूब महीन पीस कर बराबर की देसी खाँड मिलाकर एक तोला प्रतिदिन दूध के साथ खायें।

यदि कब्ज हो तो रात को सोते समय हरड़ का मुरब्बा खायें।

बबूल की छाल, फली, कौंपल और गोंद चारों चीजें छाया में सुखाकर सम भाग लें कूट छान कर सम भाग पीस कर खांड मिला कर चूर्ण बनायें प्रातः काल एक तोला यह चूर्ण दूध के साथ खायें।

समुद्रसोख, तालमखाना, रीहां के बीज प्रत्येक को दो तोला

लेकर कूट कर छानकर सफेद चीनी समभाग सम्मिलित करके चूर्ण प्रस्तुत करें और सात माशा के लगभग प्रतिदिन प्रात:काल दूध के साथ सेवन करें।

बबूल की कच्ची फली जिसमें कि अभी बीज न पड़े हों और छोटी दोनों समभाग लेकर छाया में सुखाये और देसी खाँड सममात्रा में मिलाकर चूर्ण बनायें। एक तोला यह चूर्ण नित्य प्रति ताजा गौ दुग्ध के साथ सेवन करे।

वटवृक्ष का फल छाया में शुष्क करके कूट छानकर देसी खांड समभाग मिलाकर चूर्ण बनाये और एक तोला यह चूर्ण गौ दुग्ध ताजे के साथ सेवन करे।

वटवक्ष के दूध की कुछ बूँदें बताशे में डालकर खाये और ऊपर से ताजा गौ दुग्ध पिये। प्रमेह के लिए अक्सीर है।

लकड़ी का गोंद ढाक का गोंद दो दो तोला इमली के बीजों की गिरी तीन तोला तीनों को कूट छानकर चूर्ण बनाये। पाँच माशा यह चूर्ण गाय के दूध से सेवन करे।

रीहां के बीज १ माशा गौ दुग्ध पाव भर में मिला कर खीर करें छिलका अलग करके गुठलियां फेंक देवें और बारीक चूर्ण प्रस्तुत कर लेवें एक तोला यह दो तोला पिसी हुई मिश्री मिला कर खाये ऊपर से पाव भर ठण्डा जल पी लें। एक महीने तक इस्तेमाल करें स्वप्न दोष का नामोनिशाँ तक मिट जायेगा परीक्षित है।

प्रमेह नाशक चूर्ण

वटवृक्ष की कोंपल, गूलर की छाल दोनों समान भाग लेकर छाया में सुखाकर, कूट छान कर, सममात्रा में चीनी मिला

कर चूर्ण बनायें। प्रतिदिन बारह ग्राम की मात्रा में गौ दुग्ध के साथ सेवन करें।

२. वीर्य को गाढ़ा करता है—

सालिब मिश्री, मूसली श्वेत, साँठी चावल, सिंघाड़ा शुष्क प्रत्येक २० ग्राम, बंग भस्म १० ग्राम, मिश्री सब औषधियों के बराबर सबको पीसकर बंग भस्म सहित भलीभाँति मिलायें।

मात्रा—१० ग्राम प्रातःकाल १० ग्राम सायंकाल गाय के दूध के साथ लें। उस दूध में बड़ की कोंपलें डाल कर व पका कर छान लिया करें। ईश्वर चाहे तो इससे असीम लाभ होगा और २१ मात्रा से पूरा २ लाभ हो जाएगा।

३. शतावरी का रस एक दो तोला तक आध पाव गाय के दूध के साथ सेवन करें।

४. बड़ी इलायची का चूर्ण छः ग्राम शहद के साथ चाटें।

५. ढाक के फूल १२ ग्राम, पानी में पीसकर मिश्री डालकर पीने से प्रमेह अवश्य दूर होता है।

६. महुआ वृक्ष की छाल को चार दाने काली मिर्च के साथ पानी में पीस छानकर चाटने से प्रमेह जाता रहता है।

७. शतावर संगजराहित दोनों सम भाग लेकर खूब महीन पीसकर बराबर की देसी खाँड मिलाकर १२ ग्राम प्रतिदिन दूध के साथ खायें।

८. कीकर की छाल, फली, कोंपल और गोंद चारों चीजें छाया में सुखा कर सम भाग लें और कूट,छान कर समभाग लें समभाग पिसी खाँड मिलाकर चूर्ण बनायें। प्रातःकाल यह चूर्ण १२ ग्राम की मात्रा धारोष्ण दूध के साथ पीने से प्रमेह को आराम हो जाता है

९. चार ग्राम हल्दी के चूर्ण में शहद मिलाकर चाटने से असाध्य प्रमेह भी नष्ट हो जाता है। इसको "विद्यावागीश" रस कहते हैं।

१०. आमलों के ४८ ग्राम स्वरस में छः ग्राम शहद और एक ग्राम हल्दी मिलाकर दोनों समय पिलाने से समस्त प्रमेह नष्ट हो जाते हैं। पित्तज प्रमेह का नाश होने में तो संदेह ही नहीं।

११. छोटी दूधी को छाया में सुखाकर उसमें बराबर की चीनी या मिश्री मिलाकर १२ ग्राम भर खाकर ऊपर से ढाई सौ ग्राम गाय का दूध पी लीजिए। इस तरह लगातार करने से प्रमेह अवश्य नष्ट हो जाता है।

१२. दारुहल्दी त्रिफला और चीते की जड़ की छाल इन चारों को मिलाकर दो या तीन तोला लेकर काढा बनाकर, निरन्तर कुछ दिन पीने से प्रमेह निश्चय ही नष्ट हो जाता है।

१३. शीशम के पत्ते २४ ग्राम और काली मिर्च दो ग्राम इन दोनों को ढाई सौ ग्राम जल में पीस छानकर पीने से प्रमेह, सोजाक और शरीर की गरमी शान्त हो जाती है। खटाई व मिठाई से बचना चाहिए।

१४. चिरमटी के पत्तों का १२ या १४ ग्राम रस गाय के ढाई सौ ग्राम दूध के साथ पीने से प्रमेह अवश्य नष्ट हो जाता है।

नोट—सफेद चिरमटी के रस में मिश्री और सफेद जीरा मिलाकर पीने से मूत्रकृच्छ रोग को आराम हो जाता है। चिरमिटी की जड़ दूध में पकाकर चीनी मिलाकर खाने से धातु का गिरना बन्द हो जाता है और वीर्य बढ़ता है।

१५. रेवन्द चीनी ६६ ग्राम, मिश्री ६६ ग्राम और सूखे सिंघाड़े ६६ ग्राम लेकर कूट पीस कर छान लें। इसमें से नौ ग्राम चूर्ण निराहार मुँह भोजन से पहले २५० ग्राम दूध के साथ खाने से बहुत पुराना प्रमेह भी अवश्य दूर हो जाता है।

१६. नीम की पकी और कच्ची निबौलियां लाकर, छाया में सुखाकर पीस कूटकर चूर्ण बना लें इसमें से एक तोला चूर्ण, चावल के धोवन के साथ खाने से प्रमेह नष्ट हो जाता है।

१७. बबूल की नरम-नरम कोपलें १२ ग्राम लाकर सिल पर पीस लें और बराबर की पिसी मिश्री मिलादें। इस को चार ग्राम की मात्रा में खा कर पानी पीने से २१ दिन में और कभी-कभी जल्दी ही प्रमेह नष्ट हो जाता है। अनुभूत है। यह दवा अपना अपना चमत्कार शीघ्र दिखाती हैं इससे स्वप्नदोष और धातु का गिरना प्रभृति सभी रोग नष्ट हो जाते हैं।

१८. बबूल की पत्तियाँ जिन में बीज न आये हों, लाकर छाया में सुखा लें। और कूट पीसकर मिश्री मिलाकर खायें। प्रमेह अवश्य भाग जायेगा। फली और पत्ती समान भाव दिखाती हैं। बबूल के फूल भी प्रमेह को नष्ट करते हैं।

नोट—फलियों का चूर्ण छः ग्राम लेना चाहिए। अगर इस नुस्खे पर पाव भर गाय का दूध पिया जाये तो और भी अच्छा है। बराबर की मिश्री पीसकर चूर्ण में मिला ली जाए तो उत्तम हो।

१९. पलाश या ढाक के १२ ग्राम फलों में ६ ग्राम मिश्री

मिलाकर २१ या ३१ दिन खाने से और ऊपर से शीतल जल पीने से प्रमेह नष्ट हो जाता है।

सफेद सेमल के कन्द के बारीक बारीक टुकड़े करके सुखा लें और बाद में कूट पीसकर चूर्ण बना लें। रोज सवेरे ही इस में से छः ग्राम चूर्ण और १२ ग्राम घी६ ग्राम मिश्री और ३ रत्ती जायफल के चूर्ण में मिलाकर खाने से प्रमेह नष्ट हो जाता है और वलवीर्य बढ़ता है। परीक्षित है।

नोट—अगर सेमल का कन्द न मिले तो सेमल की छाल का चूर्ण ही सेवन करना चाहिए।

२१. केले के पेड़ के भीतरी भाग को छाया में सुखाकर कूट कर चूर्ण बना लें। इसमें से ६ ग्राम या १२ ग्राम चूर्ण मिश्री मिलाकर खाने से और ऊपर से जल पीने से प्रमेह को आराम हो जाता है।

२२. खैर वृक्ष के ४८ ग्राम भर अंकुर और १२ ग्राम सफेद जीरा गाय के दूध में पीस छान कर और मिश्री मिलाकर सवेरे शाम पीने से प्रमेह नष्ट हो जाता है तथा मूत्रकृच्छ भी जाता रहता है।

२३. १२५ ग्राम साफ गेहूं रात को पानी में भिगो देने से और सवेरे सिल पर पीस कर मिश्री मिला कपड़े में छानकर पीने से प्रमेह में आश्चर्य जनक चमत्कार दिखाई देता है। कम से कम सात दिन तक प्रयोग करके देखियेगा। परीक्षित है।

२४. सत्यानाशी के पत्तों के २४ ग्राम रस में २४ ग्राम घी मिलाकर केवल पांच दिन तक दिन में एक बार सेवन करने से प्रमेह में अवश्य आराम हो जाता है।

२५. पाँच तोला बिनौला एक पाव जल में भिगो दीजिए सवेरे ही इसको मलकर पानी को छान लीजिए। बिनौलों को फेंक दीजिए और छने हुए पानी को कढाही में चढ़ाकर उसमें तीन तोला मिश्री डालकर मन्दो आग पर पकाईये। जब शहद जैसी चासनी हो जाये उतार लीजिए और शीतल करके चाट जाईये। इस नुस्खा के केवल २१ दिन के प्रयोग से प्रमेह को आराम हो जाएगा। खासकर वह प्रमेह जिस में कि शहद या तेल सा पेशाब होता है जिस पर चींटियां और मक्खियाँ लगती हैं तथा जिसमें रोगी को प्यास अत्यधिक महसूस होती है और पेशाव बहुत आता है इस उपाय से अवश्य ही आराम हो जाता है।

२६. सेमल की तीन ग्राम सूखी मूसली को कूट पीस कर और उसमें बराबर की मिश्री मिलाकर खाने और ऊपर से गाय का धारोष्ण दूध पीने से प्रमेह नष्ट हो कर बल वीर्य की वृद्धि होती है परीक्षित है।

२७. चार ग्राम हल्दी के चूर्ण में शहद मिलाकर चाटने से असाध्य प्रमेह भी नष्ट हो जाता है।

२८. मुलैठी तीस ग्राम गुलनवार ३६ ग्राम-काहूके बीज ३६ ग्राम, और सम्हालू के बीज ६० ग्राम लेकर कूट पीस और छान लीजिए इसमें से ६ ग्राम चूर्ण सवेरे कोरे कलेजे भोजन से पहले फाँककर ऊपर से ताजा पानी पीने से सब तरह के प्रमेह अथवा धातु रोग निश्चय ही नष्ट हो जाते हैं। इस औषधि को कम से कम दो सप्ताह तक निरन्तर प्रयोग करना आवश्यक है।

२९. खैर, खाँड, देवदार हल्दी और नागर मोथा इनको

बराबर बराबर लाकर चूर्ण बना लीजिए। १२ ग्राम अथवा ६ ग्राम रोज सेवन करने से प्रमेह नष्ट हो जाता है।

३०. लोंग, चित्रक, सफेद चन्दन, नागर मोथा, खस, छोटी इलायची काली अगर, बंसलोचन, असगन्ध गोखरू, जायफल, गिलोय, निशोथ, तगर, नागकेशर, और कमलगट्टे की गिरी हरी पत्ती निकालकर, इन सबको बराबर बराबर लेकर पीस छान लीजिए और सारे चूर्ण में बराबर की मिश्री मिला दीजिए इसकी मात्रा ६ ग्राम है। सवेरे ही एक मात्रा खाकर ऊपर से जल पीने से प्रमेह नष्ट हो जाता है।

३१. शतायर को कूट पीस तथा छान कर शतावर के रस में २१ भावना दीजिए और फिर सुखा लीजिए सूखने पर बराबर मिश्री मिलाकर रख दीजिए। इसकी खुराक ४ से ६ ग्राम तक है। सवेरे शाम एक-एक मात्रा खाकर, ऊपर से गरम दूध पीने स पेशाब के रोग, धातु रोग, प्रमेह, ववासीर, दस्त की कब्जीयत प्रभृति रोग निश्चय शान्त हो जाते हैं।

३२. केवड़े की जड़ को पानी में उबाल कर दो तोला रस निकाल लीजिए। पीछे उसमें दो तोला खांड मिला कर सेवन कीजिए। इस नुस्खा से प्रमेह नष्ट हो जाता है।

३३. कांडोल की छाल में पानी डाल कर पीस लीजिए और रस निकाल लीजिए। इसके १२ या २४ ग्राम रस में मिश्री मिलाकर पीजिए, इससे प्रमेह अवश्य ही नष्ट हो जाता है।

३४. कबाबचीनी का चूर्ण, खांड मिलाकर या पिसी हुई मिश्री मिलाकर ६-६ ग्राम की मात्रा से दिन में ४-६ बार फांककर ऊपर से पानी पीने से प्रमेह नष्ट हो जाता है।

३५. बड़ी इन्द्रायण की जड़, त्रिफला और हल्दी इनको बराबर-बराबर आठ आठ ग्राम लेकर, काढ़ा बनाकर, और शहद मिलाकर पीने से प्रमेह नष्ट हो जाता है।

३६. घृतकुमारी का गूदा ५०० ग्राम निकाल लीजिए और उसे हाथों से खूब मलिये। फिर कलईदार कढ़ाई में गाय का आधा किलो घी डालकर गरम कीजिए घी कलमलाते ही उसमें घृतकुमारी का गूदा डाल दीजिए और २०-२५ मिनट तक मन्दी आग पर पकाइये। इसके बाद उसी कढ़ाही में गेहूं का मेदा २५० ग्राम और चीनी आधा किलो भी डाल दीजिए और पकाइये। जब बनाने लायक हो जाए, उतार कर तीस-तीस ग्राम के लड्डू बना लीजिए। सवेरे ही भोजन से पहले अपने बलाबल अनुसार एक या दो लड्डू खाकर ऊपर से गाय का दूध पीजियें। यह नुस्खा परीक्षित है। इसके १५ दिन सेवन करने से प्रमेह-रोग निश्चय ही नष्ट हो जाता है और अगर यह नुस्खा ४० दिन सेवन किया जाए तो फिर तो कहना ही क्या है। इस नुस्खा के सेवन से महादुर्बल भी बलवान और मोटा ताजा हो जाता है, क्योंकि इसके सेवन करने से मांस और वीर्य खूब जल्दी बढ़ते हैं। भूख भी खूब लगती है।

नोट :—यदि घृतकुमारी के रस में पानी न मिलाया जाए, तो और भी सुभीता हो। इस अर्क की मात्रा १२ से २४ ग्राम तक है। इस अर्क में दूध या मिश्री या शहद मिलाकर पीने से भी प्रमेह में वड़ा उपकार होता है। मैं इस अद्वितीय योग की कई बार परीक्षा कर चुका हूं। इसके सेवन से भूख भी बेतहाशा बढ़ जाती है।

३७. गिलोय, आमले और गोखरू इन तीनों को, एक सौ

पच्चीस ग्राम (हरेक को एक सौ पच्चीस ग्राम) लेकर कूट-पीस और छानकर महीन चूर्ण वना लीजिए। छः ग्राम यह चूर्ण सवेरे ही छः ग्राम घी और छः ग्राम शहद में मिलाकर कुछ दिन तक खाने से प्रमेह नष्ट होकर वेइन्तहा बल वीर्य बढ़ता है। परीक्षित है ।

३८. मुलेठी, गिलोय, आमले, हरड़, बहेड़ा, सफेद मूसली, विदारकन्द, नाग केशर और शतावर इन औषधियों को चौबीस-चौबीस ग्राम लाकर कूट पीस छानकर रख लीजिए। इसमें से ६ ग्राम चूर्ण, ६ ग्राम घी और ३ ग्राम शहद के साथ चाटने से एक मास में प्रमेह और वात रोग नष्ट हो जाते हैं।

३९. कौंच के बीज, वरियारे की जड़, शतावर, गोखरू, ककड़ी की जड़ और तालमखाना। इन छहों को साठ-साठ ग्राम लाकर कूट पीसकर छान लीजिए। इसमें से ६-६ ग्राम चूर्ण सवेरे गाय के ढाई सौ ग्राम दूध और मिश्री के साथ खाने से प्रमेह अवश्यमेव नष्ट हो जाता है।

४०. खसखस के बीज, गोखरू, दालचीनी, भुना हुआ धनिया, भुने हुए चने और सालम मिश्री। इन सबको चौबीस-चौबीस ग्राम लेकर कूट-पीस और छान लीजिए। फिर सारे चूर्ण में चूर्ण के बराबर वजन में मिश्री पीस कर मिला दीजिए। इस दवा की मात्रा ६ से ९ ग्राम तक है। एक मात्रा सवेरे ही खाकर ऊपर से गाय का दूध पीने से समस्त धातु रोग नष्ट हो जाते हैं। परीक्षित है।

४१. शंखाहूली, छोटी इलायची के दाने, शुद्ध शिलाजीत ६०-६० ग्राम। तबाखीर, मिश्री १२५-१२५ ग्राम। इन सब औषधियों को कूट-पीस कर छान लीजिए। इस चूर्ण की मात्रा

६ ग्राम से लेकर ९ ग्राम तक है। इसे फाँक कर ऊपर से गाय का कच्चा—धारोष्ण दूध अथवा बासी जल पीने से प्रमेह नष्ट हो जाता है।

४२. काली मिर्च, लोंग, चिरौंजी, छुहारे, बादाम, सफेद चन्दन, छोटी इलायची, तज, तेजपात, पीपर, सफेद जीरा, स्याह जीरा, धनिया, सोंठ, पीपर मूल, नागर मोथा, कोंच के बीजों की गिरी, शतावर, स्याह मूसली, सफेद मूसली, तवाखीर, और कमलगटटे की गिरी (हरी पत्ती निकाल कर), इन सबको चौवीस-चौवीस ग्राम लेकर कूट-पीस कर छान लीजिए। इसके बाद इस चूर्ण में एक किलो पिसी मिश्री मिलाकर रख लीजिए। इस चूर्ण को मात्रा ९ ग्राम से लेकर १२ ग्राम तक है। सवेरे एक मात्रा खाकर ऊपर से गाय का धारोष्ण दूध पीने से प्रमेह का जिद्दी रोग नष्ट होकर बल-वीर्य बढ़ता है।

(४३)

बबूल की मसीहाई प्रमेह के लिए सैकड़ों वैद्यों और हकीमों द्वारा परीक्षित और प्रमाणित योग

द्रव्य तथा निर्माण विधि—

बबूल की बिना बीजों की (छाया में सुखाई) फली	१२ ग्राम
तालमखाना	६ "
बीज बन्द	३ "
मिश्री पिसी हुई	४२ "

इन सब औषधियों को कूट-पीस छानकर चूर्ण बना लीजिए। इसमें से ६ ग्राम चूर्ण सवेरे ही फाँक कर, ऊपर गाय का दूध ढाई सौ ग्राम पीने से प्रमेह नष्ट हो जाता है और धातु गिरना बन्द हो जाता है।

(४४)

अनेक बार का परीक्षित योग

अक्सीर-ए-जिरयान

द्रव्य तथा निर्माण विधि—

सोंठ, काली मिर्चें, पीपर, हरड़, बहेड़ा, आमला, नागरमोथा और शोधी हुई गूगल। इन सबको कूट-पीस कर खरल में डालिये और उसमें शहद और गोखरू का काढ़ा डाल-डाल कर खूब घोटिए। जब मसाला गोली बनाने के योग्य हो जाए, गोलियाँ बना लीजिए इनगोलियों को सवेरे-शाम खाने से प्रमेह, मूत्रकृच्छ, मूत्राघात, पथरी और प्रदर रोग नष्ट हो जाते हैं। विश्वास कीजिए यह एक बहुत बढ़िया योग है।

(४५)

सफूफ—ए—जरियान

(निर्धनों के लिए उत्तम तथा सुगम औषधि)

द्रव्य और निर्माण विधि—

सालम मिश्री, शीतल चीनी, दालचीनी, रूमीमस्तगी, मोठ, सोरंजन और बोजीदान। यह सब ६-६ ग्राम और मिश्री बारह ग्राम लेकर, सबको कूट-पीस कर चूर्ण बना लीजिये। इसकी मात्रा ३ से ९ ग्राम तक है। अनुपान बकरी का दूध है। इसके २१ दिन तक खाने से प्रमेह आदि धातु-रोग नष्ट होकर खून

और वीर्य बढ़ते हैं और रुकावट होती है। बहु परीक्षित यानी बहुत बार की आजमूदा दवा है। इसको सेवन करते समय तेल, लाल मिर्च, गुड़, खटाई और दही से परहेज रखना अत्यावश्यक है।

(४६)

तोहफा—ए—जवानी

तिब्बे यूनानी का प्रमेह रोग के लिए एक अत्योत्तम योग।

द्रव्य तथा निर्माण विधि

हरड़ का छिलका, बेहड़े का बकला, गुठली निकाले आंमले हल्दी, बबूल के फूल और छोटी दूधी इन छःहों औषधियों को समवजन लेकर कूट पीसकर छान लीजिए। जितना चूर्ण तैयार हो उसके बराबर मिश्री मिला दीजिए। इसकी मात्रा ६ माशा से १ तोला तक की है।

अनुपान

गाय का ढाई सौ ग्राम दूध। इस दवा के प्रयोग से दस्त साफ होता है भूख बढ़ती है और प्रमेह रोग नष्ट होता है।

(४७)

तिब्बें यूनानी की एक और अनुपम देन
प्रमेह के लिए प्रथम श्रेणी की दवा

द्रव्य और निर्माण विधि—

सिरस के बीज, ढाक के बीज और मिश्री इन तीनों औष-

धियों को बराबर-बराबर लेकर कूट पीस और छान लीजिए।

मात्रा—६ ग्राम से १२ ग्राम तक।

अनुपान—गाय का दूध।

इसके रोज खाने से प्रमेह नष्ट होकर धातु गाढ़ी होती है। यह बड़ी ही अच्छी गरीबी दवा है।

(४८)

प्रमेह के लिए एक जादुई औषधि

वह अनुपम योग जिसके अक्सीर-ए-आजम होने में जरा भी शक नहीं।

द्रव्य तथा निर्माण विधि—

छोटी इलायची, और मुई आमला इनको बराबर बराबर लेकर छान लीजिए। एक से चार ग्राम तक इस चूर्ण में अभ्रक-भस्म एक या दो रत्ती मिलाकर खाने से और ऊपर से गाय का दूध पीने से मूत्रकृच्छ और प्रमेह निश्चय ही नष्ट हो जाते हैं। परीक्षित है।

मुई आमले को मुई आंवरा या भूम्यामल भी कहते हैं दवा निर्माण करने के लिए इसका फल ही प्रयोग किया जाता है।

४९. हल्दी, खैर, शहद और सीसे की भस्म इन चारों को उचित मात्रा और अनुमान से सेवन करने से निश्चय ही प्रमेह चला जाता है। परीक्षित है।

हल्दी दो ग्राम, खैर दो ग्राम, सीसे की भस्म एक या दो रत्ती इनको एक तोला शहद में मिलाकर चाटने से प्रमेह

नष्ट हो जाता है। ऊपर से धारोष्ण दूध ढाई सौ ग्राम पीना चाहिए।

५०. अभ्रक भस्म एक से चार रत्ती तक, त्रिफला ३ ग्राम से १२ ग्राम तक, हल्दी २ से ४ ग्राम तक और शहद १२ ग्राम तक इन औषधियों को शहद में मिलाकर चाटने से प्रमेह नष्ट हो जाता है। रोगी को भली भाँति देखकर उसके रोग के अनुसार औषधि की मात्रा तजबीज करनी चाहिए।

५१. अभ्रक भस्म एक से चार रत्ती तक, एक ग्राम पीपल और ६ ग्राम शहद में मिलाकर चाटने से और ऊपर से दूध पीने से प्रमेह, श्वास, विष रोग, कोढ़, वायु पित्तकफ, कफक्षय क्षतक्षय, संग्रहणी, पीलिया भ्रम यह सब नष्ट होते हैं। परीक्षित है।

(५२)

प्रमेह नाशक अकसीरी योग

सत्त लोहबान १५ ग्राम, कबाब चीनी ७ ग्राम, कलमी शोरा ७ ग्राम, बीज बन्द ७ ग्राम, दाना हील खुर्द (छोटी इलायची का दाना) ७ ग्राम, आंवला खुश्क ७ ग्राम, मुलेठी ७ ग्राम, सत्त पीरोजा ७ ग्राम, बुरादा सन्दल सफेद ७ ग्राम, दाना हील कला (बड़ी इलायची का दाना) ७ ग्राम, जीरा सफेद ७ ग्राम, मूसली सफेद ७ ग्राम, गुले पिस्ता ७ ग्राम, तबासीर (बंसलोचन) ७ ग्राम, गुल टेसू ७ ग्राम, ईसबगोल की भूसी ७ ग्राम, फिटकरी बिरियां ७ ग्राम यानि चूनी फिटकरी, गुलधावा ७ ग्राम, रेवन्द चीनी ७ ग्राम रुब्बेसूस ७ ग्राम, हब्बे काकनज ७ ग्राम, समुन्दर सोख ७ ग्राम, गुलनार ७ ग्राम, ताल मखाना ७ ग्राम, मग्ज बादाम १० ग्राम, गेरु ७ ग्राम, सतावर ७ ग्राम,

खून खराबा ७ ग्राम, गिले अरमनी ७ ग्राम, तुख्म सुरावली ७ ग्राम।

इन सब सामानों को कूटकर महीन चलनी से या कपड़े से छान कर रख लेवें और फिर ५०० ग्राम चीनी को आधा किलो पानी में डाल कर शीरा बनने को रख देवें।

जब शीरा तैयार हो जावे तो उसी में कुटी छनी दवा डाल कर चला देवें और फिर उतार देवें। इसके बाद उसी में २०० ग्राम शहद डालकर रख देवें और ठन्डा हो जाने पर चीनी, अल्मोनियम या शीशे के बर्तन में रख देवें और काम में लाइये याने सेवन कीजिए।

मात्रा—२ ग्राम से पांच ग्राम तक पानी के साथ इसे चाहें तो दोनों वक्त भी खा सकते हैं।

५३. बायबिड़ंग, सौंठ, गाल मिरच पीपर इनको बराबर-बराबर लेकर पीस छान लीजिए। इनमें से बलाबल अनुसार ३ ग्राम से लेकर ६ ग्राम तक चूर्ण लेकर उसमें एक या दो रत्ती अभ्रक भस्म मिलाकर उसमें अन्दाज से शहद मिला लीजिए और चाटजाइये। इस नुस्खे से क्षय, पाण्डु रोग, ग्रहणी, शूल, आम कोढ़, श्वास प्रमेह, अरुचि खांसी, मन्दाग्नि और समस्त उदर रोग पेट के रोग नष्ट होकर भूख बढ़ती है।

५४. दो रत्ती वंगभस्म और चार रत्ती इलायची का चूर्ण इन दोनों को १२ ग्राम शहद में मिलाकर चाटने से और ऊपर से हल्दी का चूर्ण मिलाकर चाटने से और ऊपर से हल्दी का चूर्ण मिलाकर आमलों का काढ़ा पी जाना चाहिए इससे प्रमेह भी नष्ट हो जाता है।

ध्यान रहे कि पहले बंगभस्म और इलायची का चूर्ण शहद

में मिलाकर चाट जाना चाहिए यदि रोगी बलवान हो तो ४८ अथवा ६० ग्राम आमलों के काढ़े में ६ ग्राम हल्दी का चूर्ण भी मिला सकते हैं।

५५. एक या दो रत्ती बंग भस्म तुलसी के पत्तों के साथ अथवा शहद या मिश्री के साथ खानेसे प्रमेह नष्ट हो जाता है।

ध्यान रहे कि ताकत के लिए बंगभस्म दूध या जायफल के साथ लेनी चाहिए। स्तम्भन के लिए बंगभस्म पान में अथवा कस्तूरी में लेनी चाहिए शरीर पुष्टि के लिए तुलसी के पत्तों के रस में लेनी चाहिए।

(५६)

नये प्रमेह के लिए एक सुगम टोटका

बेल की जड़ और गोखरू दोनों को बराबर-बराबर लेकर कूट पीसकर छान लीजिए। इसमें से १२ ग्राम चूर्ण गरम पानी में भिगो दीजिए। फिर इसमें जरा सी मिश्री मिलाकर हर रोज पीजिए। इस नुस्खे के प्रयोग से नया प्रमेह शीघ्र ही चला जाता है।

(५७)

बड़ की मसीहाई स फूफ-ए-जिरयान

बड़ वृक्ष के फल लाकर छाया में सुखा लीजिए। सूख जाने पर कूट पीस कर कपड़छन कर लीजिए। जितना यह चूर्ण हो उतनी ही उसमें मिश्री महीन पीसकर मिला लीजिए और एक टीन के डिब्बे में भरकर रख दीजिए। इसमें से नौ नौ ग्राम चूर्ण सवेरे शाम फांककर ऊपर से गाय का दूध पियें प्रमेह नष्ट होकर वीर्य पुष्ट और बलवान होता है।

५८. विदारीकन्द ४८ ग्राम सेमल की नई मूसली ४८ ग्राम गोखरु २४ ग्राम और कमलगट्टे की गिरी हरी पत्ती निकाल कर २४ ग्राम सबको कूट पीस और छान कर इसमें बराबर वजन की मिश्री पीसकर मिला लीजिए और किसी अमृतवान रख लीजिए। इसमें से १२ ग्राम चूर्ण सुबह को और इतना ही शाम को फांककर ऊपर से गाय का दूध पीने से प्रमेह रोग नष्ट हो जाता है। इस दवा के इस्तेमाल से स्वप्न दोष को भी लाभ होता है।

५९. आमले का छिलका ४८ ग्राम, हल्दी ४८ ग्राम, और मिश्री ४८ ग्राम इन तीनों को मिलाकर कूट पीस व छानकर चूर्ण बना लीजिए। इसमें से ६ ग्राम चूर्ण ३१ दिन तक निरन्तर खाने से प्रमेह नष्ट हो जाता है।

६०. तुलसी के बीज ७५ ग्राम अकरकरा ४२ ग्राम मिश्री १०५ ग्राम इन तीनों को कूट पीस कर कपड़छान कर लीजिए और बर्तन में रख लीजिए। इसमें से १० ग्राम चूर्ण लेकर उस से एक रत्ती बंगभस्म लीजिए और चूर्ण फांककर औटा हुआ गरम दूध मिश्री मिलाकर ऊपर से पी लिया करें। इस नुस्खे के एक मास तक सेवन करने से एक मास में प्रमेह दूर हो जाता है। शरीर में ताकत भी खूब आती है

परहेज—लाल मिर्च, खटाई, मिठाई, गुड़, तेल और दही से औषधि के प्रयोग के दिनों में सख्त परहेज करना चाहिए। लेकिन इन सब परहेजों से स्त्री प्रसंग का परहेज करना अति आवश्यक है।

६१. १२५ ग्राम त्रिफला और १२५ ग्राम गोखरू लेकर कूट पीसकर छान लीजिए। इस चूर्ण में से ६ ग्राम से १२ ग्राम

तक की मात्रा, तीन ग्राम से १२ ग्राम तक शहद में मिलाकर चाटने से पेशाब की जलन समेत लाल, पीला तथा सफेद प्रमेह नष्ट हो जाता है।

६२. भुनी हुई अलसी १२ ग्राम और मुलेठी १२ ग्राम—इन दोनों का काढ़ा कुछ दिन तक प्रातः सायं पीने से प्रमेह नष्ट हो जाता है।

६३. फिटकरी को आग पर फुलाकर रख लीजिए। उसमें से दो ग्राम फिटकरी को एक चीनी के प्याले में रखकर ऊपर से पानी भर दीजिए और घोल लीजिए। फिर इसी प्याले में मूत्र त्याग कीजिये। जब-जब पेशाब की हाजत हो यही काम करिये। ऐसा करने से प्रायः दो-तीन सप्ताह में प्रमेह चला जाता है। अगर किसी खाने की औषधि के साथ यह नुस्खा इस्तेमाल किया जाये तो और भी उत्तम है।

६४. गिलोय का स्वरस २४ ग्राम, शहद ६ ग्राम, हल्दी का चूर्ण छः रत्ती, और सफेद चन्दन का बुरादा तीन रत्ती—इन सब औषधियों को मिलाकर प्रातः-सायं खाने से प्रमेह रोग नष्ट हो जाता है।

६५. त्रिफले को पीस कर पानी में घोल कर, उसी पानी में चने भिगो दीजिए। उन चनों को तीन दिन तक सवेरे खाइये। प्रमेह नष्ट हो जायेगा। ऐसा निरन्तर एक मास तक करना चाहिए।

६६. त्रिफला और त्रिकुटा लेकर कूट पीसकर छान लीजिये इसमें से छः ग्राम चूर्ण छः ग्राम शहद में मिलाकर चाटने से प्रमेह नष्ट हो जाता है।

६७. १२ ग्राम अथवा २४ ग्राम आंवले का चूर्ण शहद में

मिलाकर चाटने से पुराना प्रमेह भी दूर हो जाता है।

६८. एक तोला सौंफ को जल के साथ भाँग की तरह पीस कर एक मिट्टी या पत्थर के बर्तन पर कपड़ा रखकर उसी में सौंफ की लुगदी रख दीजिए और ऊपर से आध सेर या ड्ढ़ पाव जल डालकर छान लें। इस सौंफ में जल को सवेरे शाम पीने से प्रमेह नष्ट हो जाता है।

६९. नीम की भीतरी छाल ६० ग्राम लेकर कुचल लो, और रात को गरम जल में भिगो दीजिये। सवेरे मलकर कपड़े से छान लीजिए और मिश्री मिलाकर पी जाइये। इस नुस्खे के कुछ दिन सेवन करने से प्रमेह का ऐसा रोग जिसमें कि धातु पानी के समान बहती हो दूर हो जाता है।

७०. पका हुआ केला छः ग्राम घी मिलाकर खाने से प्रमेह को आराम हो जाता है।

७१. अडूसे का सबरस १२ ग्राम, गिलोय का सबरस १२ ग्राम, और मधु १२ ग्राम—इन तीनों को मिलाकर पीने से प्रमेह नष्ट हो जाता है। सर्दियों के मौसम में हो तो ३ ग्राम शहद मिला लेना चाहिए।

७२. अनार के फूलों की कली, कत्था और मिश्री—इनको बराबर-बराबर लेकर चूर्ण कर लीजिए। इसमें से छः ग्राम चूर्ण जल के साथ खाने से प्रमेह को आराम हो जाता है।

७३. २ ग्राम शुद्ध शिलाजीत को थोड़ं से जल में घोलकर पीने और ऊपर से मिश्री मिला दूध पीने से प्रमेह नष्ट हो जाता है।

७४. त्रिफले का चूर्ण १२ ग्राम, हल्दी पिसी हुई ३ ग्राम

और शहद १२ ग्राम में दो रत्ती अभ्रक भस्म मिला कर खाने से केवल एक मास में प्रमेह दूर हो जाता है।

(७५)

तोहफा-ए-जवानी

प्रमेह के लिए तिब्ब-ए-युनानी का एक शानदार नुस्खा

द्रव्य तथा निर्माण विधि—

अनन्तमूल, उशबा, सनाय, बड़ी हरड़, चोब चीनी, मुलेठी सफेद मूसली, असगन्ध, और मुण्डी, हरेक १२-१२ ग्राम, सोंफ, मजीठ, लाल चन्दन, सफेद चन्दन, उन्नाव (बीज निकाल कर) और गुलाब के फूल हरेक छः-छः ग्राम, दाल चीनी, केसर बड़ी इलायची और लौंग तीन-तीन ग्राम लेकर कूट पीस लीजिये। फिर पिसी कुटी दवा को दो किलो पानी में मिट्टी की हाण्डी अथवा कलई दार बर्तन में मन्दी आँच पर पकाइये। जब आधा किलो या चौथाई भाग रह जाये तो कपड़े में छान लीजिए और बोतल में भर लीजिए।

प्रातः सायं चौबीस-चौबीस ग्राम यह काढ़ा पीने से सब तरह के रक्त विकार, उपदंश, आतशक, प्रमेह, पारे का दोष, कोढ़, वात रोग, पुराना कब्ज, धातु की कमजोरी, पुरुषत्व की हानि—नामर्दी और मन्दाग्नि आदि रोगों को निश्चय ही आराम हो जाता है।

इस काढ़े से केवल एक सप्ताह में मल-मूत्र द्वारा दूषित तत्व निकल कर शरीर की ग्लानि दूर होती है, दूसरे हफ्ते में भूख बढ़ती है, तीसरे हफ्ते में खून साफ होता है। इसके बाद

रोग नाश होकर शरीर पुष्ट होता है। 'वैद्य' में लिखा है कि यह सालसा, अगर भबके द्वारा अर्क खींचकर बेचा जाये तो बड़ा लाभ हो। जो सज्जन अर्क न खींच सके वह इसे हर हफ्ते औटा छानकर बोतल में रख लें। अर्क शीघ्र खराव नहीं होता तथा रंग रूप और स्वाद से भी अच्छा होता है।

(७६)

पीपल की मसीहाई १

एक ऐसा अद्भुत योग जिससे केवल प्रमेह ही नहीं धातु सम्बन्धी सभी रोग दूर हो जाते हैं।

पीपल के अंकुर, जड़, छाल और फलों को आठ-आठ ग्राम लेकर पौने तीन सौ ग्राम जल में काढा बनाइये। जव चौथाई पानी रह जाये, छान लीजिये। शीतल होने पर शहद और मिश्री मिलाकर पी लीजिए, इस काढ़े से धातु सम्बन्धी सब रोग मिट जाते हैं। यह नुस्खा वाजीकरण है।

(७७)

पीपल की मसीही २

पीपल वृक्ष के कच्चे फल और अंकुर बराबर-बराबर लेकर और दोनों के बराबर चीनी मिलाकर शीतल जल के साथ सेवन करने से पुराना प्रमेह, वीर्य की क्षीणता और स्त्रियों का श्वेत प्रदर रोग नष्ट हो जाते हैं, एवं धातु पुष्ट होती है।

धातु पुष्ट प्रमेह और स्वप्न दोष के लिए तिब्बे-यूनानी का एक अद्भुत योग

(७८)

कतीरा गोंद ६ ग्राम, कीकर का गोंद १२ ग्राम, सफेद-मूसली ४८ ग्राम, बंसलोचन ४८ ग्राम, छोटी इलायची के दाने २४ ग्राम—इन सबको कूट कर कपड़छान कर लीजिए। फिर चूर्ण के वजन के बराबर मिश्री महीन पीस कर मिला लीजिए।

इसमें से सवेरे शाम छः छः ग्राम चूर्ण १२-१२ ग्राम शहद में मिलाकर और धारोष्ण दूध पीने से २१ दिन में प्रमेह और स्वप्न दोष नष्ट हो जाते हैं।

(७९)

तिब्बे यूनानी का एक और चमत्कार अक्सीर-ए-जिरयान

द्रव्य तथा निर्माण विधि—

छोटी इलायची के बीज	६ ग्राम
बंसलोचन	६ "
दखिनी गोखरू	६ "
तालमखाना	१२ "
ईसबगोल की भूसी	२४ "
चिकनी सुपारी	१२ "
सफेद जीरा	२४ "
हजरतबेर	१२ "
बेलगिरी	२४ "
सालम मिश्री	१२ "

सब औषधियों को कूट पीस कर छान लीजिये। फिर चूर्ण से आधा वजन मिश्री बारीक पीसकर मिला लीजिए।

इसमें से छः छः ग्राम चूर्ण १२ ग्राम शहद में चाटकर ऊपर से ढाई सौ ग्राम धारोष्ण दूध पी लीजिए। २१ दिन के प्रयोग से स्वप्नदोष और प्रमेह को आराम हो जाता है।

८०. सफेद कटेरी के पंचाँग का चूर्ण १८ ग्राम और बबूल की अन्तरछाल का चूर्ण १८ ग्राम, पिसी हुई मिश्री ३० ग्राम, सबको मिलाकर रख लीजिए। इसमें से नित्य सवेरे ही तीन-तीन ग्राम चूर्ण गो दुग्ध के साथ सेवन करने से प्रमेह मूत्र कृच्छ प्रदर, और स्वप्नदोष आदि रोग दूर हो जाते हैं।

८१, सफेद कटेरी का रस छः ग्राम गिलोय का रस १८ ग्राम और शहद छः ग्राम—इन तीनों को मिलाकर ११ दिन तक सवेरे ही सेवन करने से प्रमेह, श्वांस, खाँसी, और सूजन—यह रोग नष्ट हो जाते हैं।

(८२)

प्रमेह पर जादुई काढ़ा जो जादू तो नहीं, पर जादू का सा असर रखता है

वायवडिंग, हल्दी, मुलेठी, सोंठ और गोखरू—इनको पाँच-पाँच ग्राम लेकर पकाइये। फिर शीतल होने पर शहद मिलाकर पीजिये। यह काढ़ा प्रमेह के लिये वास्तव में जादू का सा असर रखता है।

प्रमेह के लिये एक और अद्‌भुत जड़ी जिसके एक मास के प्रयोग से प्रमेह बिलकुल जाता रहता है

(८३)

निर्मली का तीन ग्राम चूर्णं शहद में मिलाकर चाटिये और ऊपर से २५० सौ ग्राम दूध मीठा डालकर पीजिये। एक महीने तक इसदवा के सेवन से प्रमेह इस तरह नष्ट हो जाता है जैसे कि भगवान श्री रामचन्द्र जी महाराज ने रावण को मारा था।

८४. हरे आमलों का रस, १२ ग्राम बारीक पिसी हुई हल्दी ३ ग्राम, और शहद चार ग्राम—इन सबको मिलाकर पीने से प्रमेह नष्ट हो जाता है।

८५. शतावर का सबरस, १२ से २४ ग्राम तक गाय के १२५ ग्राम दूध में मिलाकर पीने से प्रमेह को आराम हो जाता है।

८६. बड़ी इलायची का चूर्ण—तीन ग्राम की मात्रा में शहद में मिलाकर चाटने से प्रमेह में आराम हो जाता है।

८७. ढाक के १२ ग्राम फूलों को पानी में पीस कर और छः ग्राम मिश्री मिलाकर एवं पानी में छान कर प्रमेह अवश्यमेव नष्ट हो जाता है।

८८. हजरतबेर को, तीन दिन तक, गुलाब जल में खरल करके, रख लीजिये। बाद में इस चूर्ण में से एक ग्राम चूर्ण शहद में मिलाकर सबेरे शाम चाटने से नया और पुराना प्रमेह नष्ट हो जाता है।

अक्सीर-ए-जिरयान, तिब्बे-ए-यूनानी की प्रमेह के लिए एक अनुपम औषधि

(८९)

द्रव्य तथा निर्माण विधि—

चोप चीनी	१२ ग्राम
त्रिफला	१८ „
दक्खिनी गोखरू	१२ „
सफेद इलायची के दाने	६ „
सालभ मिश्री	१२ „
तालमखाना	१२ „
मूंगा भस्म	६ „
मिश्री	७२ „

सबको कूट-पीस कर छान लीजिये।

प्रयोग विधि—

छः छः ग्राम यह चूर्ण १२-१२ ग्राम शहद में मिलाकर सबेरे-शाम चाटने से प्रमेह को अवश्यमेव आराम हो जाता है।

(९०)

प्रमेह के लिए कुछेक खासुलखास योग

चाँदी की भस्म चार चावल से एक रत्ती तक, इलायची एक ग्राम, तेजपात एक ग्राम और दाल चीनी एक ग्राम—इन तीनों के चूर्ण तीन ग्राम में मिलाकर खाने से प्रमेह रोग अवश्यमेव दूर हो जाता है।

१. बबूल की छाल, कटहल की छाल और महुए की छाल—इनको छः-छः ग्राम लेकर, पानी के साथ पीस लीजिये

और उनमें रत्ती-आधी-रत्ती चांदी की भस्म मिलाकर खा लीजिये। ऐसा कुछ दिनों तक कीजिये। निश्चय ही प्रमेह नष्ट हो जायेगा।

९२. गूलर के फूलों का चूर्ण, १२ ग्राम लेकर उसमें एक रत्ती तांबा भस्म रखकर कुछ दिन तक खाने से प्रमेह में निश्चय ही आराम हो जाता है।

(९३)

प्रमेह पर शास्त्रीय औषधियां

प्रमेह कुठार रस

द्रव्य तथा निर्माण विधि—

छोटी इलायची के बीज, भीमसेनी कपूर, मिश्री, आंमले, जायफल, गोखरू, सेमल की छाल, गंधक, बंग भस्म और लौह भस्म—प्रत्येक तीन-तीन ग्राम।

पहले गंधक को खरल में डालकर खूब घोटिये। जब खूब घुट जाए तो उसमें बंग भस्म और लौह भस्म मिला कर घोटिये। इन तीनों के अलावा बाकी दवाओं को हिमाम-दस्ते में कूट-पीस कर कपड़छान कर लीजिए। इसके बाद इस चूर्ण को भी उसी खरल में डालकर खूब घोटिये। जब सब एक-एकजीव हो जाएँ, शीशी में रख लीजिये। यही प्रमेह कुठार रस है।

सेवन विधि—इस रस में से १ या १॥ ग्राम रस, ६ या १२ ग्राम शहद में मिलाकर चाटने से समस्त प्रकार के प्रमेह नष्ट हो जाते हैं।

योगराज गुटी
(६४)

द्रव्य तथा निर्माण-वटी—

सोंठ, पीपरामूल, चव्य, चीता, काली मिर्च, भुनी हींग, अजमोद, सिरस, सफेद जीरा, रेणुका के बीज, इन्द्र जौ, पाढ़, वायबडिंग, गजपीपर, कुटकी, अतीस, भारंगी की जड़, वच, मरोड़फली, तेजपात, देवदारू, पीपर, कूट, रासना, नागरमोथा, सेंधा नमक, छोटी इलायची, गोखरू, हरड़, धनिया, बहेड़ा, आमला, दालचीनी, खस, जवाखार और तिल—इन सबको १२-१२ ग्राम लेकर खूब महीन कूट-पीस छान लीजिये। उस के बाद इस चूर्ण का जितना वजन हो उतनी ही शुद्ध भैंसा गूगल लीजिये। उसको खरल में डालकर ऊपर से घी देकर खूब कूटिये। जब एकजीव हो जायें चने के समान गोलियाँ बना लीजिये और चिकने बर्तन में रख लीजिये।

इन योगराज गूटियों को अलग-अलग अनुमानों के साथ सेवन करने से शुक्रदोष, प्रमेह, वायु-रोग, आमवात, मृगी, कत-रक्त, कोढ़, दुष्ट व्रण, बवासीर, तिल्ली, वायु-गोला, उदर-रोग, अफारा, मन्दाग्नि, श्वाँस, खांसी, अरुचि, नाभिशूल, कृमिरोग, क्षय, हृदय रोग, उदावर्त्त और भगन्दर रोग नष्ट हो जाते हैं।

मात्रा—तीन ग्राम से इस दवा को शुरू करें और हर सातवें दिन इतनी ही बढ़ाकर १२ ग्राम तक पहुंचा दें। वैसे तो इसकी मात्रा ६ ग्राम की है।

पथ्यापथ—इस दवा का सेवन करने में मैथुन और खाने-पीने का कोई परहेज नहीं अर्थात इन गोलियों का सेवन करने

वालों को खान-पान और स्त्री-भोग की कोई कैद नहीं। मरीज इच्छानुसार आहार-विहार कर सकता है।

(६५)

प्रेमहारि शर्बत

बबूल की छाल, पीपल के पेड़ की छाल, महुए की छाल, कटहल की छाल, सफेद चन्दन का बुरादा और गिलोय - इन पाँचों को, एक सौ पच्चीस ग्राम (प्रति) लेकर जौकुट कर लो और रात को मिट्टी या कलाईदार बर्तन में दस-बारह किलो जल डालकर भिगो दीजिये। सवेरे उसे कलाईदार कड़ाही में डालकर मन्दी आँच पर पकाइये। जब चौथाई जल रह जाए, काढ़ा छान लीजिए। उस काढ़े में एक किलो मिश्री मिलाकर फिर आग पर चढ़ाइये और दूध मिले पानी के छींटे दे-दे कर मैल साफ कर लीजिए। जब शर्बत की चाशनी हो जाए, जमीन बूंद टपकाने से न फैले तो उतार लीजिए और छानकर बोतल में भर लीजिए।

सेवन विधि—इसमें से १२ या १८ ग्राम शर्बत रोज चाटने से पित्तज प्रमेह निश्चय ही शान्त हो जाता है। परीक्षित है।

(६६)

रतिवल्लभ चूर्ण

द्रव्य तथा निर्माण विधि—

सकाकुल मिश्री	६६ ग्राम
बहमन सफेद	२४ ,,
बहमन सुर्ख	२४ ,,
सालम मिश्री	२४ ,,

दालचीनी	२४ ,,
सफेद मूसली	४८ ,,
स्याह मूसली	४८ ,,
छुहारे	४८ ,,
छोटी इलायची के बीज	२० ,,
गावजुबां	२० ,,
मिश्री	३९६ ,,

इन सब चीजों को कूट पीसकर और छानकर बोतल में भर लीजिये। इसके सेवन से दिलोदिमाग में ताकत आती है। शरीर तैयार होता है। धातु पुष्ट और गाढ़ी होती है तथा स्त्री प्रसंग की इच्छा बेतहाशा बढ़ जाती है जिन नौजवानों के पेशाब में वीर्य जाता हो. जिनकी धातु पतली हो वह इसे अवश्यमेव सेवन करें, उनकी इच्छापूर्ण होगी। अनुभूत है।

सेवन विधि—इसकी मात्रा जवान के लिये १२ ग्राम है। सवेरे ही भोजन से पहले, एक खुराक चूर्ण खाकर ऊपर से गाय का थन दुहा धारोष्ण दूध पीना चाहिए।

(९७)

प्रमेह धन चूर्ण

नागौरी असगंध और विधारा—दोनों बराबर २ लेकर, कूट पीसकर छान लीजिये। सवेरे ही इसमें से ६ ग्राम चूर्ण फांककर गाय के दूध में मिश्री मिलाकर पीने से प्रमेह और धातु रोग नष्ट होकर शरीर खूब बलवान और मोटा-ताजा होता है। कम से कम ४० दिन तक सेवन करना चाहिए। ताकत प्रदान करने के लिए, यह औषधि वृद्धों के लिए अमृत समान है।

बसन्त कुसुमाकर रस

(९८)

सोने की भस्म	१२ ग्राम
अभ्रक भस्म	१२ "
फौलाद भस्म	१८ "
बंगेश्वर	१८ "
मूंगे की भस्म	२४ "
मोती भस्म	२४ "

बनाने की विधि—

इन छहों भस्मों को बढ़िया खरल डालकर खूब घोट लो। पीछे इसमें नीचे लिखी चीजों को एक-एक भावना दीजिये।

(१) गाय का दूध
(२) अड़ूसे का स्वरस
(३) ताजा हल्दी का स्वरस
(४) केले की जड़ का स्वरस
(५) गुलाब के फूलों का स्वरस
(६) मालती के फूलों का स्वरस
(७) कस्तूरी
(८) शुद्ध कपूर
(९) तुलसी की पत्तियों का स्वरस।

इनमें से प्रत्येक को, एक दिन में एक भावना देना अच्छा है। अगर ताजा हल्दी न मिले तो सूखी हल्दी को पीसकर काढ़ा बना लेना चाहिए। और उसी से भावना देनी चाहिए। गुलाब के फूलों के स्वरस के बजाय बढ़िया अर्क गुलाब की भावना भी दे सकते हैं। भावना देने के बाद चूर्ण को सुखाकर साफ शीशी

में भर कर रख लीजिए। यह "बसन्त कुसुमाकर रस" है। प्रमेह तथा मधुमेह का नाश करने में यह शास्त्रीय औषधि अद्वितीय है। कोई प्रमाण ही होगा, जो कि इस अनुपम औषधि का प्रयोग तो करे मगर उसे आराम न हो।

सेवन विधि—

एक या दो रत्ती अथवा आधी या चौथाई रत्ती की मात्रा शहद के साथ सेवन करने से बीसों प्रमेह, आराम हो जाते हैं और मिश्री तथा सफेद चन्दन के साथ सेवन करने से अम्लपित्तरादि रोग नष्ट हो जाते हैं।

परीक्षा से मालूम हुआ है कि इसे शहद के साथ सेवन करने से कफवात से उपज प्रमेह नष्ट हो जाते हैं। मिश्री या चन्दन के साथ या अर्क गुलाब, मिश्री और श्वेत चन्दन (शर्बत सन्दल) के साथ सेवन करने से पित्तजप्रमेह और अमल-पित्त आदि रोग नष्ट हो जाते हैं। जिनका प्रमेह किसी दवा से न जाये, वह इसे जरूर सेवन करें। ताकतवर और सर्द मिजाज वाले को दो रत्ती भी पच जाता है—गरमी नहीं करता। गरम-मिजाज वाले को चौथाई रत्ती से शुरु करना चाहिए।

(९९)

धातु रोगान्तक चूर्ण

द्रव्य तथा निर्माण विधि—

मिश्री	५०० ग्राम
छुहारे	४४० ग्राम
रूमी मस्तगी	२८ ग्राम
सफेद मूसली	२८ ग्राम

सब दवाओं को अलग-अलग कूट-पीसकर छान लीजिए।

जब चारों अलग २ कुट जायें तो काँटे से तोल २ कर मिला लीजिए। याद रहे कि दवाओं को अलग-२ कूटा जायेगा।

सेवन विधि—इस चूर्ण की मात्रा २४ ग्राम से ४२ ग्राम तक है। इसे सन्ध्या समय, फाँककर ऊपर से गाय का औटाया दूध पीना चाहिए। दूध अगर फीका न भाये तो जरा सी मिश्री मिला लेनी चाहिए। अगर दूध औटाते समय छः ग्राम घी मिला दें और शीतल होने पर उसमें ३ ग्राम मधु भी मिला दीजिये, और पी जाइये। यह अनुमान बलवानों के लिए अच्छा है। हमने इसका दोनों तरह उपकार खूब देखा है।

(१००)

लोहासव

पठानी लोध, कपूर, पोहकर मूल, छोटी इलायची मूवी (मरोड़फली), वायवड़िंग, त्रिफला, अजवायन, चव्य, प्रियनू-फूल, चिकनी सुपारी, इन्द्रायन की जड़ की छाल, कड़वा चरा-यता, कुटकी मारंगी, तगर, चीते की जड़ की छाल पीपरामूल, मीठा कूट, अतीस, ईख, पाढ़ी काली मिर्च, मोथा, इन्द्रजो, नाग केसर, अर्जुन-वृक्ष की छाल और जूवासा प्रत्येक १२-१२ ग्राम।

निर्माण विधि—इन सब दवाओं को जौकुट करके, रात के समय बारह किलो पानी में मिट्टी के बर्तन में भिगो दीजिए। सवेरे कलईदार बर्तन में डालकर मन्दी आग पर पकाएं। जब चौथाई पानी रह जाये तो छान लीजिए। और डेढ़ किलो शहद मिलाकर किसी चीनी के बर्तन में रखकर, ऊपरसे ढक्कन देकर, ढक्कन की संधियों को मुलतानी मिट्टी और कपड़े की

तहें देकर बन्द कर दीजिए। जिससे जरा भी सिरा न रहे। इसे पन्द्रह दिन तक इसी तरह रक्खा रहने दीजिये—छोड़िये बिलकुल नहीं। १५ दिन के बाद खोलकर कपड़े से छान लीजिए और बोतलों में भर लीजिए। यही लोहासब है।

इससे कफ-पित्त-जनित प्रमेह नष्ट होते हैं। इसके सिवा पीलिया बवासीर अरुचि, ग्रहणी और कोढ प्रभृति आराम होते हैं। हम इस अनुपम औषधि को इतने रोगों पर आजमा नहीं सके। फिर इसमें रत्ती भर भी शक नहीं है कि कई कफ-पित्तज प्रमेह रोगी इससे लाभ उठा चुके हैं।

मात्रा—३ ग्राम से २४ ग्राम तक।

समय—सवेरे शाम।

(१०२)

सेमल पाक

प्रमेह के लिए एक रामबाण औषधि

द्रव्य तथा निर्माण विधि—

सेमल की छाल आधा किलो, छोटी इलायची के दाने, दालचीनी तेजपात लोंग जायफल नागकेसर नागरमोथा, धनिया, बंसलोचन, सोंठ पीपर, काली मिर्च, असगन्ध, हरड़ और फौलाद भस्म—प्रत्येक ६०-६० ग्राम गुड़ दो किलो और दूध ४ किलो।

पहले सेमल की छाल को पीसकर दूध में मिला दीजिए और औटाये जब खोआ हो जाये, रख दीजिए। इलायची से हरड़ तक की सब दवाओं को कूट पीसकर छान लीजिए। गुड़ को कड़ाही में डालकर, थोड़ा पानी देकर औटाइये जब गाढ़ा

हो जाये, उसे उतार लीजिए और फौरन ही खोआ, दवाओं का चूर्ण और फौलाद भस्म मिलाकर खूब एक जीव कीजिए और थाली में जमा दीजिए और बरफी की तरह कतले काट लीजिये यह कतले १२-१२ ग्राम के होने चाहिये।

सेवन विधि—एक टुकड़ी यह बरफी रोजखाने से सब प्रकार के प्रमेह नष्ट हो जाते हैं। सच पूछिए तो यह प्रमेह की रामबाण औषधि है।

(१०३)

प्रमेहान्तक चूर्ण

द्रव्य और निर्माण विधि—

बट वृक्ष की छाल, गूलर की छाल, सोनापाठा अमलतास का गूदा, आम की छाल, कौंच के पेड़ की छाल जामुन की छाल अर्जुन की छाल, करंज चिरोंजी, नागरमोथा, मुलेठी (छिली हुई) लोघ की छाल, वरना की छाल, मीठा कूट, महुए की छाल और मिलावे के शुद्ध फल—इन २२ दवाओं को २४ ग्राम लेकर कूट-पीसकर छान लीजिये और शीशी में रख लीजिये।

सेवन विधि—इसकी मात्रा ६ ग्राम की है। इसे शहद के साथ चाटकर ऊपर से त्रिफले का काढ़ा पीना चाहिए इस चूर्ण के ३० या ४० दिन के प्रयोग से प्रमेह नष्ट हो जाता है।

(१०४)

शिलाजीत वटी

शुद्ध शिलाजीत चार ग्राम, लोहभस्म दो ग्राम, और सोना-मुखी भस्म दो ग्राम। इन तीनों को एकत्र खरल कीजिये और दो-दो रत्ती की गोलियाँ बना लीजिए। इनमें से एक-एक गोली

प्रातः साय मक्खन या मलाई में लपेट कर खाने से प्रमेह नष्ट होता है और सफेद धातु का गिरना बन्द हो जाता है ।

(१०५)

प्रमेह नाशक वीर्यवर्धक तथा बाजीकरण योग

सफेद मूसली ढाई तोला ईसबगोल की भूसी पाँच तोला दोनों को कूटकर सात भाग करें । एक भाग पाव भर दूध में भिगो रखें । जब समस्त औषधि फूल जाये तो देगची में दो तोला शुद्ध घी डालकर चन्द लौंग डालें लाल हो जाये तो उपरोक्त औषधि सम्मिलित करें । एक दो जोश आने पर नीचे उतार लें और शीतल होने पर मिश्री मिलाकर चम्मच से खायें ।

द्वितीय योग

सफेद मूसली आवश्यकतानुसार लेकर उसको सूक्ष्म पीस लें । नित्य प्रति रात्रि के समय एक तोला यह चूर्ण पाव भर गौ दुग्ध में डाल पकावें और गाढ़ापन आ जाने पर चीनी की प्लेट में डालकर रख देवें । प्रातः काल मिश्री मिलाकर चम्मच के साथ खाये ४० दिन सेवन से प्रमेह भी दूर हो जायेगा और शरीर भी बलिष्ठ हो जायेगा ।

तृतीय योग

भिंडी की जड़ आवश्यकतानुसार लेकर छाया में सुखा लें और जौकुट करके शीशी में भर लें । आवश्यकता के समय इसमें से एक तोला लेकर रात को पाव भर पानी में भिगो दें और प्रातःकाल मल छान कर मिश्री मिलाकर रोगी को पिला

दें १२ दिन के सेवन से प्रमेह स्वप्नदोष दूर होकर वीर्य पुष्ट हो जायेगा और प्राकृतिक स्तम्भन भी बढ़ जायेगा।

चतुर्थ योग

यह वही योग है जिसको हमारे एक मित्र विज्ञापन द्वारा बेच रहे हैं। यह उनका सबसे अधिक फलप्रद योग है। जिसके विषय में उनके पास सैंकड़ों प्रमाण पत्र विद्यमान हैं। इस दवा से पुराने से पुराना प्रमेह भी कुछ दिनों में दूर हो जाता है और सबसे बड़ा गुण यह है कि प्रमेह नाशक होने के अतिरिक्त उच्चकोटि की नस्य भी है और फिर विशेषता यह है कि अमिश्रित द्रव्य है योग पूर्ण रूप से नीचे अंकित किया है, बनाकर लाभ उठावें।

परन्तु यह योग तनिक परिश्रम से बनता है क्योंकि यह अत्यन्त परिश्रम से कूटी जाने व पिसने वाली वस्तु है।

योग—निर्मली (सुपारी की भांति एक दानेदार पदार्थ है) १२ दाने लेकर हावन दस्ते में जौकुट करलें और फिर उनको १ किलो गाय के दही में आठ पहर भिगोकर रख दें। फिर दही सहित दवा कूण्डे में डालकर भलीभांति घोटकर अत्यन्त सूक्ष्म चूर्ण बनालें, तथा स्वाद बदलने के लिये कुछ मिश्री मिलाकर सुरक्षित रखें। प्रमेह नाशक अकसीरी योग बन गया।

मात्रा—६ ग्राम प्रातःकाल, ६ ग्राम सायंकाल समोष्ण गौ दुध के साथ सेवन करायें। इससे साधारण प्रमेह १० १२ दिन में और पुराने से पुराना २१ दिन में अवश्य दूर हो जाएगा। यदि रोग को कोष्ठबद्धता हो तो पहिले बद्धकोष्ठता को दूर कर सेवन कराना चाहिए।

पंचम योग

यह चूर्ण भी इस रोग की अन्तिम औषधि है। वीर्यस्राव, स्वप्नदोष, वीर्य का पतलापन आदि को दूर करके प्राकृतिक स्तम्भन उत्पन्न करता है। यह भी विशेष रहस्यमय योग है। जो लोग बहुत सी औषधियां सेवन करके निराश हो बैठे हों, वह तनिक इस चूर्ण का सेवन करके देखें। अवश्य लाभ होगा।

योग—सालिब मिश्री, मूसली श्वेत, साँठो चावल, सिंघाड़ा शुष्क प्रत्येक ५० ग्राम, बंगभस्म १० ग्राम, मिश्री सब औषधियों के बराबर। सबको पीसकर बंगभस्म सहित भलीभांति मिला लें।

मात्रा—१० ग्राम प्रातःकाल १० ग्राम सांयकाल गाय के दूध के साथ लें। उस दूध में बड़ की ७ कोपलें डालकर व पकाकर छान लिया करें। ईश्वर चाहे तो इससे असीम लाभ होगा और इक्कीस मात्रा से पूरा २ लाभ हो जायेगा।

छटवां योग

लीजिए भद्र पुरुषों! हम अपना प्रचलित योग वीर्य बन्धु (रूफी के आजम) भी पाठकों की सेवा में समर्पित किये देते हैं। यह वही योग है, जिसका विज्ञापन हमने छापा हुआ है। प्रभु की दया से इस योग के प्रताप से फार्मेसी को पर्याप्त आय हो रही थी। परंतु हम इस बात को अनुचित समझते हैं कि और योग तो सब प्रकट कर दिये जायं और इस योग को छिपाया जाये। हम परमात्मा को अन्नदाता और "कारणम् कारण्वनाम्" समझते हुए योग को आपके समक्ष रख रहे हैं।

योग—खसियातुल सालब पण्चकयुक्त (सालब पंजा) ५०

ग्राम मूसली, श्वेत दक्षिणी २०० ग्राम, रेहा के बीज ५० ग्राम, सालिब और मूसली को बारीक कूट छानकर रेहां के बीज मिलायें और फिर डिब्बा भरकर रखें।

सेवन विधि—यह चूरण ५ ग्राम की मात्रा में लेकर आधा किलो गौ दुग्ध में डालकर मन्द मन्द आंच पर पकायें। जब फिरनी की भाँति गाढ़ा हो जाए तब उतार कर ठन्डा करके १ रत्ती त्रिधातु भस्म मिलाकर प्रातःकाल खिलाया करें। ४० दिन में अपरिमित लाभ दृष्टिगोचर होंगे।

दुःख और सुख

ठीक उपचार व ठीक इलाज किया जाये तो दुख को सुख में बदला जा सकता है। आप को कोई गुप्त रोग है या मानसिक उलझन ? जो भी आपकी समस्या है, उसके समाधान के लिए हमें स्वयं मिलें या सारा हाल लिखकर भेजें। फिर देखिए कि हम अपने इलाज से आपको कैसा सुखी, स्वस्थ व प्रसन्न बनाते हैं।

मैनेजर : रहमदिल दवाखाना (रजिस्टर्ड),
सरकूलर रोड, शाहदरा-दिल्ली-३२

तीसरा अध्याय

स्वप्न-दोष

NOCTURAL EMISSON OR NIGHT DREAMS

सुप्तावस्था में वीर्यपतन का नाम स्वप्न दोष है। आँगल भाषा में इस रोग का नाम है—नाइट एमीशन्ज (Night-Emessions) अर्थात रात्रि में होने वाला स्राव। परन्तु यह नाम उपयुक्त नहीं क्योंकि दिन में सोते हुए भी स्वप्नदोष उसी प्रकार हो सकता है जैसे कि रात्रि में, शर्त दिन या रात की नहीं है। परन्तु केवल निद्रावस्था की है। अत: इस रोग का सार्थक नाम रात्रि दोष न होकर स्वप्नदोष ही है।

प्रथमावस्था में स्वप्नदोष से पूर्व कोई गन्दा स्वप्न दिखाई देता है। उसके साथ ही शिशन भी पूर्ण हर्षित होता है। वह वस्त्र जिस पर कि वीर्य पात होता है, वीर्य गाढ़ा होने के कारण कठोर हो जाता है। स्रवित मात्रा भी पर्याप्त होती है। बुद्ध, युवक स्वप्न में किसी प्रेयसी के साथ समागम करता है और स्खलन हो जाता है आरम्भ में स्वप्न लम्बे होते हैं और स्खलन पूर्ण क्रिया तथा यथोचित समय के बाद होता है। परन्तु बाद में जब स्वप्नदोष अधिक होने लगते हैं तो स्वप्न छोटे होते हैं और स्रवण केवल चुम्बन आलिंगन अथवा रतिक्रिया के आरम्भ मात्र से ही हो जाता है। स्राव थोड़ी मात्रा में और पतला होता है जो कि वस्त्र पर बिना कोई चिन्ह छोड़े उड़ जाता है। उत्तेजना

भी अपूर्ण होती है। अन्तिमावस्था में स्वप्नदोष बिना स्वप्न तथा उत्तेजना के ही होते हैं। इस दशा में या तो स्वप्न होते ही नहीं, होते हैं तो काम सम्बन्धी नहीं होते प्रत्युत वीर्य पात स्वप्न में किसी आकस्मिक चिन्ता, भय, हर्ष अथवा अन्य क्षोभ के कारण होता है।

स्वप्नदोष दो प्रकार के होते हैं, प्रथम वह जो यौवन के कारण होते हैं। यहाँ शुक्राशय भरा होता है और जब भरे हुए मलाशय तथा मूत्राशय की ओर से उसपर दबाव पड़ता है तो अपने निवास से शुक्र का निकास स्वाभाविक ही है। इस श्रेणी के निकास कभी २ ही होते हैं जब तक दुबारा शुक्राशय शुक्र द्वारा भर न जाये पुनः उसके होने की सम्भावना नहीं होती।

यदि अण्ड (Testicles) स्वस्थ हों तो शुक्राशय को एक बार रिक्त होकर फिर भरने में दस दिन लग जाते हैं अतः दस दिन से पूर्व स्वप्न दोष को आशा नहीं की जा सकती। यदि अण्ड शुक्र निर्माण शीघ्र न करके अन्य ओजवर्धक धातुओं के बनाने में लगे रहें तो कई मास व्यतीत हो सकते हैं। अण्डों की क्रिया को किस प्रकार नियमित किया जा सकता है यह विषय इस पुस्तक की सीमा से परे है। उपर्युक्त से यह स्पष्ट है कि स्वप्नदोष तब होता है जब मनुष्य पूर्ण युवा हो तथा जिसका यौवन हस्तक्रिया आदि द्वारा निर्दोष हो। वीर्य के निकास का कोई मार्ग न होने के कारण वह शुक्राशय में ही संचित होता रहता है। तब एक अवस्था ऐसी आती है कि जब शुक्राशय में अधिक मात्रा नहीं समा सकती और मलाशय तथा मूत्राशय के तनिक से दबाव तथा तनिक सी भी उत्तेजना से स्वप्नदोष हो सकता है। परन्तु यदि कोई ऐसा उपाय हो जिस

से शुक्राशय पर से दवाब को रोका जा सके तथा कामोत्तेजना को शान्त रक्खा जा सके तो स्वप्नदोष को काफी समय तक रोका जा सकता है।

इस प्रकार से हस्तक्रिया हानिकारक नहीं होती। भोजन में नियन्त्रण तथा काम विषयों के त्याग द्वारा उनको जीता जा सकता है। परन्तु साथ ही उनकी ओर से आँखें बन्द भी नहीं रखनी चाहिए। क्योंकि किसी भी समय उनके प्रबल हो उठने का भय है। अतः उनको मर्यादा में रखने के लिए रोगी को इस अध्याय के अन्त में बताये गए प्रतिबन्धक उपायों का पालन करना चाहिए।

यदि स्वप्न दोष २० वर्ष की आयु के बाद होते हैं, तो उनकी संख्या एक मास में तीन से अधिक न हो अर्थात लगभग दस दिन के अन्तर से होते हों, भोग सम्बन्धी दीर्घ स्वप्न तथा पुरुषेन्द्रिय की उत्तेजनायुक्त हो तथा स्रवित वीर्य पर्याप्त मात्रा में और वस्त्र पर कड़ा धब्बा उत्पन्न करने वाला हो तो वह विकार के सूचक नहीं होते, प्रत्युत शक्ति को प्रमाणित कर स्वास्थ्य रक्षा में सहायक होते हैं। ऐसी दशा में प्राय विवाह सर्वोत्तम उपाय है। अन्यथा हो सकता है कि मनुष्य अन्य कुकर्मों में फँसकर अपने पैर पर स्वयं कुल्हाड़ो मार बैठे। एक बार फिर समझ लें कि इस प्रकार के स्वप्नदोष २० वर्ष की आयु के पश्चात ही होते हैं। परन्तु वह २० वर्ष की आयु से पूर्व ही आरम्भ हो जावें अथवा थोड़े २ अन्तर से होने लगें तो अनुमान कर लें कि उत्पादक संस्थान में विकार आ गया है इस प्रकार के पीड़ितों में स्वप्न दोष का प्रधान हेतु प्रोटेस्ट, शुक्राशय (Seminal Vesicles) तथा मूत्र प्रणाली का प्रदाह

(Irritation) होता है। यह प्रदाह कैसे और क्यों उत्पन्न होता है, इसके लिए कई बातें विचारणीय हैं।

सबसे प्रमुख कारण अधिक मात्रा में हस्तक्रिया है। यह एक विचित्र बात है कि यद्यपि हस्तक्रिया स्वप्न दोषों की जननी है परन्तु जब तक व्यक्ति हस्तक्रिया करता है स्वप्नदोष या तो होते नहीं यदि होते भी हैं तो बहुत अन्तर से। परन्तु ज्यों ही यह दुष्ट स्वभाव त्याग दिया जाता है स्वप्नदोष प्रचण्ड रूप धारण कर थोड़े २ अन्तर से होने लगता है। कारण यह है कि हस्तक्रिया के राज्यकाल में जननेन्द्रियों का तनाव तथा सन्ताप ऐच्छिक (Voluntary) शुक्र निष्कासन द्वारा शान्त कर दिया जाता है। बहुत कम अवसर ऐसे रह जाते हैं जब स्वप्न-दोषों की आवश्यकता पड़े। परन्तु इस आदत को छोड़ने के बाद क्योंकि तंतुओं (Nerves) को अभ्यस्त विश्रांति नहीं मिलती अतः प्रकृति उस की पूर्ति स्वप्नदोष द्वारा कर देती है। परन्तु जिस समय प्रदाह अधिक हो और वह तनिक से दबाव को भी सहन करने में भी असमर्थ हो तो हस्तक्रिया और स्वप्नदोष दोनों इकट्ठे हो सकते हैं और मनुष्य दुगनी गति से अपनी शक्तियों को लुटाने लगता है।

हस्तक्रिया के अतिरिक्त यह सब साधन जो प्रदाह तथा उत्तेजना को उत्पन्न करते हैं और जिनका उल्लेख पीछे किया जा चुका है। स्वप्नदोषों के लिए उत्तरदायी हैं। यह भली प्रकार समझ लेना चाहिए कि वह कारण बिना जननेन्द्रियों का प्रदाह उत्पन्न किये सीधे ही स्वप्न दोषों की उत्पत्ति नहीं करते इस लिए आदि (Original) कारणों के लुप्त होने तथा श्रेष्ठ वीर्य गाढ़ा करने वाली औषधियों के सेवन के उपरान्त भी स्वप्नदोष रहते हैं। निस्संदेह वीर्य पुष्टि स्वप्नदोषों की चिकि-

त्सा का एक उपयोगी अंश है। परन्तु प्रदाह की विद्यमानता में वीर्य गाढ़ा हो ही नहीं सकता। यही रहस्य है जो सर्वोत्कृष्ट औषधियों को भी फली भूत नहीं होने देता।

हम बहुधा ऐसे व्यक्तियों के सम्पर्क में आते हैं जिनमें यद्यपि वह कारण होते हैं जो दूसरों में स्वप्नदोष उत्पन्न करते हैं फिर भी वह रोग से मुक्त होते हैं। इसका सीधा समाधान यह है कि जिनमें प्रदाह अभी तक नहीं होता वह अछूते रहते हैं। परन्तु जब प्रदाह अपना घर कर लेता है तो मूल कारण के दूर होने पर भी स्वप्नदोष पीछा नहीं छोड़ता, एक व्यसनी चाहे हस्त क्रिया छोड़ दे, चाहे वह प्रतिदिन शिशन को स्वच्छ भी करने लगे परन्तु स्वप्नदोष पीछा नहीं छोड़ता। दूरवर्ती (Remote) मूल कारण के विनाश मात्र से अभीष्ट फल की आशा नहीं की जा सकती। जब तक प्रदाह के प्रतिकार तथा कामेन्द्रियों के विश्राम का प्रवन्ध न किया जाए।

प्रदाह जनित स्वप्नदोष संख्या में अधिक प्रायः स्वप्न तथा उत्तेजना रहित अथवा अपूर्ण उत्तेजना मुक्त होते हैं। वीर्य की मात्रा थोड़ी तथा वस्त्र को कड़ा नहीं करती अगली सुबह मनुष्य थका हुआ तथा खिन्न उठता है। उसको भारीपन तथा गलानि होती है। ऐसे स्वप्नदोष सप्ताह में एक या दो बार से लेकर प्रति रात्रि में एक या एक से अधिक बार तक हो सकता है। इसकी संख्या प्रदाह की मात्रा पर निर्भर है।

स्वप्नदोष जनित उपद्रव हस्तक्रियावत वह भी सारे शरीर को खोखला कर देते हैं, और व्यक्ति समस्त शक्तियों से वंचित हो जाता है। बाल, सुकुमार अवस्था में ही पक जाते हैं और समय से पूर्व ही बुढ़ापा आ जाता है। बालों का झड़ना इस

रोग का एक निर्णयात्मक लक्षण है अन्य लक्षणों के लिए हस्त-क्रिया का प्रकरण देखियेगा।

चिकित्सा—यदि, स्वप्नदोष कभी-कभी अर्थात दस दिन या अधिक अन्तर से होते हों स्वप्न दीर्घ तथा काम सम्बन्धी हों तथा पूर्ण उत्तेजना विद्यमान हो तो वह हानिकारक नहीं होते यदि ऐसा व्यक्ति पूर्ण युवा हो अपने शरीर में कोई कमी अनुभव न करता हो तो ये स्वप्नदोषों की उपेक्षा की जा सकती है। परन्तु कई नवयुवक ऐसे हैं जो अज्ञानता के कारण मास में एक आध बार स्वप्नदोष होने से भी व्याकुल हो उठते हैं किसी सहपाठो अथवा पुस्तक द्वारा अंकित निराधार संस्कारों के कारण वह इस कोटि के स्वप्न दोषों को भी अनिष्टकारी मान बैठते हैं।

परिणाम यह होता है कि युवक अपनी गणना रोगियों में करने लगता है और किसी चिकित्सक की सम्मति लेता है कुछ एक चिकित्सकों को छोड़कर जो वस्तुतः ऐसे रोगियों का सफल परिचार कर सकते हैं शेष सब वीर्यवर्धक तथा बाजीकरण (Aphordisiac) औषधियों के पक्ष में होते हैं क्योंकि उनके विचार में, स्वप्नदोषों का कारण बलक्षय तथा वीर्य की तरलता होती है। उन्हें स्वयं ही विदित नहीं होता कि थोड़े होने वाले स्वप्नदोष यौवन के सूचक हैं अयुक्त कि चिकित्सा से स्वप्नदोष अधिक होने लगते हैं। स्वस्थावस्था में शुक्र की बाढ तथा शक्ति की भरमार के कारण होते हैं अतः ऐसी अवस्था में जननेन्द्रियों की उग्रता को शामक औषधियों द्वारा बन्द करना चाहिए। न कि तीक्षण और तीव्र द्रव्यों द्वारा। प्रथम तो किसी औषधि की आवश्यकता ही नहीं होती और मनोरथ केवल आहार और

विहार को नियमित कर लेने से ही सिद्ध हो जाता है। परन्तु ज्योंही स्वप्नदोष प्रबल होते हुए प्रतीत हों तो रति केन्द्रों को चैन देने के लिए कुछ दिनों के लिए सादक द्रव्यों का प्रयोग करना चाहिए। इस प्रकार प्रदाह शाँत हो जाता है और रोग बढ़ने नहीं पाता

यह कथन उन स्वप्नदोषों के विषय में है जो हानि रहित है जो अल्प मात्रा में होते हैं और जिनका स्वास्थ पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता। इसके विपरीत वह स्वप्नदोष हैं जो अधिक होते हैं, और एक ही रात्रि में अनेक बार हो जाते हैं। ऐसी अवस्था में प्रदाह का विवरण अति आवश्यक है। इसके निर्वासन के निमित वह सब युक्तियाँ जिनका निरूपण हस्तक्रिया के अध्याय में किया जा चुका है उपयोगी हैं। उनमें उष्ण कटिस्नान (Hot Hipbath) तथा सादक द्रव्यों का सेवन सम्मिलित है। इस कार्य में विविध क्रिमिपन (Antiseptic) द्रव्यों की उत्तर वक्षित (Urethral Irrigation) भी लाभप्रद है।

प्रदाह को दूर होने और कामतन्तुओं को यथेष्ट विश्राम मिलने के पश्चात शुक्रको गाढ़ा करने वाली ऐसी औषधियों और आहार का प्रयोग करना चाहिए जो पूर्व नष्ट प्रदाह को भी उभरने न दें।

शुक्र की वृद्धि तथा गाढ़ेपन के बाद नपुंसकता के विवरण में दर्शायी विधि अनुसार शनैः २ अंगों को शक्तिशाली बनाना चाहिए। और तब कहीं प्रबल स्वप्नदोष भी शाँत हुए कहे जा सकते हैं। क्योंकि इस प्रणाली के अनुसार बहुत ही कम चिकित्सक कार्य करते हैं अतः उनका प्रयास निष्फल होता है और अन्त में रोगी को मिथ्या विश्वास हो जाता है कि उसका रोग असाध्य है।

कुछ चिकित्सक जब रोगी को रोग मुक्त नहीं कर सकते तो उसको विवाह का आदेश देते हैं। परन्तु पत्नी ग्रहण वास्तविक चिकित्सा नहीं। पति रूप में स्खलन तो विद्यमान रहता है परन्तु विधि में अन्तर आ जाता है। विवाह से पूर्व वह अनिच्छा पूर्वक (Involuntarily) स्वप्नावस्था में विचरते हैं। परन्तु विवाह के बाद रति क्रिया द्वारा स्वयं कर दिये जाते हैं। इसमें सन्देह नहीं कि तब वह स्वप्नदोष नहीं कहलाते। ज्योंही मनुष्य कुछ समय के लिए संयम का पालन करता है या अपनी सहचरी से कुछ काल के लिए पृथक होता है तो उसकी प्रियतमा उसको स्वप्नदोष में न केवल दर्शन प्रत्युत चुम्बन व आलिंगन तक का आनन्द प्रदान कर स्वप्न दोषों को पुनः जाग्रत कर देती है और मनुष्य में पहले से अधिक स्वप्नदोष होने लगते हैं। ऐसी दशा में विवाह एक अन्याय है। प्रदाह युक्त जननेन्द्रियाँ अधिक समय तक रतिश्रम को सहन नहीं कर सकतीं। अतः कामतन्तु शीघ्र ही शिथिल हो जाते हैं और इस प्रकार शक्ति का पतन होकर नपुंसकता आ दबाती है। बस कोई युवक यदि अधिक मात्रा में स्वप्नदोषों द्वारा पीड़ित रहा हो या अब भी हो तो वह स्वप्न में भी विवाह का विचार न करे, जब तक उस के प्रदाह का निवारण, वीर्य का अणीकरण तथा शरीर को पुष्टि न हो जाये। और अन्त में प्रमाणित चिकित्सक द्वारा विवाह के सर्वथा योग्य घोषित न हो जाये।

गत पृष्ठों पर यह सम्मति दी गई है कि यदि स्वप्नदोष यथेष्ट अवधि के बाद होते हों तो उनसे डरने की आवश्यकता नहीं। परन्तु यह तभी ठीक है जब दोष दीर्घ स्वप्नों तथा उत्तेजना से युक्त हों तथा मनुष्य अपने में किसी निर्बलता का अनुभव न करता हो। लेकिन यदि लम्बे स्वप्न तथा शिशन का

प्रहर्षण न हो, यदि श्रम और क्लांति का अनुभव होता हो और ऐसा प्रतीत होता हो कि सारी शक्ति निचुड़ चुकी है; वीर्य पतला तथा वस्त्र पर कठोर चिन्ह बनाने में असमर्थ हो तो उनसे अचेत रहना ठीक नहीं चाहे वह कितनी ही देर बाद क्यों न हों ऐसी अवस्थाओं में अलबत्ता शक्ति की बाहुल्यता के कारण नहीं किन्तु शुक्र की कमी के कारण होतीं है क्योंकि अंड (Testicles) शक्तिहीन होने के कारण शुक्र को उत्पन्न नहीं करते। यह अवस्था नपुंसकता का प्रतिरूप है। चिकित्सा द्वारा ऐसी दशा का प्रतिशोध करना चाहिए। निर्बलता को किसी अन्य कारण से सम्बन्ध कर स्वप्नदोषों की ओर ध्यान केवल इस कारण न देना कि वह देर बाद होते हैं बुद्धिमता नहीं।

स्वप्नदोष के लिए आयुर्वेदिक तथा यूनानी पद्धतियों के अनुभूत योग लिखने से पूर्व कुछ प्रतिरोधक उपायों का निर्देश करेंगे जिनकी सहायता से मलाशय तथा मूत्राशय के दबाव को रोका जा सकता है, प्रदाह की शांति हो सकती है और फिर स्वप्नदोष कम हो सकते हैं। चिकित्सा काल में इन प्रतिबन्धों का पालन भी आवश्यक है अन्यथा केवल औषधियों द्वारा पूर्ण लाभ की प्राप्ति कठिन है।

पीठ के बल सीधे न सोवें। रात्रि के समय दूध का पीना वर्जित है सांयकाल का भोजन शीघ्र खा लें अर्थात सोने से कम से कम तीन घण्टे पूर्व। उत्तेजक तथा प्रदाहजनक आहार यथा मांस अण्डे शराब तथा मसाले व तीक्ष्ण द्रव्यों का सेवन निषिद्ध है। चाय, पान, दही का सेवन त्याज्य है। खटाई तथा तेल का प्रयोग हानिकारक है। अति मात्रा में खाना (Overeating) उचित नहीं। विशेषकर सांयकाल के समय भूख से कम खाना चाहिए। फल तथा वनस्पतियों का प्रयोग यथेष्ट करें। भोजन

चबाकर करें। जल दिन में कई बार परन्तु थोड़ा २ और घूंट २ पियें रात्रि के भोजन के समय तथा उसके पश्चात जल-पान परिमित रखें। सोने से तत्काल पूर्व मूत्र त्यागें। प्रातः शीघ्र उठें क्योंकि स्वप्नदोष प्रायः रात्रि के पिछले पहर में ही होते हैं। विषय वासना सम्बन्धी विचारों तथा व्यवहारों से पृथक रहें। अधिक साइकिल चलाना, तेज दौड़ना, घोड़े की सवारी बैठकों का निकालना हानिकर है। शिश्न को प्रति जल तथा साबुन से स्वच्छ करें। मधु आंवला, तथा शिलाजीत का प्रयोग हितकर है। व्यायाम अत्यन्त उपयोगी है। आरम्भ में हल्का हो और फिर बढ़ाकर शनैः २ कठोर व्यायाम तक ले जावें। प्रातःकाल प्राणायाम युक्त दूर तक भ्रमण करें। शीर्षासन द्वारा लाभ होता है। इसका अभ्यास में किसी दीवार के सहारे खड़े हो सकते हैं और फिर बिना किसी आधार के शीर्षासनकी समाप्ति पर सहसा पैरों पर खड़े न हो जावें परन्तु प्रथम कुछ मिन्टों तक तकिए के सहारे लेट जायें और फिर शनैः २ उठ खड़े हों।

स्वप्नदोष नाशक अनुभूत औषधियां

सुगम योग

विद्वान वैद्यों और हकीमों द्वारा परीक्षित

(1) आमला और गिलोय के समभाग स्वरस में दानों के बराबर मधु मिलाकर सेवन करावें। मात्रा २ तोले सुबह तथा शाम। (2) हल्दी का स्वरस भी शहद के साथ सेवन कराने से लाभ होता है। (3) सहदेई की जड को गौ दूध के साथ पीसकर सेवन कराने से बहुत ज्यादा लाभ होता है। (4) त्रिफला एवं कबाब चीनी के चूर्ण

को मधु के साथ सेवन कराने से भी आशातीत फल होता है। कौंच के बीज को पानी में भिगोकर छिलका उतारकर चूर्ण बना, मधु के साथ सेवन करावें। उक्त प्रकार इमली के बीज का चूर्ण बनाकर मधु अथवा आमले के स्वरस के साथ सेवन कराना लाभप्रद है। शुद्ध शिलाजीत को मधु के साथ सेवन कराने से भी फायदा होता है। प्रवाल पिष्टी १ रत्ती और वंग भस्म एक रत्ती मिलाकर दो मात्रा दवा तैयार कर दोनों शाम मधु अथवा मक्खन के साथ सेवन करावें। केवल त्रिवंग भस्म को भी मधु के साथ सेवन कराने से लाभ होता है। उक्त दवाओं के अलावा नारिकेलासव, कामदेव चूर्ण, शुक्र मातृका वटी, चन्द्रप्रभा वटी, मकरध्वज वटी, बृहत बंगेश्वर रस, पूर्ण-चन्द्र रस और बसन्त कुसुमाकर रस आदि औषधियों का प्रयोग रामबाण जैसा सफल सिद्ध होता है।

गोखरू, तालमखाने, शतावर, कौंच के बीज (छिले हुए) और खिरेंटी के बीज—इन सबको अलग-अलग कूट-पीस और छान लीजिये और अलग-अलग तोलकर साठ-साठ ग्राम मिला लीजिए। चूर्ण के वजन से आधी यानी १५० ग्राम मिश्री कूट कर मिला दीजिए।

प्रातः सायं ६-६ ग्राम यह चूर्ण खाकर ऊपर से धारोष्ण दूध पीने से शुक्रमेह, शीघ्रपतन, स्वप्नमेह—स्वप्नदोष धातुक्षीणता नष्ट होकर २१ दिन में ही अपूर्व चमत्कार दिखाई देने लगता है और खूब बल-वीर्य बढ़ता है। यदि, कोई चार महीने तक लगातार सेवन कर ले तो धातु सम्बन्धी रोगों की जड़ नष्ट हो जाती है।

असगंध नागौरी, काली मूसली और तालमखाने के बीज

६०-६० ग्राम। सबको कूट पीसकर कपड़छान कर लीजिये। मात्रा ३ ग्राम—सवेरे शाम। अनुपान मिश्री मिला हुआ गरम दूध। इसके लगातार खाने से बल वीर्य बढ़ेगा और स्वप्नदोष दूर होगा।

(12) स्वर्ण बंग, प्रवाल भस्म और अभ्रक भस्म १२-१२ ग्राम, शुद्ध शिलाजीत ४८ ग्राम—इन सबको बकरी के दूध में तीन दिन तक खरल कीजिए और मूंग समान गोलियाँ बना लीजिए।

सवेरे शाम एक एक गोली खा कर, ऊपर से मिश्री मिला गरम दूध पीने से स्वप्नदोष, प्रमेह, धातु रोग एवं अन्य वीर्य-विकार नष्ट होकर मैथुन शक्ति बढ़ती है।

(13) त्रिफले का काढ़ा या जौ का काढ़ा रात को बनाकर रख लीजिए। सवेरे पी लीजिए। जौ के काढ़े में थोड़ा शहद मिला लेना चाहिए। इन काढ़ों से स्वप्नदोष जाता रहता है।

(14) शुद्ध शिलाजीत चार रत्ती, लोह भस्म २ रत्ती—इनको ३ ग्राम शहद मिलाकर सवेरे शाम चाटिए और २ घण्टे बाद शर्बत नीलोफर, शीतल जल मिलाकर पीजिए। इससे पित्त शान्त होकर प्रमेह या स्वप्नदोष को आराम हो जाता है।

(15) ३ ग्राम हरड़ का चूर्ण १२ ग्राम शहद में मिलाकर सवेरे-शाम चाटने से प्रमेह तथा स्वप्नदोष नष्ट हो जाता है।

(16) मुलहठी २ ग्राम, अनार के फूल ४ ग्राम, काछू ३ ग्राम, गुलाब के फूल २ ग्राम और संभालू के बीज ५ ग्राम—पीसकर रख लीजिए। सवेरे शाम ३-३ माशा दवा खाकर ऊपर से ताजा जल पीने से प्रमेह या स्वप्नदोष के रोग मिट जाते हैं।

गिलोय का सत्त, शुद्ध शिलाजीत, तबाशीर, इलायची, मुलहठी, तालमखाने और पाषाण भेद—१२-१२ ग्राम, चाँदी के वर्क ६ ग्राम, सोने के वर्क ३ ग्राम, बंग भस्म १२ ग्राम, मुर्गी के

अण्डों के छिलकों की भस्म ६ ग्राम, फौलाद भस्म ४ ग्राम, कूंजे की मिश्री सारे वजन के बराबर लेकर कूट पीस छानकर चूर्ण बना लीजिए। मात्रा ६ ग्राम सवेरे शाम एक-एक मात्रा खाकर, मिश्री मिलाकर बकरी का दूध पीने से सात, इक्कीस या चालीस दिन में स्वप्नदोष आदि सारे वीर्य रोग नष्ट हो जाते हैं।

कतीरा गोंद १८० ग्राम लेकर घी में तल लीजिए शुद्ध देशी घी में तल लीजिए। फिर इसे पीसकर इसमें ईसबगोल की भूसी २४ ग्राम और तबाशीर १२ ग्राम मिला दीजिए। इसकी मात्रा १८ ग्राम की है। एक मात्रा खाकर ऊपर से गाय का दूध पीने से स्वप्नदोष को आराम हो जाता है। यह दवा कब्ज को भी दूर करती है।

स्वर्णबंग २ रत्ती, लौहभस्म आधी रत्ती, मकरध्वज आधी रत्ती, अभ्रकभस्म आधी रत्ती, शतावर दो रत्ती और सफेद मूसली १ रत्ती—इन सबको मिला लीजिये। यह एक मात्रा है। सवेरे शाम ऐसी एक-एक मात्रा शहद में मिलाकर चाटने से स्वप्नदोष आदि रोग नष्ट हो जाते हैं।

बंगभस्म ६ ग्राम, मूंगाभस्म ६ ग्राम, सेलखड़ी ६ ग्राम, इलायची के बीज ३ ग्राम और बंसलोचन ६ ग्राम—सबको पीस छानकर रख लीजिए।

मात्रा—३ ग्राम।

अनुपान—गाय का धारोष्ण दूध।

समय—सवेरे-शाम।

इसका सेवन करने से सोजाक, प्रमेह, स्वप्नदोष, पतली धातु और शीघ्र वीर्य पतन आदि रोग निश्चय ही नष्ट होते हैं,

यह नुस्खा हमारे एक मित्र हकीम का है। जो कि अनेक बार का परीक्षित है और जो कभी भी असफल नहीं हुआ।

एक रत्ती बंगभस्म में एक या दो चावल रस सिंदूर मिला कर खूब घाटकर और शहद में मिलाकर चाटिए। ऊपर से धारोष्ण दूध पीजिए। इसके प्रयोग से प्रमेहादि रोग निश्चय ही नष्ट होते हैं।

बंगभस्म, छोटी इलायची और बंसलोचन समान-समान लेकर शहद के साथ घोटिए और २-२ रत्ती की गोलियाँ बना लीजिए। प्रातःसायं एक-एक या दो-दो गोली खाकर ऊपर से धारोष्ण दूध पीजिए। इससे प्रमेह आदि निश्चय ही नष्ट हो जाते हैं।

बंगभस्म और अभ्रक भस्म मिलाकर एक या दो रत्ती प्रमाण ६ ग्राम शहद में मिलाकर चाटने से स्वप्नदोष रोग निश्चय ही जाता रहता है।

शतावर, मूसली, बिदारीकन्द, सालम मिश्री, बंसलोचन, गोखरू, और छोटी इलायची के बीज—इन सब दवाओं को कूट पीसकर रख लीजिए। इसमें से तीन या छः ग्राम चूरण दुगनी मिश्री मिलाकर खाने से स्वप्नदोष के रोग को आराम हो जाता है।

मेहान्तक रस

स्वप्नदोष की एक अनुपम औषधि—

अभ्रकभस्म एक भाग, सीसाभस्म तीन भाग, बंसलोचन चार भाग लेकर शतावर का रस डालकर खूब खरल कीजिए और रत्ती रत्ती भर की गोलियाँ बना लीजिए। इस रस को उचित अनुपान के साथ सेवन करने से प्रमेह और स्वप्न दोष को आराम हो जाता है।

मात्रा—१ से ३ गोली तक।

तिब्ब-ए-युनानी का स्वप्नदोष के लिए एक शानदार नुस्खा

अक्सीर-ए-जिरयान

द्रव्य और निर्माण विधि—

सफेद मूसली ४८ ग्राम, बहमन ४८ ग्राम और ईसबगोल की भूसी २४० ग्राम। मूसली और बहमन को पीसकर छानकर, उन में ईसबगोल की भूसी बिना कूटे ही मिला दीजिए।

इसमें से ६ ग्राम चूर्ण बराबर की मिश्री मिलाकर, नित्य खाइये और ऊपर से गाय का थोड़ा सा दूध पी लीजिए। इस नुस्खे से २१ दिन में ही अपूर्व चमत्कार दिखाई देता है। प्रमेह या वीर्य पतन रोग नष्ट करने में बहुत ही उत्तम नुस्खा है।

गाय के आधा किलो दूध में तीन छुहारे और २४ या ३६ ग्राम मिश्री डालकर पकाइये। जब आधा दूध रह जाये तो छुहारों की गुठलियां निकाल कर फेंक दीजिये फिर छुहारे खाकर दूध पी लीजिए। इस दूध के लगातार कुछ दिन पीने से स्वप्नदोष आदि धातु रोग निश्चय ही नष्ट हो जाते हैं और खूब बल वीर्य बढ़ता है। पर यह नुस्खा जाड़ें में काम देता है।

कीकर की मसीहाई

स्वप्नदोष की अक्सीर दवा

बबूल के नर्म पत्ते और नर्म कलियाँ लाकर छाया में सुखा लीजिए और पीस लीजिए। फिर इस चूर्ण के बराबर की पिसी हुई मिश्री मिलाकर रख लीजिए। सवेरे शाम ६ ग्राम चूर्ण

खाकर ताजा जल पीने से समस्त प्रमेह और स्वप्नदोष नष्ट हो जाते हैं। परीक्षित है।

आंवला की मसीही

प्रमेह जिरयान या वीर्य पतन रोग नष्ट करने के लिए एक बहुत ही उत्तम नुस्खा

६ ग्राम सूखे आंवलों का चूर्ण, ६ मासा मिश्री मिलाकर लगातार महीने दो महीने खाने से प्रमेह और स्वप्नदोष रोग आराम हो जाते हैं।

शीतल चीनी का पिसा छना चूर्ण रख लीजिए। रोज रात को, सोते समय, दो ग्राम चूर्ण खाकर थोड़ा ताजा पानी पी लिया करें। रात में पेशाब को हाजत होती हो, बिना आलस्य पेशाब कर आना चाहिए। इस उपाय से स्वप्नदोष नहीं होता है।

चोप चीनी का पिसा छना चूर्ण १२ ग्राम, मिश्री १२ ग्राम, शुद्ध देशी घी १२ ग्राम—तीनों को मिलाकर नित्य सवेरे ही चीनी मिलाकर खाने से स्वप्नदोष को आराम हो जाता है।

गोखरू, सूखे आंवले और गिलोय इन तीनों को बराबर-बराबर लेकर महीन पीसकर छान लीजिए। इसमें से दो ग्राम चूर्ण देशी घी और चीनी में मिलाकर खाने से स्वप्नदोष का रोग दूर हो जाता है।

तोहफा-ए-जवानी (जदीद)

स्वप्नदोष, धातु विकार, शकतारल्य आदि की अद्भुत औषधि

द्रव्य तथा निर्माण विधि—

सफेद मूसली, कौंच के बीजों की गिरी, शतावर सूखे आँवले और चीनी—इन पाँचों को चौबीस-चौबीस ग्राम लेकर पीस तथा छान लीजिए।

क्योंकि यह चूर्ण १२० ग्राम तैयार होगा। इस लिए इस का चौथाई भाग गिलोय का सत इसमें पीसकर मिला दीजिए।

मात्रा—इस चूर्ण की मात्रा तीन ग्राम से छः ग्राम तक है। एक मात्रा खाकर ऊपर से २५० ग्राम गो दुग्ध पीने से स्वप्नदोष रोग निश्चय ही चला जाता है। कई बार परीक्षा की है। पर इस रोग वाले को कुछ नियम भी पालन करने होते हैं। कई बार बिना नियम के पालन से रोग को बिल्कुल फायदा नहीं होता। सबसे पहली बात तो यह है कि इसकी पैदाइश के कारणों को त्याग देना चाहिए।

नोट—सवेरे ही पलंग से उठकर जितना भी साफ बासी जल पी सकें, पीजिये। फिर ड़ेढ़ किलो का पानी का लोटा लेकर पाखाने जाइये। जब आबदस्त ले लीजिए, तब बचे हुए पानी को पतली धार से लिंगेन्द्रिय को जड़ पर डालिये। रात को सोते समय हाथ पाँव और मुख को शीतल जल से धो ल। तब पलंग पर कदम रखिए।

भोजन के बाद हर रोज एक या दो पके हुए केले की फलियाँ खा लीजिए। या सवेरे ही केले की दो फलियों में शहद मिलाकर खा लें। इस उपाय से स्वप्नदोष रोग और वीर्यविकार नष्ट होकर वीर्य बढ़ता है और उसका गिरना व बहना बन्द हो जाता है।

नोट—पका केला धातु रोग की उत्तम दवा है यह नुस्खा मेरा परीक्षित है।

मुलेठी २५० ग्राम लाकर महीन कूट पीस लीजिए तथा

छान लीजिए। इसमें से २ ग्राम चूर्ण १२ तोला घी और ६ ग्राम शहद में मिलाकर सवेरे ही चाटने और ऊपर से २५० ग्राम धारोष्ण दूध पीने से स्वप्न दोष का रोग मिट जाता है।

शर्बत गुलाब या शर्बत खस या शर्बत संदल में आधी रत्ती से दो रत्ती तक मोती भस्म मिलाकर चाटने से भीतरी गरमी शान्त होकर स्वप्न दोष के रोग को आराम हो जाता है।

एक तोला गुलकन्द में दो चावल भर हल्दी द्वारा फूंकी हुई उत्तम बंगभस्म मिलाकर सवेरे ही सात दिन तक खाईये पीजिए। सात दिन के बाद सात दिन तक फिर इसी तरह से खाइये। इस सात दिनों में ऊपर से पानी पीनें की बजाय गाय का धारोष्ण दूध पीजिए। परमात्मा की दया से १४ दिन में स्वप्न दोष का रोग बिल्कुल नष्ट हो जाएगा।

यह नुस्खा गर्म मिजाज वालों के लिए गर्मी के मौसम में प्रयोग करने के लिए है।

नित्य सवेरे शाम तीन से पाँच गुलाब के ताजा फूल, मिश्री के साथ खा कर ऊपर से गाय का ताजा दूध पीनें से स्वप्नदोष का रोग मिट जाता है।

ताजा आँवलों का रस १२ ग्राम, ताजा नीम गिलोय का रस १२ ग्राम, मिश्री १२ ग्राम और शुद्ध शिलाजीत दो रत्ती— इन सबको मिलाकर पीने से, प्रातः सायं पीने से ४० दिन में स्वप्नदोष भाग जाता है।

यह नुस्खा केवल गर्मियों के मौसम में लेना चाहिए जाड़े या बरसात के मौसम में इसका प्रयोग उचित नहीं है। १२ ग्राम कतीरा गोंद, रोज रात्रि के समय १२५ ग्राम पानी में भिगो.

दीजिए। गोंद प्रातः फूल जायेगा। उसमें २४ ग्राम मिश्री मिलाकर पी जाइये। इस योग से १०-१५ दिन में स्वप्नदोष को आराम हो जाता है।

धनियाँ ६ ग्राम, सफेद चन्दन का बुरादा ६ ग्राम, सूखे आंवले ६ ग्राम, ताजा गिलोय ६ ग्राम—इन सब को अधकचरा करके एक कोरी हाण्डी में डालकर १२५ ग्राम पानी में भिगो दीजिए। प्रातः उसका पानी निथार कर पी जाइये। वह स्वप्नदोष, जो वीर्य पर, गरमी पहुंचने के कारण होता है केवल २१ दिन में चला जाता है।

यह नुस्खा केवल गरम मिजाज रोगियों को गर्मी के मौसम में प्रयोग करना चाहिए।

१२ ग्राम बबूल का गोंद रोज रात को आध पाव जल में भिगो दीजिए। प्रातः जल छानकर उसमें २४ ग्राम मिश्री मिला दीजिए और पी जाइये। भगवद् कृपा से २१ दिन में स्वप्नदोष का रोग जाता रहेगा।

इमली की मसीहाई धातु पुष्ट गोलियां

स्वप्नदोष को दूर करने के लिए एक सस्ता व उत्तम योग

द्रव्य तथा निर्माण विधि—

इमली के बीज १२५ ग्राम लेकर गो-दुग्ध में भिगो दीजिए। फूलने पर उनके छिलके पृथक कर दीजिए। पीछे उन छिली हुई मींगियों को तोल कर खरल में डालिये और उनके बराबर वजन की मिश्री भी पीसकर डाल दीजिये और भलीभांति घोटिये। खूब कुट जाने पर जगली बेर के बराबर गोलियां बना

लीजिये। प्रातः सायं एक एक गोली ताजा पानी के साथ खा लेने से स्वप्नदोष जाता रहता है।

गरम और भारी पदार्थों से परहेज रखना अत्यावश्यक है।

कागजी बादाम की मींगी एक नग, मिश्री ३ ग्राम, उत्तम लूनी घी ३ ग्राम और गिलोय का सत्त ३ ग्राम। इन सबको ६ ग्राम शहद में मिलाकर सवेरे शाम चाटने से केवल आठ दिन में स्वप्नदोष निश्चय ही नष्ट हो जाता है।

सफूफ-ए-एहतलाम

सब तरह के प्रमेह, स्वप्नदोष, धातु विकार
मूत्र रोग, वीर्य का जल्दी स्खलित-
होना यानी शुक्रतारल्य आदि
रोगों की एक अद्भुत
औषधि

द्रव्य तथा निर्माण विधि—

गिलोय का सत्त	१२ ग्राम
सफेद मूसली	२४ "
दरियाई तालमखाना	३६ "
मखाने की ठुर्री	४८ "
मिश्री पिसी हुई	६० "

सबको कूट-पीस कर कपड़छान कर लीजिये, बस दवा तैयार है।

सेवन विधि—

इसमें से ६-६ ग्राम दवा, प्रातः सायं मिश्री मिले गाय के दूध के साथ खाने से सब तरह के प्रमेह, स्वप्नदोष, धातु-विकार,

मूत्र रोग, वीर्य का जल्दी स्खलित होना यानी शुक्रतारल्य आदि रोग निश्चय ही नष्ट होते हैं।

धातु पुष्ट चूर्ण

शुक्रमेह तथा स्वप्नदोष के लिये एक अनुपम औषधि

द्रव्य तथा निर्माण विधि—

शतावर २५० ग्राम, कौंच की गिरी २५० ग्राम, तालमखाना २५० ग्राम, गोखरू १२५ ग्राम, केसर ३ ग्राम, जायफल ३ ग्राम और मिश्री ७५० ग्राम सबको कूट-पीस कर छान लीजिये। बस चूर्ण तैयार है।

सेवन विधि—

इसमें से १२-१२ ग्राम चूर्ण प्रातः सायं खाकर ऊपर से गाय का धारोष्ण दूध पीने से स्वप्नदोष और प्रमेह आदि विकार नष्ट होते हैं। एक अत्युत्तम योग है।

CHAPTER IV

चौथा अध्याय

स्तम्भन

पुरुष के लिए स्तम्भन (रुकावट) अत्यन्त आवश्यक है। जो लोग शीघ्र स्खलित हो जाते हैं उन्हें स्त्री से बहुत लज्जित होना पड़ता है। पुरुष के समय से पूर्व स्खलित होने से स्त्री को न केवल आनन्द ही प्राप्त होता है बल्कि प्रायः वह विभिन्न रोगों से ग्रस्त हो जाती हैं अर्थात पुरुष का वीर्य शीघ्र स्खलित हो जाता है और स्त्री का कुछ नहीं बनता। गर्भाशय के रोगों से ग्रस्त जितनी स्त्रियां इलाज के लिए डाक्टरों के पास आती है उनमें (७०) सत्तर प्रतिशत असम्पूर्ण सम्भोग के कारण बीमार होती हैं।

पुरुष के शीघ्र स्खलित होने के कारण स्त्री न केवल गर्भाशय के रोगों से ग्रस्त हो जाती हैं। बल्कि कई अन्य रोग भी लग जाते हैं। इसका कारण यह है कि पुरुष अपना काम निकाल लेता है, परन्तु स्त्री के चित्त में कामोत्तेजना होती है। पुरुष के स्खलन के बाद उसकी कामोत्तेजना वैसी ही बनी रहती है। जिसका स्वाभाविक फल यह होता है कि रात भर नींद नहीं आती और वह विभिन्न रोगों से ग्रस्त हो जाती हैं। जब यह अवस्था उत्पन्न हो स्त्री अपने पति से निराश हो जाती है और घृणा करने लगती है। इस सम्बन्ध में सेक्सुअल क्वेश्चन (Sexual Question) नामक विपरीत पुस्तक में लिखा है कि जो स्त्री अपने पति से सन्तुष्ट न हो वह चाहे मुंह से कुछ कहे या न कहे, परन्तु मन में अवश्य दुःखी होती हैं और पति से घृणा करती हैं।

यदि इस पुस्तक के निर्देशों का पालन किया जाए तो विशेषतः उन नियमों का जिनका उल्लेख इस पुस्तक के अध्याय 'संसर्ग' में किया गया है तो दुर्बल पुरुष भी बलवती पत्नी को सन्तुष्ट कर सकता है। याद रखना चाहिए कि यदि पत्नी अपने पति से सन्तुष्ट हो तो वह कभी किसी की ओर निगाह उठाकर नहीं देखती। उन नियमों का, जो यौन शास्त्र और विज्ञान पर निर्धारित है, पालन करने से आपको गृहस्थ जीवन का सच्चा सुख प्राप्त हो सकता है। स्त्री सन्तुष्ट रहेगी और हृदय तथा प्राणों से प्रेम करेगी। आपके घर में सुख और आनन्द का साम्राज्य होगा।

विधाता ने प्रत्येक पुरुष को पुरुष पैदा किया है। हजारों, लाखों में शायद कोई एकाध पुरुष नपुंसक होता है वास्तव में यह रोग पुरुष के अपने ही मोल लिए हुए होते हैं।

डाक्टर विल्सन ने लिखा है कि बचपन की भूलों, दुष्कृत्यों के कारण शीघ्र पात आदि रोग उत्पन्न होते हैं। सैक्सुअल क्वेश्चन (Sexual Question) में लिखा है कि प्राय: लोग बचपन के कुकर्मों के कारण या तो पूर्णत: नपुंसक हो जाते हैं या उनकी इन्द्रियों में पूरी शक्ति नहीं रहती और कामोत्तेजना के समान इतनी कठोरता उत्पन्न नहीं होती जितनी दाम्पत्य सन्तुष्टि के लिए आवश्यक है। बहुत से नौजवान शीघ्रपात से ग्रस्त हो जाते हैं।

स्तम्भक आहार या औषधियाँ—

जो नौजवान असंयमों के कारण प्राकृतिक स्तम्भन से वंचित हैं। स्तम्भन पैदा करने वाली औषधियों की खोज में रहते हैं, जिनसे तात्कालिक उद्देश्य सिद्ध हो जाता है परन्तु भावी जीवन में घोर हानि उठानी पड़ती है तथा लाभ के स्थान पर क्षति प्राप्त होती है। क्योंकि स्तम्भन की बाजारी औषधियों में प्राय: अफीम, धतूरा या इसी प्रकार के दूसरे मादक द्रव्य होते हैं जिनके प्रभाव से वीर्य की नाली और वे नसें जिनका वीर्य से सम्बन्ध है, शुष्क हो जाती हैं ये औषधियाँ अत्यन्त खुश्क होती हैं। इसके प्रयोग से वीर्य सूख जाता है। अवश्य शिथिल और निस्तेज हो जाते हैं अन्त में पुरुषत्व शक्ति कम हो जाती है। प्राकृतिक स्तम्भन शक्ति प्राप्त करने के लिए सबसे पहले दुर्बलता का इलाज करायें। दुर्बलता दूर होने के पश्चात औषधियों के स्थान पर उचित आहार का प्रयोग करें।

पौरुशीय दुर्बलता के इलाज में औषधियों की अपेक्षा पौष्टिक आहार अधिक लाभ पहुंचाते हैं विशेषत: जब कि पुरुषत्व शक्ति की कमजोरी का कारण शारीरिक दुर्बलता और रक्त की कमी हो इस अवस्था में पौष्टिक आहारों से रक्त का उत्पा-

दन बढ़ जाता है और वीर्य प्रचुर परिमाण में पैदा होने लगता है शरीर का पालन भली प्रकार होता है शारीरिक दुर्बलता दूर हो जाती है और पुन्सत्व शक्ति में वृद्धि हो जाती है। परन्तु पौष्टिक आहार के सेवन से पहले आमाशय और अन्तड़ियों का ध्यान रखना आवश्यक है। दुर्बल व्यक्ति का आमाशय भी दुर्बल होता है। आहार भली प्रकार पचाने की क्षमता नहीं रखता और कब्ज की शिकायत रहती है, तो इस स्थिति में पौष्टिक आहार लाभ के स्थान पर हानि पहुंचाते हैं।

पौष्टिक आहार हमेशा आमाशय, अन्तड़ियों,गुर्दों पर मूत्राशय पर बोझ सिद्ध होते हैं। जो पौष्टिक आहार भली प्रकार पचा सकते हैं, उनके लिए नीचे कुछ नुस्खे और पुन्सत्व शक्ति बढ़ाने वाले आहार लिखे जाते हैं।

(लोहा सम्मिश्रण) गाजर, आम, केला, सेब, अंगूर अंजीर शलजम, शकरकन्द, सिंघाड़ा आदि पुन्सत्व शक्तिवर्धक आहार हैं। इसका प्रयोग अवश्य करना चाहिए। अति सम्भोग से शीघ्र पात के रोग लग जाते हैं इस लिए सबसे पहले इस बुरे व्यसन को तिलांजलि देनी चाहिए। चाहे कितने ही शक्ति वर्धक आहार और औषधियाँ खायें, अति सम्भोग करने वालों को लाभ नहीं पहुंच सकता। हल्का सा व्यायाम भी प्रतिदिन करें, व्यायाम से कच्चे और अतिरिक्त तरल द्रव्य शरीर से निकल जाते हैं जिससे वीर्य शीघ्रपात और वीर्य का पतला-पन दूर हो जाता है। इगलैन्ड से "नेचर" नामक पत्रिका प्रकाशित होती है उसमें एक लेख प्रकाशित हुआ था कि खुली हवा और सूर्य के प्रकाश में व्यायाम करने से सम्भोग शक्ति में वृद्धि हो

जाती है। परन्तु व्यायाम साधारण अथवा हल्का होना चाहिए अधिक व्यायाम हानि कारक है।

अधिक स्तम्भन स्वास्थ्य के लिए हानिप्रद है। तीन से सात मिनट तक ही पर्याप्त है। डा० फ्रैंकलिन ने लिखा है कि एक स्वस्थ मनुष्य का कम से कम तीन मिनट और अधिक से अधिक नौ या दस मिनट में निवृति होना प्राकृतिक स्थिति के अनुकूल है इससे न्यूनाधिक रोग है। जिसकी चिकित्सा करना आवश्यक है। स्तम्भन का सर्वोत्ताम उपाय यह है कि ससंर्ग के समय ऊपर का साँस धीरे लें और जब यह जाने कि अब समय निकट है तो जरा रुककर दो चार साँस जैसे ऊपर का ले और दो मिनट के लिए विलग हो जायें। तौलिए से साफ करें, इस अवधि में मार्दन जारी रखें, ताकि पत्नी की इच्छा वैसी ही लगी रहे स्त्री में इच्छा, पैदा करने के जो उपाय ससंर्ग के अध्याय में बताये गए हैं उनका प्रयोग किया जाये ताकि पत्नी शीघ्र स्खलित हों यौन शास्त्र के ग्रन्थों में लिखा है कि जब स्त्री के स्खलित होने के लक्षण प्रकट हो तो अपनी गति को तेज करके स्वयं भी उसके साथ स्खलित हो जाये। यह गर्भाधान के लिए उपयोगी है।

करवट के बल प्रवृत होने से स्तम्भन बढ़ता है। शीघ्रपात के रोगी इस उपाय का पालन करें। परन्तु ठीक पुरुष के लिए प्राकृतिक नियम, पुरुष ऊपर नारी नीचे का पालन ही श्रेयस्कर है समागम के समय शरीर को कठोर न करें। हाथ पाँव और शरीर को ढीला छोड़ देने से रुकावट बढ़ती है हकीम महमूद खां साहब देहलवी ने लिखा है कि पुरुष प्रकट रूप से पूरी अभिरुचि से प्रवृत्त हो परन्तु अपना ध्यान किसी और तरफ लगा लें।

अपने हाथ पैर आदि और सारे शरीर को ढीला और मुलायम रखे ताकि शीघ्र स्खलित न हो। जब समझे कि अब की गति से हो जायेगा तो जरा रुककर दो चार सांस ऊपर को जोर से लेकर धीरे २ छोड़े।

रीढ़ की हड्डी (पीठ) पर प्रतिदिन ठन्डा पानी डालना उपयोगी है। स्नान करते समय नल की धारा के नीचे कम से कम दस मिनट बैठे रात को गर्म पानी में तौलिया भिगोकर अन्डकोषों के नीचे गुदा तक सेंक करें। इस सम्बन्ध में डाक्टर मेरी स्टोप्स ने लिखा है कि पुरुषेन्द्रियाँ के आगे वाले चमड़े को पीछे हटाकर साबुन लगाकर ठन्डे पानी से धोना लाभदायक है कामवासना को भड़काने वाले पदार्थों का सेवन न करे अश्लील और नैतिकता से गिरी हुई किताबें पढ़ने से भाव भड़क उठते हैं और इन्द्रि विशेष में आन्दोलन उत्पन्न होता है। याद रखना चाहिये कि बार २ की स्फूर्ति या आन्दोलन से अवयव दुर्बल और सूक्ष्मग्राही हो जाते हैं जिसके कारण शीघ्रपात वीर्य का पतलापन और धातुक्षय आदि रोग लग जाते हैं।

शैखुर्रईश अलीसीना ने लिखा है पसीना लाने वाले पदार्थों गर्म हमाम और गर्म चीजों से बच रहे, शोक, विसाद, क्रोध, भय, थकान, भूख और रुग्न अवस्था में सम्भोग करने से शीघ्रपात की शिकायत पैदा होती है। इन्द्रिय विशेष के बालों की सफाई पुन्सत्व शक्ति के लिए उपयोगी है हकीमों ने दुर्बल पुरुषों के लिए इसे बहुत लाभदायक और पुन्सत्व शक्ति की उपयोगी चिकित्सा बताई है। अधिक दुर्बल व्यक्तियों के लिए तो चिकित्सकों ने प्रतिदिन उस्तरे से बाल साफ करने की सिफारिश की है जब पेशाब की हाजत हो तत्काल पेशाब समाप्त करें यह एक प्रकार का व्यायाम है जिससे नसों को शक्ति प्राप्त होती

है। जब पेशाब की हाजत न हो तो यह व्यायाम उस समय भी हो सकता है और वह इस प्रकार कि पहले नसों को भी खींचे और फिर छोड़ दे याद रहे कि मनुष्य को कोई विशेष रोग न हो। इस व्यायाम से निश्चय ही लाभ पहुंचता है। नसों को शक्ति प्राप्त होती है, वीर्य रोकने का अभ्यास हो जाता हैं और रुकावट बढ़ जाती है।

विचार शक्ति और सँकल्प शक्ति से बहुत लाभ पहुंचता है। हृदय से दुर्बलता का विचार निकाल दे विचार शक्ति प्रसिद्ध है। यदि एक व्यक्ति सदा अपने आपको दुर्बल समझें या अपनें आपको किसी रोग से ग्रस्त समझें और उसी का प्रभाव हृदय और दिमाग पर आच्छादित रखे तो यह अनिवार्य है कि वह मानसिक बीमारी किसी न किसी दिन शारीरिक रोग का रूप ग्रहण कर ले जिस प्रकार मनुष्य के लिए यह असम्भव है कि वह अश्लील विचार से मग्न रहकर बुराइयों से बचा रहे उसी प्रकार वह व्यक्ति जो सदा अपनें दिमाग की बीमारी का शिकार हो जाता है। हमें सदा अपने मन में सदा शरीर को ठीक बनाये रखनें का ध्यान रखना चाहिए। याद रखो, जैसा सँकल्प वैसा परिणाम।

जो लोग कुछ दुर्बल होते है वे अपने मन में असाधारण दुर्बलता का ध्यान जमाए रखते हैं। यदि वे संकल्प शक्ति और विचार के बल से इस बात का विश्वास कर लें कि वे किसी रोग से ग्रस्त नहीं तो निश्चय ही सारी दुर्बलता दूर हो जाती है। और अपनी जीवन संगिनी को सन्तुष्ट रख सकते हैं। संकल्प में इतनी शक्ति है कि जिस अवस्था का मनुष्य ध्यान में चिंतन करता है वह उसके शरीर में प्रकट होकर रहती है कुछ लोग भली प्रकार ठीक होते हैं परन्तु अकारण पुन्सत्व शक्ति

की कमी के सन्देह से ग्रस्त रहते हैं वास्तव में उनमें कोई दोष नहीं होता है। उनका यह विचार कि हम दुर्बल हैं, पत्नी को सन्तुष्ट नहीं कर सकते दुर्बलता का कारण होता है। उनके विचारों का प्रभाव इन्द्रिय विशेष की नसों पर पड़ता है। फल यह होता है कि वे औरत के अयोग्य हो जाते हैं जैसे कि एक व्यक्ति को नाला पार उतरना है। परन्तु वह किस विचार में है कि वह नाला पार उतरने को शक्ति नहीं रखता इस विचार के परिणाम स्वरूप उसकी टाँगों के पट्टों में वह उत्साह साहस और स्फूर्ति छलाँग मारकर नाला फांद जाने की पैदा नहीं हो सकती जिससे कि वह इसको फाद जाने में अपने आपको समर्थ समझता हो। मन और ध्यान से छलांग मारने के लिए अवयवों को हरकत में लाये।

भय और आतंक का प्रभाव भी पुन्सत्व शक्ति पर पड़ता है। आप स्वयं देखिये, जब आप क्रिया विशेष में प्रवृत होने वाले हों यदि एकाएक किसी के आने का भय पैदा हो तो कामोत्तेजना तत्काल समाप्त हो जाती है। सदा क्रोध में रहने वाले लोग बहुत कम मोटे होते हैं। क्रोध और शोक में रहने वाली औरतों के दूध कम होता है और कई बार सर्वथा सूख जाता है। वैद्य क्रोध की अवस्था में खाना खाने की आज्ञा नहीं देते। क्रोध की हालत में यदि मां बच्चे को अपना दूध पिलाये तो कई बार उसका प्रभाव बच्चे पर विष की भांति पड़ता है। प्रोफेसर लेंक आफ कोपन हेगन यूनीवर्सिटी और विख्यात फ्रांसीसी वैज्ञानिक डा० मारिस डी० फ्लोरी ने क्रोध के कारणों और मानवीय नाड़ि मण्डल पर उसके प्रभावों की जांच की है आप इस परिणाम पर पहुंचे हैं कि पुन्सत्व शक्ति का क्रोध के कारण मनुष्य का जीवन भी कम हो जाता है। प्रत्येक बार

जब हम क्रोध में आते हैं, हमारी शक्ति हमारे जोश अथवा उत्साह के अनुपात से कम हो जाती है। यदि हम थोड़ा २ भी क्रोध में आते हैं तो उसी अनुपात से हमारी शक्ति कम होती है यहाँ तक कि सर्वथा नष्ट हो जाती है।

डा॰हर्टन (Herrten) ने ब्रिटिश मेडिकल जनरल में लिखा है कि पीलिया प्राय: चिन्ता और विषाद के कारण होता है शोक चिन्ता और क्रोध करने वालों में वीर्य कम मात्रा में बनता है और पतला वीर्य उत्पन्न होता है जिसका परिणाम शीघ्रपात होता है, पुन्सत्वशक्ति बढाने के इच्छुक व्यक्तियों को शोक, दुर्बलता की छाया तक अपने पास नहीं आने देनी चाहिए। विचार शक्ति आपके शरीर पर अत्यन्त श्रेयष्कर प्रभाव डाल सकती है।

यह विख्यात है कि एक मौलवी साहब के चेले कभी-२ मौलवी साहव के कठोर व्यवहार से तंग आकर कुछ समय के लिए छुटकारा चाहते थे तो आपस में षडयन्त्र करके एक अदभुत चाल चलते। उनमें से एक चेला आता और सलाम करके ही मौलवी साहव से कहता है—मौलवो साहव ! कुशल तो है। आज आप कुछ उदास और क्षीण से दीख पड़ते हो। मौलवी साहव फरमाते हाँ भाई, रात नींद में कुछ कमी रह गई। दूसरा चेला आता है और बड़ चिन्तित ढंग से पूछता है मौलाना दुश्मनों की तबियत कुछ नासाज (बीमार) तो नहीं ? आंखें कुछ लाल मालूम होती हैं और चेहरे से भी ज्वर के से चिन्ह प्रकट होते हैं। मौलवी साहब उत्तर में कहते हैं—हाँ कुछ ज्वर सा अनुभव कर रहा हूं। तीसरा आकर इन शब्दों में चिन्ता प्रकट करता है—मौलवी साहब ! आज आप कुछ

अस्वस्थ से मालूम पड़ते हैं अब मौलवी साहब को भी विश्वास हो जाता है कि वह सचमुच बीमार हैं पाठशाला से उठते और सीधे मकान में जाकर बिछौने पर लेट जाते। नाड़ी देखी जाती तो उन्हें सचमुच ज्वर होता है।

यह बात केवल कहानी हो या सत्य घटना, परन्तु जो लोग मनोविज्ञान से थोड़ी बहुत अभि रुचि रखते हैं उन्हें यह स्वीकार करने में संकोच नहीं होगा कि यह घटना कोई असम्भव घटना नहीं। मनुष्य की मन स्थिति सीधे उनकी शारीरक स्थिति पर प्रभाव डालती है। यदि कोई चंगा भला व्यक्ति इस बहम में फँस जाये कि वह बीमार है तो उसका सचमुच बीमार हो जाना सम्भावना से बाहर नहीं और यदि इसके विपरीत कोई बीमार व्यक्ति यह विश्वास कर ले कि वह स्वस्थ हो तो यह भी अनहोनी बात नहीं कि वह सचमुच ही ठीक हो जाय। विचारों को अच्छी या बुरी शक्ति और उसके निर्माणात्मक या ध्वंसात्मक परिणामों से इन्कार नहीं किया जा सकता है।

शरीर का अपना कोई संकल्प या इरादा नहीं, कोई अभिमत कोई अधिकार नहीं मन (दिमाग) सारे शरीर का सम्राट है वह इस पर शासन करता है जब वह देखता है कि शरीर जिस मार्ग पर चल रहा है उसी मार्ग पर सामने एक मोटर आ रही है तो वह झट से एक तरफ हट जाने की आज्ञा देता है। शरीर हट जाता है और खतरे से बच निकलता है। हमारे हाथ, हमारे पांव, हमारी आँखें हमारा सिर प्रत्येक खतरे, प्रत्येक घटना के समय मन अथवा दिमाग की आज्ञा को तत्काल पालन करने के लिए तैयार रहता है। परन्तु यदि मन अपनी ड्यूटी

पर उपस्थित न हो नींद, नशे, तन्द्रा, या बेहोशी की अवस्था में हो तो उसके स्थान पर कोई शक्ति ऐसी नहीं होती जो हमारे शरीर को खतरे या घटना की सूचना दे सके। ऐसी अवस्था में शरीर न किसी आक्रमण से अपनी रक्षा कर सकता है न किसी खतरे से भाग सकता है उसके लिए जीवन और मृत्यु दोनों बराबर हैं।

अस्तु मन जिसे जीवन की धुरी कहना चाहिए जिस ढंग से अपने आस पास से प्रभावित होगा, जिस परिणाम निराशा या आपत्ति, हर्षोल्लास को स्वीकार करेगा। उसी ढंग और परिमाण से शारीरिक स्वास्थ पर अच्छा या बुरा प्रभाव पड़ेगा जिस व्यक्ति का मानसिक संतुलन ठीक न हो वह सदा चिन्ता और क्लेश में ग्रस्त रहता हो जो भविष्य के काल्पनिक कष्टों तथा आपत्तियों से भयभीत और अस्त व्यस्त रहता हो, उसने मानों जान बूझ कर अपनें शरीर में ऐसे कीटाणुओं को पलने पुसने की आज्ञा दे दी है कि जो उसे घुन की भाँति खाते रहेंगे। उसके स्वास्थ्य की कोई जमानत नहीं दी जा सकती। यदि उसे अपना स्वास्थ्य प्रिय है तो उसे अनिवार्य रूप से अपनी मन स्थिति में सुधार करना पड़ेगा।

यह प्रकट करनें के लिए कि विचार कैसे शरीर को प्रभावित करते हैं हम एक स्पष्ट उदाहरण प्रस्तुत करते हैं। हम में से प्रायः सभी इस सत्य से परिचित होंगे कि बेहोशी की अवस्था में (जो भय का ही रूप है) शारीरिक अवयवों पर कंपकपी आच्छादित हो जाती है। प्रयत्न करने पर भी मुँह से आवाज नहीं निकलती। मुँह का थूक सूख जाता है। मन परेशान और अस्त व्यस्त हो जाता है और चेहरे पर ठन्ड़े पसीने

की बूंदें प्रकट हो जाती हैं इस प्रकार भय रक्त संचालन, हृदय गति, अवयवों और भूख पर भी बहुत बुरा प्रभाव पड़ता है। भय हमारी इन्द्रियों को भी प्रभावित कर सकता है। देखने, सूँघने, सुनने और चखने की शक्तियाँ नष्ट हो जाती हैं। और कई स्थितियों में उनमें तीव्रता भी पैदा हो सकती है हमें काल्पनिक आवाजें सुनाई देती हैं। स्वादिष्ट से स्वादिष्ट आहार भी स्वादिष्ट अनुभव नहीं होते हैं।

मानवीय मस्तिष्क के स्वास्थ्य के लिए हानिकर स्थितियों में बहुत से अनुभव सम्मिलित हैं उनमें एक क्रोध है जो आमाशय की पाचक क्रिया पर बहुत बुरा प्रभाव डालता है और रक्त को पानी की तरह पतला कर देती है। उनमें एक भय है जो नाड़ीमन्डल अथवा शारीरिक अवयवों को विभिन्न क्रियाओं में बुरी तरह अव्यवस्था उत्पन्न कर देता है। चिन्ता, घृणा, ईर्ष्या, घबराहट, निराशा नाराजी, खेल विषाद आदि भय ही के विनाशकारी परिणाम हैं। वर्तमान युग का विख्यात रोग अवयवों की दुर्बलता केवल भय से पैदा होती है। इसलिए शोक भी शारीरिक स्वास्थ्य का बहुत बड़ा शत्रु है। बहुत से खाने पीने और व्यायाम करने के बावजूद स्वस्थता से वंचित हैं। केवल शोक (गम) ही ने उन्हें बीमार कर रक्खा है ऐसे उदाहरण देखने और सुनने में आए हैं कि शोक (गम) ने एक ही रात में सिर के बाल सफेद कर डाले। अनेक व्यक्ति केवल चिन्ता और शोक के कारण ही तपेदिक (क्षय रोग) जैसे भयंकर रोग से ग्रस्त हो जाते हैं ईर्ष्या भी दिमाग की स्वास्थ्य नाशक स्थितियों में शामिल है। यह असम्भव है कि ईर्ष्या करने वाले के चेहरे पर प्रसन्नता और प्रफुल्लता के चिन्ह नजर आयें किसी व्यक्ति का दिमाग जितना ईर्ष्यायुक्त होगा

उतना ही उसका चेहरा भ्रष्ट और कान्तिहीन होगा।

बहम और सहम (भय) का आपस में घनिष्ठ सम्बन्ध है और ये दोनों मनुष्य के स्वास्थ के बहुत बड़े शत्रु हैं। जो व्यक्ति बहम से ग्रस्त होगा, उसे किसी न किसी वस्तु का सहम (भय) प्रतिक्षण परेशान करता रहेगा। गरीबी का सहम, बीमारी का सहम, घटना का सहम, हानि और मृत्यु का सहम, अधिकतर उन लोगों के सिर पर सवार रहता है जिनका दिमाग जीवन की प्रकाशमय दिशाओं की उपेक्षा करके बहम के अन्धकार में भटकता रहें। वह व्यक्ति जिसने अपने आप पर बहम का प्रभुत्व स्वीकार कर लिया है आवश्यक है कि उसकी संकल्प शक्ति, और प्रतिरोध शक्ति दोनों बेकार होकर रह जायें। ऐसे व्यक्ति का बिना किसी वास्तविक कारण के बीमार हो जाना अपितु मर जाना भी आश्चर्य की बात न होगी। जिन दिनों रूस में काली प्लेग का रोग फैला तो हजारों व्यक्ति अपने आपको इस रोग से ग्रस्त समझकर मर गए। जब उनका डाक्टरी निरीक्षण हुआ तो पता चला कि प्लेग के कीटाणु उनके पास तक नहीं फटके। यह बहम और सहम ही का चमत्कार था कि असंख्य लोग बिना आई मौत मर गए।

डाक्टरों और वैद्यों को इस बात का बहुत अनुभव है कि उनके पास कई ऐसे रोगी आते रहते हैं जो वास्तव में किसी रोग से ग्रस्त नहीं होते। यह बहम कि वे बीमार हो गए हैं उन्हें सचमुच बीमार कर देता है। यदि उन्हें यह विश्वास दिलाने का प्रयत्न किया जाये कि वे बीमार नहीं चंगे भले हैं तो स्वीकार नहीं करेंगे। उन्हें कोई न कोई औषधि लेनी ही पड़ेगी जिसके बिना उनका रोग मुक्त होना कठिन होगा। एक डाक्टर ने जो अपने कार्य में बड़े सिद्ध हस्त हैं एक बार बताया – मैं

इस प्रकार के रोगियों को भी कोई न कोई औषधि अवश्य देता हूं चाहे सोडा बाईकार्ब की पुड़िया ही दूं या सादा पानी का मिक्चर। यदि मैं उनसे कहूं कि उन्हें कोई बीमारी या कष्ट नहीं, वह सर्वथा है तो वे यह बात स्वीकार नहीं करेंगे, बल्कि यह समझ कर कि मेरा निदान ठीक नहीं किसी अन्य डाक्टर के पास चले जायेंगे।

योग्य और अनुभवी डाक्टर, हकीम जब किसी रोगी का इलाज आरम्भ करता है तो वह उसकी मन स्थिति, रोग प्रभाव उसके प्रभावों को भी विचाराधीन रखता है तथा रोग साधारण हो या भयंकर, रोगी को किसी अवस्था में निराश नहीं करता बल्कि पहले ही निरीक्षण में सान्त्वना और धीरज से उसका भय दूर करने का प्रयत्न करता है वह इस सत्य को खूब समझता है कि रोगी की आशान्वित मनः स्थिति भी उसके स्वास्थ्य लाभ के लिए इतनी ही आवश्यक है जितनी कि शुद्ध और उचित चिकित्सा। कई लोभी और स्वार्थी चिकित्सक केवल अपनी चिकित्सा का महत्व प्रकट करने के लिए या अधिक से अधिक पैसे बटोरने के लिए रोगी को यह जताना। आवश्यक समझते हैं कि उसका रोग कोई साधारण रोग नहीं यह तरीका न केवल नैतिक रूप से निन्दनीय है बल्कि पेशे और व्यवसाय के नियम के भी विरुद्ध है। रोगी की मानसिक स्थिति पर बुरा प्रभाव डालना अत्यन्त निन्दनीय है विचारों की यह शक्ति, जिसका शारीरिक स्वास्थ्य पर बहुत बड़ा प्रभाव समझा जाता है, आधुनिक युग की कोई गवेषणा नहीं, एक ऐसा सत्य है जिससे शताब्दियों पहले का मनुष्य भी परिचित था। वह औषधियों के बिना केवल विचारों को प्रभावित करके रोग निवारण

में विश्वास रखता था। ये तावीज, गन्डे यन्त्र, मन्त्र और टोने टोटके उसी प्राचीन मनुष्य के आविष्कार हैं जो आज भी विद्यमान हैं और उनसे पूर्ववत काम लिया जा रहा है विदित है कि तावीज गन्डे या यंत्र मंत्र में रोग निवारण की क्या शक्ति हो सकती है। वास्तविक चीज तो मनुष्य का अपना विश्वास है और विश्वास ही शरीर पर अच्छा प्रभाव डाल सकता है। यदि कोई व्यक्ति तावीज गन्डा उसे लाभ पहुंचाये यदि कोई व्यक्ति जादू और बुरी नजर में विश्वास नहीं रखता तो उन चीजों से उसे कोई हानि नहीं पहुचा सकता।

विश्वास या विचार की शक्ति को वर्तमान युग के मनोवैज्ञान वेता ने भी स्वीकार किया है हिप्नोटिज्म या मिस्मेरिज्म का महत्व इससे अधिक कुछ नहीं कि मनुष्य की मनः स्थिति को प्रभावित करके उससे रोग निवारण का काम किया जाय। इस सम्बन्ध में फ्रांस के डाक्टर कोवे ने आश्चर्य जनक कार्य किये हैं। उसने अनेक रोगियों को केवल संकल्प शक्ति द्वारा स्वस्थ कर दिखाया। उनमें से प्रायः रोगी असाध्य और पेचीदा रोगों से ग्रस्त थे। परन्तु कौवे उनकी मानसिक और बौद्धिक शक्तियों की इस निपुणता और दक्षता के साथ प्रभावित कर देता था कि वर्षों के रोगी दिनों में ठीक हो जाते थे।

एक व्यापक अनुभव और आंखों देखी परीक्षा है कि एक व्यक्ति अत्यन्त निराशा और विषाद की अवस्था में बीमार है ऐसी अवस्था में उसे वह शुभ समाचार पहुंचता है जिसके लिए वह उत्कन्ठित और लालाइत था। आप देखंगे कि वह वास्तव में अपने कष्ट को भूल है। उसके चेहरे पर सुर्खी झलकने लगती उसकी नस २ में कोई ऐसी शक्ति दौड़ गई है जो उसे शीघ्र से शीघ्र स्वस्थ बना देना चाहती है कुछ ही दिनों के भीतर उसका

रोग दूर हो जाता है वह ऐसा स्वस्थ और सबल नजर आने लगता है मानो कभी बीमार ही न हुआ था।

इस सत्य से बहुत कम लोग परिचित होंगे कि मनुष्य की मानसिक स्थिति जहां उसे कई असाध्य रोगों से मुक्ति दिला सकती है। वहां बुढ़ापे के विरूद्ध भी सफल टक्कर ले सकती है इसका एक बड़ा कारण यह है कि यदि शरीर के भाग जैसे आंखें, कान, अवयव और त्वचा आदि बहुत थोड़ी आयु से उन्नति की ओर अग्रसर होने लगते हैं तो दिमाग कहीं साठ वर्ष की आयु में जाकर जवान होता है मनोविज्ञान के बड़े २ पंडितों का, जिनमें अमेरिका के जार्ज लाइन का नाम विशेषतः उल्लेखनीय है यह दावा है कि यदि हम दिमाग की इस विशेषता से लाभ उठायें तो हमारा शरीर भी देर तक जवान रह सकता है।

इनके निकट बुढापे को पराजित करने का सबसे सफल उपाय यह है कि मनुष्य अपने मन अथवा चित्त को सदा चैतन्य, चुस्त और जाग्रत रखे। अपने इर्द गिर्द की स्थितियों में रुचि लेता रहे। यह कभी विचार न करे कि वह पक्की आयु के कारण नई २ बातें सीखने के योग्य नहीं रहा बल्कि इसके विरुद्ध अपनी जानकारी में प्रतिक्षण वृद्धि करने के लिए तैयार रहे। ऐसे कार्यों में व्यस्त रहें जिनमें हाथ के साथ दिमाग को भी काम करने का अवसर मिले। नये दोस्त बनायें नई यात्रायें करें, नई पुस्तकें पढ़े, नए आविष्कारों से लाभ उठायें नए फैशन स्वीकार करें, बच्चों को खिला सकें और नौजवानों के साथ खेल सकें तथा यह सत्य हृदय में ग्रहण कर ले कि बुढापा कलैन्डर पर निर्भर नहीं, विचारों पर निर्भर है।

सोचना महापाप है कि हम बूढे हो रहे हैं। हमारा मस्तिष्क

अब नई बातें सीखने योग नहीं रहा, हमारा खून दिन प्रति दिन सर्द हो रहा है, हमारी दृष्टि दुर्बल हो रही है बाल सफेद हो रहे हैं चेहरे पर झुरियाँ पड़ रही हैं ये निराशा पूर्ण विचार मनुष्य को शीघ्र बूढ़ा कर देते हैं।

हिन्दुस्तान की एक अत्यन्त अवांच्छनीय प्रथा यह है कि ज्यों ही किसी व्यक्ति के सिर के बाल पकने आरम्भ होते हैं। उसे हम बुढ़ापे या बुजुर्ग का प्रमाण पत्र दे देते है। उसे बाबा या बूड्ढा और बड़े मियाँ कहकर पुकारते हैं अनेक लोग इस गलत उपाधियों और समादार से प्रभावित होकर बूढ़े हो जाते हैं या अपने आपको बूढ़ा समझ लेते हैं और बुढ़ापे का अर्थ उनके निकट यह प्रकट होता है कि जीवन की प्रत्येक अभिरुचि जिन्दादिली और खेल कूद से दूर रहकर शारीरिक स्वास्थ्य को अवगति और ह्रास को स्वीकार कर लिया जाय। एक महा-नुभाव जिनके जीवन का अधिकांश भाग विदेशों में व्यतीत हुआ। कुछ वर्ष हुये हिन्दुस्तान वापस आये। किसी मित्र ने उनके शरीर की प्रशन्सा की। कहने लगे कि मेरा शरीर इससे अधिक अच्छा था परन्तु एक वर्ष पहले जब मेरा जहाज कराँची के तट पर पहुंचा तो एक कुली ने जो मेरा सामान उतार रहा था मुझे बाबा कहकर पुकारा और उसके बाद कई मित्रों और सम्बन्धियों ने मेरे साथ वही वर्ताव किया जो किसी बूढ़े व्यक्ति के साथ किया था। उस समय से लेकर मैं यह अनुभव कर रहा हूं कि मैं सचमुच बूढ़ा हो गया हूं हिन्दुस्तान की इस प्रथा ने मेरे हृदय को बहुत आघात पहुंचाया है। मेरा जी चाहता है कि कोई ऐसा कानून हो कि जिस व्यक्ति का मैं बाबा, दादा, नहीं, यदि वह मुझे बाबा कहे तो मैं उसके विरुद्ध मुकदमा चला सकूं।

वह व्यक्ति सामाजिक शिष्टाचार से अनभिज्ञ है जो अपने मित्रों, बन्धुओं और मिलने वालों की कुशलता इन शब्दों में पूंछता है।

आप कुछ दुर्बल तो नहीं हो गए ?
आपका स्वास्थ खराब तो नहीं रहता ?
आप स्वस्थ नजर नहीं आते ?

कुछ सन्देह नहीं वह इन वाक्यों द्वारा अपने मित्र या संबंधी से सहानुभूति रखने का प्रयत्न करता है परन्तु सहानुभूति व्यक्त करने की यह रीति गलत है यदि किसी व्यक्ति का स्वास्थ सचमुच अच्छा नजर नहीं आता। उसका मुखं मण्डल वास्तव में ही उसकी रुग्णता की घोषणा करता है तो भी इस प्रकार के शब्दों से उसका हाल पूछना उचित नहीं। इससे उसके हृदय और उसकी मनः स्थिति पर बुरा प्रभाव पड़ने की सम्भावना है इन शब्दों से हाल चाल पूँछना तो चंगे भले व्यक्ति को भी अपने स्वास्थ्य के सम्बन्ध में सन्देह में डाल सकता है। एक रोगी का हाल पूछते समय हमें और भी सतर्कता से काम लेना चाहिए। उसकी बीमारी के सम्बन्ध में कभी ऐसी राय नहीं देनी चाहिए जो उसके निराशा, चिन्ता और विषाद का कारण हो।

वह मनुष्य बड़ा ही भाग्यशाली है जिसका मन स्वस्थ है और आशा से भरा हुआ है परन्तु याद रहे किसी व्यक्ति की मनः स्थिति उसके बचपन की शिक्षा और वातावरण से अधिक उच्च और समुन्नत नहीं हो सकती जो माता पिता अपने बाल बच्चों को हर समय डाटते डपटते रहते हैं, उन्हें लज्जित करते और मारते पीटते रहते उनके निर्दोष हृदयों का ताने और कटु

वाक्यों की वाणी से छेद देते हैं उन्हें भूतों चुडैलों दानवों और जिन्न परियों के काल्पनिक किस्से सुनाकर कायर बना देते हैं उन्हें प्रसन्शा समादर प्रोत्साहन से वंचित रखते हैं। उनके बच्चे मानसिक रूप से आयु भर बच्चे ही रहते हैं। उनके हृदय और मस्तिष्क पर हर समय विषाद और निराशा की घटा छाई रहेगी। वह किसी आपत्ति, किसी घटना, किसी बीमारी का वीरता से मुकावला नहीं कर सकेंगे, बल्कि सारा जीवन सहम २ और घुट २ कर व्यतीत करेंगे। प्रशन्सा ही उल्लास और प्रोत्साहन से विभोर वचपन ही आयु भर के सुदृढ़, उच्च निर्भीक विचारों अच्छे शारीरिक स्वास्थ्य की आधारशिला सिद्ध हो सकती है।

अच्छे स्वास्थ्य के इच्छुक व्यक्ति को अपने विचारों की पवित्रता और नैतिक जीवन की उन्नति की ओर विशेष ध्यान देना पड़ेगा। उसे समस्त मानसिक बुराइयों से बचना होगा। हमारा अनुभव यह है कि झूठ भी स्वास्थ्य पर बुरा प्रभाव डालता है। झूठ बोलने वाला व्यक्ति प्रति क्षण इस चिन्ता में रहेगा कि उसके झूठ की पोल न खुल जाये। चुगली और परनिन्दा करने वाले को सदा यह खटका लगा रहता है कि उसने जिस व्यक्ति की कीर्ति का खून किया है। वह उसके दोषों से जानकारी प्राप्त करके उसका शत्रु बन जायेगा। ईर्ष्या और प्रतिशोध की भावना मनुष्य में रक्त को जलाकर शरीर में अत्यन्त विषाक्त अन्श उत्पन्न करती है। आवश्यक है कि न केवल इन बुराईयों से बचना चाहिए, बल्कि इसके विपरीत हृदय और मस्तिष्क को सद्गुणों तथा अच्छे विचारों से विभोर रखना चाहिए। प्रशंसा, प्रसन्नता, प्रोत्साहन, सद्व्यव-

द्वार और सदभावना के द्वारा अपने स्वास्थ्य की रक्षा की जाये।

अच्छे शारीरिक स्वास्थ के इच्छुक को केवल आहार, व्यायाम, स्वच्छता आदि पर ही निर्भर नहीं रहना चाहिए। बल्कि विधाता के महानतम वरदान अर्थात विचार और संकल्प शक्ति से भी पूरा २ लाभ उठाना चाहिए। उसे अपने दैनिकदन्तो जीवन के प्रत्येक क्रिया कलाप और गति विधि में विचार शक्ति की आत्मा का संचारण करना चाहिए। जब वह सैर करने के लिए निकलते हैं तो यह समझें कि शरीर की नसों में रक्त संचालन की गति तीव्र हो गई है। जब हरे भरे खेतों में और सुविशाल दृश्यों की ओर दृष्टिपात करे तो यह आशय रखे कि उसकी आंखें स्वस्थ हो रही हैं। जब लम्बे २ सांसे ले तो ये अनुभव करें कि जैसे उसकी छाती फैल रही है। आज खाना खा रहा हो तो यह कल्पना करे कि एक-एक ग्रास शरीर को अधिक से अधिक पुष्टि प्रदान करेगा। जब दाँतुन कर रहा हो तो यह विचार करें कि उसके मसूढ़े और दांत सुदृढ हो रहे हैं। जब वह स्नानागार में पग रखे तो अपने शरीर पर दृष्टि-पात करते हुए यह विश्वास रखे कि उसका स्वास्थ दिन प्रति-दिनअच्छा हो रहा है। जब काम कर रहा हो तो इस सत्य को हृदय में ग्रहण करे कि परिश्रम से उसकी शारीरिक और बौद्धिक शक्ति उन्नति कर रही है और जब रात को बिछौने पर लेटे तो इस विश्वास को हृदय में धारण करके कि दिन भर में शरीर की जितनी शक्ति खर्च हुई है, वह प्रगाढ़ और मीठी नींद से पुनः प्राप्त हो जाएगी। यह सत्य है कि नींद को विधाता ने खोई हुई शक्ति को पुनः प्राप्ति और नवीन शक्ति

संचय का सर्वोत्तम साधन बताया है। स्वास्थ और शारीरिक सौंदर्य के लिए नींद के बदले अन्य कोई वस्तु नहीं है।

विचार शक्ति आपके शरीर पर अत्यन्त श्रेयस्कर प्रभाव डाल सकती है। इस सम्बन्ध में लेडी डाक्टर मेरी स्टोप्स के विचार ध्यान पूर्वक पढ़िए।

डा० मेरी स्टोप्स के विचार—अधिकांश लोग काल्पनिक नपुंसकता से ग्रस्त हैं। पूर्णतः नपुंसक पति बहुत विरले होते हैं कुछ लोगों में एक तो प्राकृतिक रूप से पुंसत्व शक्ति कुछ कम होती है और दूसरे वह वहम अथवा भ्रम से विश्वास ग्रहण कर लेता है और वह बनावटी नपुंसकता के शिकार हो जाते हैं। इसकी चिकित्सा बहुत शीघ्रहो सकती है, विचार ही इस संसार की समस्त बातों पर शासन करते हैं बनावटी नपुंसकता से ग्रस्त मनुष्य को विश्वास कर लेना चाहिए कि वह दुर्बल नहीं है ज्यों ही नपुंसकता का भय दूर हुआ पौरुषीय शक्तियां जाग्रत हो जाएंगी और वह प्राकृतिक मैथुन का आनन्द प्राप्त करने के योग्य हो जायेगा। स्वास्थ के लिए पुरुष की इन्द्रियों में दृढ़ता और उठान आवश्यक है। पुरुषेन्द्रियों में स्फूर्ति लाने के के लिए जो नसें इसमें रक्त भेजती हैं उन पर भय का गम्भीर प्रभाव पड़ता है अस्तु पुरुष को अपने हृदय से दुर्बलता का भय दूर कर देना चाहिए। कई व्यक्ति जो हस्त मैथुन के व्यसनी होते थे, पूर्णपति बन गए। मेरा दावा हैं कि दूसरे भी बन सकते हैं यदि उनके हृदय में हस्त मैथुन के परिणामों का डर दूर हो जाए।

पुंसत्व शक्ति ह्रास का रोग क्यों होता है—अधिक जागना कब्ज करने वाला आहार खाना, मादक वस्तुओं का प्रयोग,

घबड़ाहट, विषाद या भय की अवस्था में संसर्ग, के बाद शीघ्र ही पेशाब करना, मूत्राशय की दुर्बलता, जिगर और गुर्दे की खराबी, शराब पीना, वैश्यागमन, हस्त मैथुन, गुदा मैथुन, अधिक स्वप्नदोष, मैली कुचैली और बूढ़ी औरतों से संसर्ग, अप्राकृतिक इच्छा उत्पन्न करके संसर्ग करना, यौवन में भस्मों का प्रयोग, अधिक चाय पीना, कोकीन खाना, कारोबार की अधिकता, सदा रुग्ण रहना, सुजाक आतिशक (उपदंश) बवासीर, खाली पेट या सख्त भूख की अवस्था में संसर्ग, अधिक मोटापा, हृदय और मस्तिष्क के रोग, वृद्धावस्था, दुर्बलता, और समष्टि रूप में दुर्बलता आदि आदि इस प्रकार बहुत से कारण हैं। जिनसे मनुष्य में पुंसत्व शक्ति ह्रास की शिकायत पैदा हो जाती है।

डा० मेरी स्टोप्स ने अपनी एक नवीन कृति में लिखा है कि भय और रोग का प्रभाव संभोग शक्ति पर बहुत अधिक पड़ता है शरीर में पीड़ा या पाचन शक्ति में विकार या आकस्मिक घटना या कोई ऐसा शारीरिक कष्ट जिसका सम्बन्ध सीधा पुरुषेन्द्रिय के साथ हो अधिकतर पुंसत्व शक्ति के कम करने का कारण होता है रीढ़ के अवयवों का सम्बन्ध पुरुषेन्द्रिय से इन पर आघात लगने से भी कई बार पुरुष में अस्थाई रूप से पुंसत्व शक्ति कम हो जाती है। श्रम और मानसिक परिश्रम के अधिक भय, त्रास, तोप के गोले के धमाके से भी कई पुरुष नपुंसकता के शिकार हो जाते हैं।

नपुंसकता के कारण—नारी संसर्ग के अयोग्य होने का नाम है 'नपुंसकता'।

आमतौर पर तो प्रत्येक पुरुष और प्रत्येक स्त्री, नारी

होती है तो भी हजारों लाखों में से कुछ ही पुरुष प्राकृतिक रूप से नपुंसक और कुछ ही नारी, नारी सुलभ गुणों से वंचित पाई जाती हैं। वास्तव में प्राकृतिक नपुंसकता का कोई इलाज नहीं परन्तु जाने या अनजाने स्वयं कृत असंयमों का प्रतिकार हो सकता है।

जन्म के नपुंसकों की एक श्रेणी यह है कि जिसके इन्द्रिय विषेश होती ही नहीं, केवल एक छिद्र के द्वारा पेशाव कर सकती हैं। इन नपुंसकों की दूसरी श्रेणी यह है जिनके अन्ड कोष बाहर नहीं आने पाते, भीतर ही रह जाते हैं यदि बचपन में विषेश सतर्कता से आपरेशन द्वारा ठीक कर दिए जाएं तो ठीक है, नहीं तो बड़े होकर जब अवयवों की बनावट बिगड़ चुकी होती हैं इलाज असम्भव है। तीसरे नपुंसक ऐसे होते हैं। जिनको इन्द्रिय विशेष यथार्थ माप दन्ड के अनुसार लम्बी नहीं होती है।

नपुंसकता की यह तीन श्रेणियाँ ऐसी हैं जिनकी चिकित्सा नहीं हो सकती। इसके अतिरिक्त उन्हें यह अनुभव भी नहीं होता कि हम किसी अद्‌भुत वरदान से वंचित हैं। हां जिन लोगों ने किसी न किसी उपाय से इस शक्ति का आनन्द प्राप्त किया है वह अपने दुष्कर्मों के कारण अपनी जवानी नष्ट कर चुके हैं और अब नपुंसकों में गिने जाते हैं, निराश न हों उन्हें अपने हाथों से नष्ट की गई दौलत पुनः प्राप्त हो सकती है। किसी योग्य चिकित्सक से धैर्य और सन्तोष के साथ नियम पूर्वक इलाज करायें। अवश्य लाभ होगा।

चिकित्सा साध्य नपुंसकता निम्न लिखित कारणों से होती है —

जैसा कि योगियों और वैरागियों के नियम हैं बचपन से

ही खूब जोर से कसकर लंगोटी बाँधना, इससे पुरुषेन्द्रिय का बढ़ना फूलना बन्द हो जाता है ऐसे योगी प्रायः देखने में आते हैं जो देखने में हृष्ट पुष्ट नजर आते हैं अस्तु उनकी इन्द्रिय विशेष और अन्डकोष बच्चों जैसे छोटे होते हैं। लंगोटी बाँधने से पुरुषेन्द्रिय की वृद्धि नहीं हो सकती, इसलिए पुरुष नपुंसकता का शिकार हो जाता है।

जो लोग शुरू से पहलवानी या व्यायाम में व्यस्त रहें, नारी की तरफ उनका ध्यान न जाए, उससे नपुंसकता हो जाती है फिर यदि वह औरत की बातें सुने, उनकी संगति में बैठें, प्रेम और श्रृंगार रस में डूबी कहानियाँ किस्से सुनें तो उन के भावों में अवश्य ही आन्दोलन उत्पन्न होकर बिना औषधि तथा चिकित्सा के नपुंसक शक्ति पैदा हो जाती है संयोग क्रिया देखना या पशु पक्षियों की रति क्रीड़ा देखना भी उपयोगी है, सुन्दर औरतों को देखना और राग रंग का प्रभाव पड़ता है इन्द्रिय विशेष के बालों को प्रतिदिन उस्तरे से साफ करना बहुत लाभ दायक है।

जिगर और गुर्दों की खराबियाँ, मूत्राशय की दुर्बलता, वीर्य की नाली की सूजन, अधिक बैठक, मानसिक परेशानियाँ, खट्टी चीजों का अधिक प्रयोग, मादक वस्तुओं का सेवन, हस्त मैथुन, गुदा मैथुन, आतिशक (उपदंश) सुजाक, बूढ़ी या कुरूप औरत से संसर्ग, लज्जा, शोक, क्रोध, पेशाब या पाखाने की हाजत में नारी गमन करते रहना या इस क्रिया के ध्यान में प्रतिक्षण मग्न रहना, नारी की अनिच्छा के बावजूद संसर्ग सम्भोग की गर्मी दूर होने से पहले नहाना, ठन्डा पानी पीना, या ठन्डी औषधियां खाना भी नपुंसकता पैदा करते हैं। इन

कारणों में से जो कारग नपुंसकता का कारण हो, उसे सामने रख कर इलाज करने से नपुंसक अपना स्वास्थ्य ठीक कर सकते हैं।

सन्तानहीनता—यह एक प्राकृतिक नियम है कि औरत पुरुष संसर्ग से गर्भाधान हो। यदि ऐसा न होता तो मानव जाति कब की समाप्त हो गई होती। जिस प्रकार पशुओं में प्राय: एक ही बार मिलने से मादा गर्भवती हो जाती हैं, मनुष्य जाति में भी ऐसा ही होना चाहिए। परन्तु बहुधा स्थितियों में हम इसके विपरीत पाते हैं प्राय: घरानों में तो चिरकाल से प्रयत्न करने पर भी सफलता प्राप्त नहीं होती तो क्या मानव के लिए विधाता का कोई और विधान है ? नहीं कदापि नहीं। विधाता का विधान कभी नहीं बदल सकता।

सन्तान का होना न होना भी एक नियमित विधान या कानून है। इस कानून पर विचार करने से सिद्ध होता है कि स्त्री पुरुष के मिलने के बावजूद सन्तान न होना भी एक विशेष अर्थ रखता है जिसके उत्तर दाई वो अभागे मनुष्य हैं जिन्होंने बचपन के असंयमों, दुष्कर्मों से अपने आप को इन वरदानों से वंचित कर लिया है अन्यथा उदार प्रकृति ने कंजूसी से काम नहीं लिया।

कुछ स्थितियों में पुरुष या स्त्री सन्तानोत्पत्ति की प्राकृतिक क्षमता नहीं रखते जो वस्तुत: उनकी नहीं तो उनके माता पिता के प्राकृतिक नियमों के भंग करने का परिणाम होता है अन्यथा प्राय: मनुष्य अपने कुकर्मों के कारण सन्तान से वंचित रहते हैं। यहाँ हम पुरुष और स्त्री दोनों के सम्बन्ध में सन्तान हीनता के कारण लिखते हैं।

पौरुषीय दोष—हजारों लाखों में से शायद कोई पुरुष जन्म से नपुंसक होता है क्योंकि प्रकृति ने प्रायः सभी मनुष्यों को पूर्ण बनाया है। कई बच्चों के अण्डकोष किसी दबाव या रोग के कारण बाहर नहीं आने पाते और बड़े होने पर कोई चिकित्सा नहीं रहती। किसी पुरुष के वीर्य में वे कीड़े नहीं होते जिनसे गर्भाधान होता है वे भी चिकित्सा के अयोग्य हैं। किसी पुरुष की इन्द्रिय दो इंच होती है या कई पुरुषों में कामोत्तेजना ही नहीं होती। उनका इलाज भी नहीं हो सकता।

चिकित्सा योग्य रोगियों में हस्तमैथुन के रोगी, आतिशक और सुजाक से ग्रस्त रोगी जो पत्नी से पहले या बाद में स्खलित होता हो। नशा करने वाला या शराब पीने वाला, मूत्राशय और धातु की नाली के सूजन से ग्रस्त रोगी। पत्नी से लज्जित, भयभीत, शीघ्रपात, धातुक्षय (जिर्यान) और अन्य इसी प्रकार के रोगों से ग्रस्त रोगी सन्तानोत्पत्ति के योग्य हैं, रोग—निवृत्ति के बाद इनके यहाँ भी सन्तान हो सकती है।

पांचवां अध्याय

हस्तमैथुन

इन्द्रिय को हाथ से मसल-मसल कर वीर्य निकालने को हस्तमैथुन कहते हैं। यह आदत अधिकतर दुराचारी लड़कों की संगति में बालक को लग जाती है। दुष्ट लड़के दूसरे भोले-भाले साथियों को हंसी-दिल्लगी के रूप में यह क्रिया स्वयं करके दिखाते हैं और उन्हें प्रेरणा दिलाते हैं कि वह भी ऐसा करें। फल यह होता है कि अबोध-अंजान बालक यदि शर्म के मारे उस समय नहीं तो किसी समय एकान्त में वैसा ही कुकर्म करते हैं। मानो अभी वह बालिग न हुए हों, जब भी पुरुषेन्द्रिय को रगड़नें के कारण एक विशेष रस आस्वादन का अनुभव होता है। इसके अतिरिक्त क्योंकि कोई रोकने या समझाने वाला नहीं होता और इस क्रिया में बिना किसी के समावेश के स्वतंत्र होते हैं। इसलिए मजे में आकर वह न दिन देखते हैं न रात, जहां जरा ध्यान आया और वह व्यस्त हो गए। इसी प्रकार बहुत शीघ्र हस्तमैथुन के व्यसनी हो जाते हैं। और अपनी धुन में उन्हें कुछ नहीं सूझता कि वह अपने विनाश की व्यवस्था कर रहे हैं।

यह इतनी बुरी आदत है कि मनुष्य इसके भयंकर परिणामों से परिचित होने के पश्चात इसे छोड़ना भी चाहे तो नहीं छोड़ सकता। प्रातः आँख खुलने पर जो लड़के खाट पर लेटे रहते हैं उन्हें प्रायः यह बुरी आदत लग जाती है। प्रातः समय पुरुषेन्द्रिय

में आन्दोलन चेतना उत्पन्न होती है और वह उसे मसलना आरम्भ कर देते हैं।

नदी-नालों में लड़कों के मिलकर नहाने से भी यह बुरा व्यसन लग जाता है। एक दूसरे को नग्न देखकर हृदय में बुरे विचार पैदा होते हैं। लड़का एकान्त में जाकर यह क्रिया आरम्भ कर देता है। नग्न स्त्रियों या नग्न स्त्रियों के चित्रों के देखने से भी कामोत्तेजना पैदा हो जाती है जो अन्त में हस्त-मैथुन का कारण सिद्ध होती है।

हस्तमैथुन के भयंकर परिणाम—इस काम के करने वालों में वीर्य का उत्पादन कम और प्रकृति बिना उठान के वीर्य के निष्कासन में अभ्यस्त हो जाती है। स्त्री के साथ संसर्ग करने लिए आवश्यक है कि इन्द्रिय में स्फूर्ति और उठान हो। परन्तु हस्तमैथुन के लिए यह आवश्यक नहीं। पुरुष बनावटी स्फूर्ति का अभ्यस्त हो जाता है। पुरुषत्व शक्ति दुर्बल हो जाती है। उठान नहीं होता। इन्द्रिय में टेढ़ापन आ जाता है। लम्बाई बढ़ने से रुक जाती है। हृदय और मस्तिष्क पर अनुचित बोझ पड़ने से विभिन्न रोग लग जाते हैं। सिर चकराता है। भूख नहीं लगती, दिल की धडकन, सांस फूलना, प्रमेह, शीघ्रपात, नपुंसकता, कायरता, विस्मृति, जोड़ों में दर्द आदि वह कौन-सा रोग है जो इस अदूरदर्शी युवक पर आक्रमण नहीं करता।

अति हस्तमैथुन से आँखें भीतर धंस जाती हैं। गाल पिचक जाते हैं। दृष्टि कमजोर हो जाती है और आंखों के नीचे काली लकीरें पड़ जाती हैं।

वीर्य दौर्बल्य और शीघ्रपात का रोग लग जाता है। इस रोग से ग्रस्त पुरुष स्त्री के अयोग्य हो जाता है। प्रथम ऐसे

पुरुष के घर में सन्तान उत्पन्न ही नहीं हो सकती और यदि दैव-संयोग से हो भी जाये तो दुर्बल होती है और उसका जीवन बहुत कम होता है।

हस्तमैथुन से होने वाली विकृतियों का संक्षिप्त वर्णन

१—हाथ की रगड़ से जननेन्द्रिय की रगें और पट्ठे दुर्बल पड़ जाते हैं और इनमें रक्त का संचार रुक जाता है। नीली २ रगें उभर आती हैं और फिर जननेन्द्रिय में दुर्बलता और ढीलापन आ जाता है तथा धीरे धीरे उत्तेजना शक्ति मन्द पड़ जाती है।

२—बार बार निकलने के कारण वीर्य अत्यन्त दूषित और पतला उत्पन्न होने लगता है जिससे उसके कीटाणु (शुक्रकीट) नष्ट हो जाते हैं।

३—बार-बार वीर्य को निकालने के कारण वीर्य का कोष्ठ भी क्षणिक चेतनता वाला हो जाता है और उसकी स्तम्भन शक्ति सर्वथा न्यून हो जाती है अतः जब कभी मल त्याग के समय बल लगाया जाता है तब कुछेक वीर्य के बिन्दु निकल पड़ते हैं और फिर धीरे धीरे यहाँ तक नौबत पहुंच जाती है कि तनिक-सी रगड़ अथवा मैथुन के विचार से अथवा स्त्री के साथ बातचीत करने से ही वीर्यपात हो जाता है। ऐसी अवस्था को क्षणिक चेतनता अथवा जकीअलहिस कहते हैं।

४—इसके अतिरिक्त इस दुष्कर्म का दुष्प्रभाव उत्तमाँगों पर भी पड़ता है और शरीर के सत्व (वीर्य) को निकाल देने के कारण से सब उत्तमांग दुर्बल हो जाते हैं। हृदय, मस्तिष्क, यकृति, अण्डकोष मानो कि इन चारों अंगों के स्वस्थ रहने से ही

मानव शरीर स्वस्थ रहता है यदि इनमें दुर्बलता अथवा कोई अन्य विकृति हो जावे तो सारा शरीर विकृत अथवा निर्बल हो जाता है। हस्तमैथुन के कारण से इन चारों अंगों को क्या-क्या हानि पहुंचती है, वह अत्यन्त संक्षेप में नीचे अंकित की जाती है।

हृदय (दिल)—हस्तमैथुन जैसे कुकर्म से जब कुछ आनन्द उत्पन्न होता है तो उस समय यही नहीं कि केवल वीर्य निकल कर बस हो जाती है अपितु साथ एक वस्तु और भी निकलती है जो कि वीर्य से अधिक मूल्यवान होती है। वह हरारत अजीजी है। चूंकि इस दुर्व्यसन का मारा हुआ बार बार इस दुष्कर्म को करता है, इसलिए हरारत अजीजी इतनी निकलती है जितनी और उत्पन्न नहीं हो सकती। अतः उसका परिणाम यह होता है कि हृदय दुर्बल हो जाता है अपितु उन्माद और मूर्छा आदि रोग भी आ घेरते हैं। फिर जब उसे ज्ञात होता है कि यह सब तेरे उन दुष्कर्मों का परिणाम है—जो अपने दुर्भाग्य से कर चुका है, तब फिर उसे बड़ा पश्चाताप व चिन्ता होती है और इसी चिन्ता के कारण उसके हृदय को और भी हानि पहुंचती है।

परिणाम स्वरूप वह किसी के आगे लज्जा के मारे दृष्टि उठाकर देखने का साहस भी नहीं कर सकता। क्योंकि वह अपने आपको अपराधी और दुष्कर्म कर्त्ता समझता है। उसका दिल धड़कता है और अत्यन्त दुर्बल हो जाता है। उत्तेजना के समय वह रक्त की शुद्ध मात्रा जननेन्द्रिय की ओर नहीं भेज सकता। इसी हेतु से हृदय की दुर्बलता के रोगियों को उत्तेजना नहीं हुआ करती।

मस्तिष्क—हस्तमैथुन से मस्तिष्क को बहुत शीघ्र हानि पहुंचती है, क्योंकि जो पट्ठे मस्तिष्क से निकलते हैं वह इन्द्रिय

शिथिल होने के हेतु से बहुत शीघ्र दुर्बल हो जाते हैं और फिर वह यहाँ तक दुर्बल हो जाते हैं कि चाहे पुरुष स्त्री के साथ लेटा रहे तब भी उत्तेजना उत्पन्न नहीं होती।

इसके अतिरिक्त शिरःशूल रहता है, थोड़ा-सा चलने अथवा बैठे रहने के पश्चात खड़ा होने पर आँखों के आगे अन्धेरा छा जाता है, भाँति भांति के दुष्ट विचार उत्पन्न होने लगते हैं और सबसे बड़ा लक्षण यह है कि स्खलन के समय बहुत थोड़ा आनन्द आने लगता है। इसलिए वह रति क्रीड़ा के आनन्द की औषधियां खाकर और भी दुर्बल हो जाता है।

यकृत (जिगर)—हस्तमैथुन के कारण से यकृत भी बहुत शीघ्र दुर्बल हो जाता है, क्योंकि वीर्य के अधिक निकल जाने से रक्त की उपेक्षा होती है अतः यकृत को रक्त निर्माण के लिए अधिक काम करना पड़ता है और जो रक्त उत्पन्न होता है वह अधिकांश में व्यय हो जाता है अतः यकृत को पूर्ण भोजन नहीं मिलता। इस कारण से यकृत बहुत शीघ्र दुर्बल हो जाता है और हस्तमैथुन कर्ता के शरीर में रक्तन्यून होने के कारण उसके शरीर का वर्ण पीला हो जाता है तथा उसकी क्षुधा नष्ट प्रायः हो सकती है।

अन्डकोष—इस दुष्कर्म के कारण से यह अंग भी नहीं बच सकते। इस अंग की ग्रन्थियाँ वीर्य को बनाती हैं और इस निन्द्य कर्म से इनको भी अपना काम बार-बार करना पड़ता है अपितु कतिपय अवसरों पर तो कच्चा वीर्य अथवा केवल रक्त ही देना पड़ता है। इसलिए अण्ड दुर्बल और शिथिल होकर लटक जाते हैं और इनमें थोडी २ पीड़ा भी रहने लगती है।

उत्तमांगों के अतिरिक्त आमाशय वृक्क, मूत्राशय पर भी

इसका बुरा प्रभाव पड़ता है। सारांश यह है कि मनुष्य यथार्थं से चलता फिरता मुर्दा बन जाता है। प्रत्युत कतिपय घटनाओं तथा अनुभवों से प्रतीत होता है कि कई मनुष्य तो इस दुष्कर्म से अचानक मर गए और कुछेक व्यक्तियों को उन्माद, जनून कम्पवात जैसे भयंकर रोग लग गए। इस लिए पुकार कर कहा जाता है कि भाइयो ! इस दुष्कर्म से बचो और अपनें आपको मृत्यु मुख में पतित होने से बचाओ अन्यथा सारी आयु पछताओगे। माता पिता को अपने बच्चों का विशेष ध्यान रखना चाहिये। उनको कुशल बालकों के साथ एक रिक्त स्थान में छोड़कर कभी भी उपेक्षा न कीजिये, नहीं तो वह अवश्य ही इस कुटेव में फंसकर अपने आपको भ्रष्ट कर लेंगे।

गुदामैथुन के भीषण परिणाम

हस्तमैथुन को भांति गुदामैथुन के नैतिक पतन युक्त, लाँछनीय और दुष्परिणाम भी अत्यन्त भीषण है। यह कुकर्म जो व्यक्ति करता है दोनों को ही विनाश सागर में डूबो देने वाला बुरा व्यसन है। यह बुराई भी बुरे लड़कों से एक दूसरे में पैदा होती है आजकल के स्कूलों और कालेजों में यह रोग बहुत फैला हुआ है। इस क्रिया से शीघ्रपात पुरुषेन्दिय के आकार का विकृत होना, जिगर की खराबी, पीलिया, निरन्तर ताप रहना, अन्तड़ियों के रोग, मूत्राशय की दुर्बलता पुरुषेन्द्रिय की नसों की शिथिलता, अण्डकोष पर सूजन, प्रेशाब की नाली में दर्द और सूजन, सन्तान हीनता और घोर नपुंसकता हो जाती है।

गुदा मैथुन करने वाले पुरुष स्त्री के काम नहीं रहते और न वह स्त्री से भली प्रकार समागम कर सकते हैं और न उन्हें इस क्रिया से आनन्द प्राप्त होता है। ऐसे लोगों के घर सन्तान नहीं होती।

माता-पिता को चाहिए कि अपने लड़कों को कुसंगति से बचायें। ऐसे बुरे व्यसन दुष्ट एवं दुराचारी लड़कों की संगति से उत्पन्न हो जाते हैं। अगर शुरू से ही लड़कों पर बड़ी देख-रेख रखी जाये तो वह इन बुरे व्यसनों से बचे रह सकते हैं। जब मनुष्य जवानी को बहारों में पहुंचता है तो उसमें भावों का तूफान उठने लगता है, यदि बच्चों को सदाचार तथा उच्च प्रकार की शिक्षा दी जाये तो इन भावों को वश अथवा नियन्त्रण में रखा जा सकता है। परन्तु, कुसंगति से पाला पड़ा हो शिक्षा भी अच्छी न हो तो भावों का वश में रखना बहुत कठिन होता है। इस स्थिति में लड़कों के आचरण में दोष आ जाता है।

लाभदायक तथा शिक्षाप्रद सूक्ष्म बातें

(१) कम उम्र में स्त्री प्रसंग करना अनुचित है। छोटी वयस में मैथुन करने या अधिक स्त्री प्रसंग करने से शुक्रतारल्य रोग हो जाता है यानी वीर्य पतला हो जाता है। इस दशा में, मलमूत्र त्यागते समय वीर्य निकल जाता है। स्त्री को देखने या छूने मात्र से वीर्य से धोती, पाजामा या अन्डरवेयर (कच्छा) बिगड़ जाता है, जरा भी रुकावट नहीं होती, यानी संगम होते ही या स्त्री को छूने के साथ ही वीर्यपात हो जाता है अगर ऐसी दशा में जल्दी इलाज नहीं किया जाता, तो दस्त कब्ज अजीर्ण मन्दाग्नि, अतिसार, काम में दिल न लगना, सिर घूमना, चक्कर आना और नेत्रों के इर्द गिर्द काले २ दाग हो जाना प्रभृति रोग हो जाते हैं। जब रोग बढ़ जाता है, तब लिंग के चैतन्य हुए बिना ही वीर्य गिर जाता है। फिर चेतन्य या शहवत होना ही बन्द हो जाता है। अथवा ध्वज भंग रोग आ दबाता है।

यानी मर्द नामर्द हो जाता है। गाहे-ब-गाहे स्वप्नदोष होनें लगते हैं, पर स्त्री प्रसंग की शक्ति नहीं रहती। अतः छोटी उम्र में ही स्त्री प्रसंग या हस्तमैथुन आदि से वीर्यपात न करना चाहिये।

सुश्रुताचार्य १६ साल की स्त्री और २४ साल के पुरुष को गर्भाधान करने या प्रसंग करने की आज्ञा देते हैं। पर आजकल तो ८ १० वर्ष की लड़कियों की शादी कर दी जाती है। माता-पिता १३ १४ साल के कच्चे लड़कों को बहू के पास जबर्दस्ती भेजते हैं। परिणाम यह होता है कि शीघ्र ही लड़के को प्रमेह या शुक्रतारल्य अथवा धातु के पतलेपन का रोग हो जाता है १८-२० साल के लड़के धातुपुष्टि की दवा खोजते देखे जाते हैं। हमारे यहां विशेषकर देहात से ऐसे रोगी जितने आते हैं उतने और रोगों के नहीं आते। जिन्हें स्त्री सुख का आनन्द भोगना हो, उत्तम सन्तान पैदा करनी हो, पूरी उम्र तक जीना हो धर्म अर्थ काम मोक्ष—चतुर्वर्ण—की प्राप्ति करनी हो उन्हें सुश्रुत की आज्ञा पर चलना चाहिए।

(२) बाजोकरण औषधियों का सेवन करने वाला शुद्ध वीर्य और निरोग शरीर वाला पुरुष, सोलह वर्ष की उम्र से सत्तर साल की आयु तक मैथुन कर सकता है। सोलह से कम और सत्तर से ज्याद आयु में मैथुन हानिकारक है अगर सत्तर साल के ऊपर की आयु वाला मैथुन करता है तो शीघ्र नष्ट हो जाता है।

नोट—आजकल जन्मभर शरीर में तेल न दिने और हर साल वाजीकरण औषधियां न खाने से—चालीस पैंतालीस साल की आयु में ही पुरुष स्त्री प्रसंग के योग्य नहीं रहते। इस आयु में

नहीं तो ५०-५५ की आयु में पहले के ७० साल वालों से भी गये बीते हैं।

(३) स्त्री-प्रसंग नियमानुसार करना चाहिए। अधिक नारी प्रसंग करने में असीम हानियां हैं। अधिक सहवास से शोथ सूजन खाँसी, क्षय या राज्य क्षमा (थाइसिस) ज्वर बवासीर, पीलिया, स्वरभंग, ध्वज भँग, नामर्दी आदि अनेक भयंकर और प्राण-संहारक रोग हो जाते हैं। जिन्हें अधिक मैथुन करना हो उन्हें सदा वाजीकरण औषधियाँ सेवन करनी चाहिए। आयुष्मान बुढ़ापे से रहित जवान बलवान हृष्ट-पुष्ट पुरुषों को हर मौसम में पन्द्रह दिन के बाद नारी प्रसंग करना उचित है। जो इन नियमों के विपरीत मैथुन करते हैं उन्हें उपरोक्त रोगों के सिवा और भी दुर्जय रोग हो जाते हैं और वह अपने समय से पहले ही मर जाते हैं।

जो पुरुष अपने बल से अधिक नारी प्रसंग करते हैं वह अगर पूरी आयु तक जीना चाहें तो आज से ही नियमानुसार मैथुन करें। नारी-प्रसंग में सन्तानोत्पत्ति के सिवा और कोई लाभ नहीं। जिन्होंने अपनी आयु में अत्यन्त नारी प्रसंग किया, उन्हें हमने पछताते और रोते देखा।

हमारा अभिप्राय: यह नहीं कि जीवन भर स्त्री प्रसंग करना न चाहिए। हम कहते हैं कीजिए, अवश्य कीजिए, पर अधिक न कीजिए। हर पन्द्रहवें दिन रात में एक बार कीजिए। पर एक रात में दो-दो और तीन-तीन वार करना कदापि अच्छा नहीं। दूसरी-तीसरी बार करने से वीर्य की जगह खून या खून मिला वीर्य आता है। अधिक वीर्य नष्ट करने से, आंखों की रोशनी घट जाती है, असमय में बाल सफेद होने लगते हैं, नेत्रों के नीचे काले-काले दाग, झांई या चकते हो जाते हैं, २५-३०

साल अथवा ज्यादा से ज्यादा ४०-४५ साल की उम्र में मृत्यु हो जाती है। जो बहुत ही ज्यादा मैथुन करते हैं, दिन रात उसी में लगे रहते हैं, वह तो क्षयादि रोगों के पंजों में फँसकर, भरी जवानी में ही अपनी प्राणवल्लभा को रोती-विलखती छोड़ कर यमराज के मेहमान होते हैं इसी से वेदों में, महीने में एक बार ऋतु स्नान के बाद मैथुन की आज्ञा है।

(४) जब आपका शरीर सब तरह से निरोग हो, आप का दिल कहीं न लगे, औरत को देखते ही कलेजा धड़कने लगे, गफलत सी होने लगे, उस हालत में आप मैथुन कर सकते हैं। यह कामातुर होने के लक्षण हैं। इस अवस्था में मैथुन न करने से मैथुन के वेग को रोकने से—प्रमेह, मूत्र कृच्छ और नपुंसकत्व आदि रोग हो जाते हैं। जो कामातुर होने पर भी, बार-बार वीर्य के वेग को रोक लेते हैं। वीर्य निकलना चाहता है और उसको निकलने नहीं देते, उनका वीर्य शान्त हो जाता है, फिर इच्छा करने पर भी अपने स्थान से चलायमान नहीं होता। विना वीर्य के चलायमान हुए मनुष्य मैथुन नहीं कर सकता। मतलब यह है कि जो लोग शहवत होने पर भी मैथुन नहीं करते, वह निश्चय ही नामर्द हो जाते हैं। ऐसी नामर्दी को शुक्रस्तम्भजन्य वा वीर्य रुकने से हुई नामर्दी कहते हैं। इसके सम्बन्ध में हम पुस्तक में दूसरे स्थान पर भी लिख रहे हैं। भगवान ने जो अंग जिस काम के लिए बनाया है उससे वही काम लेना चाहिए। पर उचित रूप से। अगर उस अंग से उस का काम न लिया जाएगा तो वह निश्चय ही बेकाम हो जाएगा लोहे की चाबी से अगर काम नहीं लिया जाता, वह नित्य प्रति तालें में नहीं लगाई जाती, तो उस पर जंग चढ़ जाता है और फिर वह तोले में नहीं लगती—उसे न खोलती है और न बन्द

करती है। हमने देखा है कि यदि नियत समय पर—पन्द्रह दिन के बाद, या महीने के वाद, तो अपने समय पर इन्द्री में कुछ तेजी आ जाती है। पर यदि चार-छ: महीने तक बिल्कुल नहीं किया जाता, तो पहले कुछ कठिनाई होती है यानी कुछ दिक्कत के बाद शहवत या कामेच्छा होती है। अतः इन्द्री से पेशाब और मैथुन दोनों का ही काम लेना चाहिए। पर अति सब जगह खराब है। खीर का भोजन अमृत तुल्य है। अगर उचित मात्रा में खाते हैं, तो मन में प्रसन्नता, तृप्ति और बल वृद्धि होती है। पर यदि वही खीर अत्यधिक खाने—अनाप-शनाप उड़ाई जाये, तो अजीर्ण, दस्त, कब्ज और कृमि रोग प्रभृति रोग पैदा कर देती है रोज मैथुन करने से जो आनन्द आता है, उसकी अपेक्षा महीने भर वाद करने से अधिक आनन्द आता है, और महीने भर के वाद करने से जो आनन्द आता है, उसकी अपेक्षा तीन महीने के वाद करने से और भी अधिक आनन्द आता है, सारांश यह है कि कामातुर होने पर मैथुन अवश्य कीजिए। जिस तरह छींक, डकार, नींद, प्रभृति तेरह वेगों का रोकना भयंकर रोगोत्पादक है, उसी तरह मैथुन का वेग रोकना भी।

(५) कामी पुरुष को अपना वीर्य भन्डार सदा खर्च न करना चाहिए। सदा खर्च ही खर्च करने और न बढ़ाने से हिमालय समान धन या वीर्य भी एक दिन समाप्त हो जाता है जाड़े में अग्नि तेज रहती है। भारी और पौष्टिक पदार्थ भी पच जाते हैं। कम से कम जाड़े के मौसम में धातु वर्द्धक पदार्थ अवश्य खाने चाहिएं, मैथुन करके भी मिश्री मिला अधोटा दूध पीना चाहिए। मैथुन के वाद बदन की गर्मी शांत होने पर, हाथ पांव धोकर दूध पी लेने से, जितना वीर्य खर्च होता है उतना ही तैयार हो जाता है। सवेरे ही बदन में अपनी प्रकृति

के अनुसार चन्दनादि तेल या नारायण तेल मालिश कराकर स्नान करना चाहिए। भोजन के समय हलवा, मोहन भोग, बालाई का हलवा, दूध चावल की खीर या मेवे की खिचड़ी, मीठे और पुष्टकर पदार्थ खाकर दिन में दो घन्टे सोना चाहिए जो गृहस्थी, हमारी इन बातों पर ध्यान देंगे, उनका बल वीर्य कभी कम न होगा।

"तिब्बे अकबरी" में लिखा है—कि मैथुन के बाद कोई ताकतवर मिठाई—जैसे गाय का मिश्री मिला अघोटा दूध, रबड़ी, मलाई आदि पदार्थ अवश्य खाने चाहिए। ऐसे पदार्थ खा लेने से दिल-दिमाग में तरी और मजबूती आती है अर्थात बल वीर्य नहीं घटता। जितना घटता है उतना ही फिर पैदा हो जाता है।

छठा अध्याय

नपुंसकता

हिन्दी नाम—नपुंसकता

उर्दू नाम—नामर्दी

अंग्रेजी नाम—इम्पोटैन्सी (Impotancy)

यदि कोई मनुष्य सम्भोग में औरत को पूर्ण रूप से सन्तुष्ट न कर सके तो उसे नपुंसकता कहते हैं। इसकी कई हालतें हैं। स्तम्भन शक्ति का पूर्ण तथा देर तक न रहना, सम्भोग के समय सन्तुष्टि हुए बिना ही वीर्य पात हो जाना तथा अन्त में उत्तेजना का बिल्कुल ही न होना। यह सब नपुंसकता की दशायें हैं। नपुंसकता का सबसे बड़ा कारण है अधिक हस्त मैथुन तथा दूसरे नम्बर पर अधिक सम्भोग। एक स्वस्थ मनुष्य भी कुछ मास के अधिक सम्भोग से नपुंसक हो सकता है। इस दशा में स्त्री सम्भोग की इच्छा होते हुए भी पुरुष की इन्द्री में उत्तेजना नहीं होती। इन्द्री बेजान माँस के टुकड़े की तरह गिरी रहती है। कामेच्छा होते हुए भी इन्द्री में तनाव नहीं आता और यदि पुरुष भरसक प्रयत्न से थोड़ी बहुत उत्तेजना लाता भी है तो सम्भोग के समय तुरन्त उसका वीर्य निकल जाता है। इस रोग में वैवाहिक जीवन बिल्कुल नष्ट हो जाता है। रोगी निराश और वहमी हो जाता है। तथा अपने जीवन में उसे चारों ओर अंधेरा ही अंधेरा दिखाई देता है और कई बार तो अपने जीवन को समाप्त कर देनें की सोचता है।

गया जो छोड़के लड़कपन तो नया यह इक उत्ताब आया।
बदल के जुल्म की सूरत मेरा शबाब आया॥
इक वह हैं कि जिनको तसवीर बनानी आती है,
इक हम हैं कि जिन्होंने अपनी सूरत ली है बिगाड़।
हम वहाँ हैं जहाँ से, हमको भी,
कुछ हमारी खबर नहीं आती।

नपुँसकता का प्रभाव केवल पुरुष पर ही नहीं होता। उस स्त्री की मानसिक दशा का अनुमान आसानी से लगाया जा सकता है जो कि काम तृप्ति के लिए अपना सब कुछ अपने पति को अर्पण कर देती है, लेकिन जब उसे पता चलता है कि पति तो सम्भोग में उसे सन्तुष्ट नहीं कर सकता तो उस बेचारी की क्या हालत होती होगी? कामवासना की पूर्ति या सन्तान उत्पत्ति की लालसा से विवश होकर वह स्त्री पराये पुरुष का सहारा भी ले सकती है, जिससे समाज में बदनामी होती है और एक अच्छा खासा स्वर्ग समान घर पुरुष की अपनी मूर्खता के कारण नरक बन सकता है।

नामर्द की मामूली पहचान

जिस पुरुष के यहाँ प्यारी और वशीभूत स्त्री हो, पर वह उससे नित्य मैथुन न कर सके, अगर कभी करे तो सांस चलने के मारे घबरा जाये, शरीर पसीना-पसीना हो जाये, इच्छा पूरी न हो, चेष्टा व्यर्थ जाये, लिंग ढीला और बीज रहित हो—जिस पुरुष में ऐसे लक्षण हों, वह नपुंसक या नामर्द है। दूसरे शब्दों में समझिये कि जो पुरुष अपनी मनचाही, प्यारी और वशीभूत स्त्री से मैथुन न कर सके, अगर कभी करे तो पसीने से तर हो जाये, हाँपने लगे, जननेन्द्रिय या लिंग तैयार न हो, चेष्टा करने

से भी सफलता न हो—वह मर्द नाम का मर्द है, वास्तव में नामर्द है।

नपुंसकता का एकमात्र कारण

यों तो नपुंसकता या नामर्दी के बहुत से कारण हैं, पर असली कारण वीर्य दोष है। "चरक" में लिखा है—नपुंसकता केवल वीर्यदोष से होती है। वीर्यदोष से पुरुष नपुंसक हो जाता है और वीर्य की शुद्धि से उसकी शुद्धि हो जाती है यानी वीर्य के शुद्ध और निर्दोष होने पर पुरुष, पुरुष हो जाता है अर्थात मैथुन करने में समर्थ हो जाता है। भाव-प्रकाश में लिखा है।

जो पुरुष स्त्री के साथ मैथुन नहीं कर सकता, उसे क्लीन—नपुंसक या हिजड़ा कहते हैं। क्लीव के भाव या धर्म को कलैव्य या नामर्दी कहते हैं। यह क्लीनता या नामर्दी सात तरह की होती है।

सात प्रकार की नामर्दी

(१) मानसिक कलैव्य—मन सम्बन्धी नामर्दी।
(२) पित्तज क्लैव्य—पित्त बढ़ने की वजह से हुई नामर्दी।
(३) वीर्यजन्य क्लैव्य—वीर्य के कारण से हुई नामर्दी।
(४) रोगजन्य कलैव्य—रोग की वजह से हुई नामर्दी।
(५) जिराच्छे जन्य क्लैव्य—वीर्यवाहिनी नसों के छेदने से हुई नामर्दी।
(६) शुक्र स्तम्भंन जन्य—क्लैव्य—मैथुन न करने से हुई नामर्दी।
(७) सहज कलैव्य—जन्म की या पैदायशी नामर्दी।

महर्षि चरक के मत से नपुंसकों के और चार भेद

महर्षि चरक ने नपुंसक चार तरह के माने हैं। जैसे—

(१) बीजोपघात क्लीव ।
(२) ध्वजभंग क्लीव ।
(३) जरासम्भव क्लीव ।
(४) वीर्य-क्षय क्लीव ।

(१) जो वीर्य में किसी तरह का विकार होने से मैथुन नहीं कर सकता उसे बीजोपघात क्लीव कहते हैं ।

(२) जो लिंग में सूजन, फोड़ा, फुन्सी वा और रोग होने से मैथुन नहीं कर सकता उसे ध्वजभंग क्लीव कहते हैं ।

(३) जो बुढ़ापे के कारण वीर्य क्षय होने से मैथुन नहीं कर सकता उसे जरासम्भव क्लीव कहते हैं ।

(४) जो पुरुष चिन्ता, भय और क्रोध आदि से वीर्य क्षय हो जाने के कारण मैथुन नहीं कर सकता । उसे वीर्य क्षय क्लीव कहते हैं ।

नपुंसक-चिकित्सा में ध्यान देने योग्य बातें

(१) अगर आपके पास कोई रोगी आये और अपने को कमजोर कहे, तो आप उसकी बारीकी से जाँच करें । ऐसा न हो कि आप रस रक्त और वीर्य आदि की कमी वाले को प्रमेह-नाशक दवा देने लगें और प्रमेह वाले को नपुंसकत्व नाशक । मतलब यह है कि रोगी की खूब परीक्षा करके चिकित्सा करनी चाहिए । अगर आपको ठीक तौर से यह मालूम हो जाए कि रोगी नपुंसक है तो इस बात का पता लगाइये कि सात तरह या चार तरह के नपुंसकों में से वह कौन-सा नपुंसक है । अगर आपका रोगी सहज क्लीव—जन्म का नामर्द अथवा नसें कट जाने से नामर्द हुआ हो या क्षय क्लीव हो तो आप चिकित्सा न कीजिए । अगर आप चिकित्सा करेंगे तो आराम तो होगा

नहीं बदनामी बेशक आपके पल्ले पड़ेगी। हाँ, इसके सिवा, बाकी रहे हुए प्रकारों के नपुंसक हों तो आप बेशक इलाज करें। जिसके पुरुष चिन्ह ही नहीं, उसका इलाज तो कदाचित धन्वन्तरि भी न कर सकें। पर, यदि, यथा योग्य पुरुष चिन्ह हों, नसें ठीक हों, ईश्वर की इच्छा, रोगी का पुण्य हो और सद्वैद्य मिल जाए तो कदाचित जन्म का नपुंसक भी चंगा हो सकता है। पर ऐसा प्रायः कभी ही होता है।

(२) अगर आपको मानस क्लैव्य के लक्षण जान पड़ें तो आप रोगी को तसल्ली दें और विश्वास दिलाएं कि तुझे कोई भी रोग नहीं है। तेरे मन का वहम मात्र है। अगर इतने से गुजर न हो तो आप उसके दिल दिमाग को ताकतवर बनाने का उपाय करें, क्योंकि दिल और दिमाग के बलवान होने से उसके दिल से वहम निकल जायेगा।

(३) अगर आपके रोगी को पित्तवर्द्धक आहार-विहारों से नामर्दी हुई हो तो आप ऐसे रोगी को शीतल और चिकनी औषधियाँ तजवीज करें, क्योंकि ठण्डी और चिकनी दवाओं से ही, पित्त के विकार शान्त होकर, सौम्य धातुओं की वृद्धि हो सकती है और बिगड़ी हुई की शुद्धि हो सकती है। जैसे—बिदारीकन्द में बिदारीकन्द की भावना देकर सेवन करवाइये। आमलों के सूखे चूर्ण में ताजे आमलों की रस की भावना देकर खिलाइए। पेठा पाक अथवा आगे लिखी आदि माजूम खिलाइए। साथ ही जिन पित्तकारक आहार-विहारों से रोग हुआ हो, उन्हें बन्द करवाइये, क्योंकि बिना कारणों के बन्द किए आराम नहीं हो सकता।

(४) अगर आपका रोगी वीर्य की कमी से नामर्द हो तो आप सबसे पहले उसके रोग के कारण बंद करें। रूखी-सूखी, गर्म

या नशीली चीजें सेवन करने से रोकें। इसके बाद बल-वीर्य बढ़ाने वाले दूध, रबड़ी, मावा, मलाई, बादाम का हलुआ, उड़द की खीर, उडद के लड्डू, असगन्ध पाक, मूसली पाक, आम्र-पाक, गोखरू पाक आदि सेवन करने की सलाह दें, पर धातु भस्म या प्रमेह नाशक दवा भूलकर भी न दें क्योंकि इस रोग में धातुओं की शुद्धि करनी पड़ती है और प्रमेह में मेह प्रभृति धातु दोष घटाने होते हैं।

(५) अगर आप का रोगी रोग जन्य क्लीव हो - किसी रोग के कारण से नामर्द हो, हस्तमैथुन, गुदामैथुन या पशुमैथुन से अपनी मैथुन शक्ति को खो बैठा हो तो पता लगाइये कि उसकी इन्द्रिय में क्या दोष है? अगर उसने हस्तमैथुन किया होगा तो उसकी इन्द्रिय में बांकपन होगा— वह आगे से मोटी और पीछे से पतली होगी, नीली नीली नसें चमकती होंगी, उसमें दूषित पानी भर गया होगा, इन्द्रिय में तेजी या चेतना न होगी। अगर लिंगेन्द्रिय में कोई विष या वाहियात तिला वगैरा लगाया गया होगा, तो लिंगेन्द्रिय पक गई होगी या सूख गई होगी या स्पर्श ज्ञात शून्य हो गई होगी अथवा शीतल हो गई होगी। आप अच्छी तरह पता लगाकर यथोचित उपाय करें। हम इन दोषों का नाश करने वाले अनेक तिले और लेप आदि आगे लिखेंगे। पर चन्द परीक्षित उपाय बतौर उदाहरण के यहाँ भी लिखते हैं। ध्यानपूर्वक देखिये और यथा आवश्यकता प्रयोग कीजिये।

नपुंसकता के लिये लगाने की दवा [१]

अकसीर-ए-आजिम तला

यह वह योग है जिसकी असंख्य चिकित्सक मुक्तकण्ठ से

प्रशंसा कर रहे हैं। इससे गुप्तेन्द्रिय को विकृति, छोटापन, पतलापन, वक्रता, आगे से मोटा और जड़ से पतला होना, सुस्ती, रगों का मृतप्रायः होना आदि विकार दूर होकर गिनती के दिनों में निराश से निराश रोगी को भी असीम शक्ति प्राप्त हो जाती है। अनेक बार का परीक्षित और अचूक तिला है।

योग—संखिया श्वेत १० ग्राम, मालकंगनी का तेल १०० ग्राम, मदार (आक) का दूध ३० ग्राम। पहले संखिया तथा मदार के दूध को भलीभाँति खरल करें। जब एक समान होकर सर्वथा खुश्क सा हो जाए तब मालकंगनी का तैल डालकर प्रचण्ड धूप में रख दें। एक दो दिन में सब तैल अलग हो जायेगा। इसको अत्यन्त सावधानी से निथार कर तैल मात्र को तोल लें और प्रति १० ग्राम के हिसाब से कस्तूरी दो रत्ती, लौंग, जायफल, जावित्री, वीरबहूटी, केंचुए शुष्क, श्वेत कन्नेर की जड़ की छाल, ३-३ रत्ती लेकर अति सूक्ष्म पीसकर मिला लो और १२ घण्टे तक भलीभाँति बलवान हाथों से खरल कराएं। बस अकसीरे आजम तिला बन गया। शीशी में सुरक्षित रखें।

प्रयोग विधि

उपरोक्त तिले में से तीन या चार रत्ती दवा लेकर अंगुली से गुप्तेन्द्रिय के ऊपर दोनों पार्श्वों (पहलुओं) पर भलीभांति मर्दन करें। परन्तु सुपारी और नीचे की सींवन पर लगने न पाये और फिर पान का पत्ता रखकर ऊपर मलमल की पट्टी बाँध दें। फिर दूसरे दिन उसी समय पट्टी खोलकर यथापूर्व तिला लगाकर नया पत्ता तथा नई पट्टी बाँधें, परन्तु गुप्तेन्द्रिय को न धोयें। इसी प्रकार प्रतिदिन स्तेमाल करते रहें। इससे किसी के २-४ दिन में और किसी के ८-१० दिन बाद इन्द्रिय पर लाल

लाल दाने दिखाई देंगे, उसी दिन से तिला लगाना बन्द कर दें और फिर गुप्तेन्द्रिय पर जला हुआ घी अथवा अच्छा हो कि चमेली का तेल लगाते रहें। कुछ दिन में यह दाने लुप्त हो जायेंगे, फिर १०-१२ दिन का अन्तर देकर इसी भांति तिला लगाना प्रारम्भ कर दें और दाने आदि निकल आने पर बन्द करके कुक्कुटांड तेल आदि लगाते रहें। इससे बाह्य विकार दूर हो जायेंगे। अत्यन्त अनूठा तिला है।

नपुँसकता के लिए लगाने की दवा (२)

यह लगाने वाली दवा भी फायदा करती है इसे भी कुछ दिनों तक लगानी चाहिए इसमें कोई जहरीली चीज नहीं पड़ती, जैसा कि पीछे वाले नुस्खे में है। उसे लिख तो दिया गया है पर जो सावधानी न बरत सकें वह उसे न बनाकर इसे बनायें या उसे ही बनाना हो तो किसी हकीमी या वैद्य की दवा वालों से बनवा लेवें।

पीछे वाली दवा की तरह इसमें वैसी कोई बात नहीं है। इसे इसके आगे के हर नुस्खे खतरे से खाली हैं याने कोई जहरीली दवा नहीं लिखी है इसमें।

दारचीनी ५ ग्राम, वीरबहूटी ३ ग्राम, लौंग ३ ग्राम, जायफल ५ ग्राम।

इन चीजों को खूब महीन पीसकर सरसों के २० ग्राम तैल में डालकर रख देवें और रात को इन्द्री पर लगायें, जरा मलें और छोड़ देवें। इसे कुछ दिनों तक करना चाहिए।

नपुंसकता के लिये लगाने की दवा (३)

जायफल ५ ग्राम, दारचीनी ३ ग्राम, लौंग ५ ग्राम, तेजपात २ ग्राम।

इन सब चीजों को कूटकर महीन कपड़े से छानकर २० ग्राम सरसों के तैल में डालकर रख देवें और दिन में दो बार इन्द्री पर मालिश करें। रात को चाहें तो ऊपर से कपड़ा लपेट देवें।

नपुंसकता के लिये लगाने की दवा (४)

१० ग्राम तेजपात को कूट कर १०० ग्राम पानी में डालकर खौलाइये और जब पानी १० ग्राम रह जाये तो छानकर उसमें २० ग्राम, सरसों का तैल डालकर आग पर रखकर पकावें और जब पानी जल जाए तो उसे उतारकर नीचे लिखी दवा पीसकर डाल देवें और काम में लावें।

उसमें पड़ने वाली दवा यह है

लौंग ३ ग्राम, दारचीनी ३ ग्राम, जायफल १० ग्राम, तेजपात १० ग्राम।

इन चीजों को कूट पीसकर कपड़छन करके ऊपर वाले तैल में डालकर इस्तेमाल करें यानी इसे इन्द्री पर दिन भर में दो बार लगाया करें कुछ देर तक मालिश कर सकें तो ज्यादा अच्छा है।

नपुंसकता के लिये लगाने की दवा (५)

कड़ुआ तैल (सरसों का) २० ग्राम में २ ग्राम रतन जोत डाल धीमी आँच में पकावें जब तैल पक जाए और उसका रंग एकदम से लाल हो जाए तो उसे उतार कर ठण्डा होने पर छान कर शीशी में रख लेवें और उसी तैल में ४ ग्राम कपूर डालकर रख देवें और दूसरे दिन से इस्तेमाल करें इसे भी दिनमें दो बार या सिर्फ रात में, इन्द्री पर पांच मिनट तक मालिश करना चाहिए।

नपुंसकता के लिये लगाने की दवा (६)

जायफल २ नग, लोंग २५ नग, दारचीनी ३ ग्राम, तेजपात १० ग्राम। इन सबको कूटकर महीन कपड़े से छानकर रख लेवें और फिर सरसों का तैल २० ग्राम को आग पर चढ़ा देवें और जब वह गर्म हो जाये तो उसमें ५ ग्राम मोम डाल देवें और मोम के डल जाने पर उसे उतार लेवें और तब उसमें पिसी दवा डालकर खूब मिला देवें और फिर शीशी में रख देवें।

इस मलहम को दिन में १-२ बार व रात में सोते समय एक बार मालिश करना चाहिए। अगर रात में ५ मिनट प्रति दिन मालिश करें तब भी ठीक है।

नपुंसकता के लिए लगाने की दवा [७]

तेजपात १० ग्राम, दाल चीनी १० ग्राम, इन दोनों सामानों को कूट कर १०० ग्राम पानी में पकाकर जब पानी १० ग्राम रह जाए तो उसे छानकर उसमें २५ ग्राम सरसों का तेल डाल कर पका डालें और जब पानी जल जाय तो उसे छान कर उसी में ७-ग्राम मोम डाल कर फिर आग पर रख देवें और जब मोम गल जाये तो उतार कर उसमें नीचे लिखी दवा की बुकनी डाल देवें।

जायफर १० ग्राम, लौंग २ ग्राम, जावित्री ५ ग्राम। इन तीनों को बारीक मैदा की तरह करके उसी में डाल कर चला देवें और ठन्डा हो जाने पर किसी शीशी में निकाल कर रख देवें।

बस तैयार है। अब इसे इस्तेमाल करें। दिन में १-२ बार और रात्रि में एक बार मालिश कर दिया करें।

हस्त मैथुन द्वारा लिंग की विकृति पर

हस्त मैथुन द्वारा इन्द्री टेढो मेढ़ी हो जाती हैं या कभी सम्भोग में भी उसमें ठेस लग जाती है तो दर्द सा हो जाता है। उस हालत में यह दवा फायदा पहुंचायेगी।

हल्दी १० ग्राम, आमा हल्दी ५ ग्राम। दोनों चीजों को पानी में पीस कर १०० ग्राम पानी में पकावें और जब आधा पानी जल जाये तो उसमें ५० ग्राम सरसों का तेल डाल कर धीमी आँच पर पका डालें। जब पानी बिल्कुल जल जाए तो उसे उतार कर छान लेवें। फिर छाने तेल में रतनजोत ५ ग्राम डाल कर धीमी आँच पर पाँच मिनट पकावें। तब तेल का पीलापन दूर होकर लाल हो उठेगा। तब उसे उतार कर छान लेवें और फिर उसमें नीचे लिखा सामान पीस कर रक्खे रहें उसे मिला देवें।

जायफल ५ ग्राम, जावित्री ५ ग्राम, अकरकरहा ५ ग्राम, दाल चीनी ५ ग्राम, लौंग ५ ग्राम। इन सब चीजों को खूब बारीक मैदा की भाँति करके तब मिलावें जिससे मालिशके समय कर घाव न कर दे।

इसे दिन में २ बार रात में एक बार इन्द्री पर मालिश करनी चाहिए।

नपुंसकता में खाने को पहली दवा

यह दवा यानि औषधि हर महीना में खाई जा सकती है। इसमें जाड़े की कोई बात नहीं है। चाहे जब इस्तेमाल की जा सकती है।

मुरब्बा सेव ५० ग्राम, मुरब्बा आँवला १० अदद, मुनक्का ५० ग्राम, गुलकन्द ५० ग्राम। इन चारों को मुनक्का का बीया

निकाल कर पानी में पीस डालें और ५०० ग्राम चीनी ३५० ग्राम पानी डाल कर शीरा बना लेवें और फिर ऊपर लिखी दवा याने मुरब्बा इत्यादि डाल देवें।

तवासीर (बंसलोचन) ७ ग्राम, छोटी इलायची का दाना ५ ग्राम, तालमखाना ८ ग्राम, बीज बन्द ८ ग्राम, दक्खिनी मूसली २० ग्राम, सतावर १० ग्राम।

इन सब को पीस कर छान लेने के बाद ऊपर वाले शीरे में डाल देवें। इसके बाद उसे खूब मिला कर उतार लेवें और शीशे के बर्तन में ठन्डा हो जाने पर रख देवें और इस्तेमाल करें। मात्रा—७ ग्राम दूध के साथ, पहले एक बार फिर दोनों वक्त।

नपुंसकता में खाने की दूसरी दवा

मुरब्बा सेव ५० ग्राम, मुरब्बा आँमला ५० ग्राम, मुनक्का ५० ग्राम, बादाम २० ग्राम, चिलगोजा २० ग्राम।

इन सब चीजों को पानी में पीसकर रख देवें और फिर ५०० ग्राम चीनी में ३०० ग्राम पानी डालकर शीरा बनावें, बन जाने पर उसी में ऊपर का सामान डाल दें।

मात्रा ७ ग्राम से १० ग्राम तक दूध के साथ खाना चाहिए। पहले एक वक्त फिर दोनों वक्त याने सुबह व शाम।

नोट—इस दवा को सितम्बर से मार्च तक खाया जा सकता है, कोई हर्ज नहीं है।

नपुंसकता की चौथी दवा

प्याज का रस १०० ग्राम, चीनी ५०० ग्राम में मिला कर उसमें १५० ग्राम पानी मिला कर शीरा बना लेवें। फिर उसी में २५० ग्राम शहद डालने के बाद चला कर नीचे लिखी दवा-

इयाँ जो पहले से कूट पीस और छान कर रक्खी रहें, इनमें मिला देवें।

तोदरो सफेद १० ग्राम, बहिमन सफेद १० ग्राम, जंजबील याने सोंठ १० ग्राम, तुखम सलजम १० ग्राम, मूसली सफेद ५ ग्राम, तोदरी सुर्ख १० ग्राम, सालिब मिश्री १० ग्राम, तुखम प्याज १० ग्राम, तुखम गंदना १० ग्राम, मूसली स्याह १० ग्राम तुखम तुर्वं १० ग्राम, लौंग २ ग्राम, दाल चीनी १० ग्राम।

मात्रा—५ ग्राम सुबह को दूध के साथ खाना चाहिए, पहले सुबह फिर दोनों वक्त।

नोट—इसे नवम्बर से फरवरी तक खाना चाहिए।

ताकत के लिए माजून

सालिब मिश्री १० ग्राम, मूसली स्याह १० ग्राम, मूसली सेमर १० ग्राम, सतावर १० ग्राम, मूसली सफेद ५ ग्राम, सकाकुल मिश्रीं ५ ग्राम, वहिमन सुर्ख ५ ग्राम, बहिमन सफेद ५ ग्राम मग्ज तुखम तमर हिन्दी ७ ग्राम, बीज बन्द १० ग्राम, मस्तगी रूमी १० ग्राम, मोचरस ५ ग्राम, कतीरा १० ग्राम, ताल मखाना १० ग्राम, निसासता गन्दुम १० ग्राम, माजू १० ग्राम, कमरकस १० ग्राम, समुद्र अरवी १० ग्राम, तबासीर ५ ग्राम, दाना इलायची खुर्द ५ ग्राम।

इन सब सामानों को साफ सुथरा करके कूट कर महीन छनती से छान कर रख दीजिए और ७०० ग्राम चीनी में ५०० ग्राम पानी डाल कर शीरा बनने को रख दीजिए और जब शीरा बनकर तैयार हो जाए तो उसी में कुटी हुई दवा डालकर चला दीजिए। इसके बाद उसे नीचे उतार कर उसमें २५ नग चाँदी का वर्क एक-एक करके डालते जाइये और चलाकर उस

में मिलाते जाइये। इसी प्रकार सब वर्क मिला चुकें तो फिर किसी बर्तन में निकाल कर रख दीजिए।

मात्रा—५ ग्राम से ७ ग्राम तक दूध के साथ खाना चाहिये, इसे दोनों वक्त भी खा सकते हैं।

मर्दाना कमजोरी को दूर करने और बूढ़ों को जवान बनाने वाली चमत्कारी दवा

ईरान के प्रसिद्ध चिकित्सक हकीम उमर शीरा जी ने अपनी एक पुस्तक में एक सच्ची और रोचक कहानी लिखी है। आप लिखते हैं कि एक दिन मैं एक ग्राम से गुजर रहा था। मुझे एक बूढ़ा मिला जिसका चेहरा गुलाब के फूल की भांति गुलाबी और सुन्दर था। वह जवान और ताकतवर दिखाई देता था। उसके साथ एक सुन्दर जवान स्त्री थी। मुझे प्यास लगी थी। मैंने उनसे पानी मांगा। उसने मुझे बड़े प्रेम से पानी पिलाया। वह हँसमुख था। हम एक दूसरे से विभिन्न विषयों पर बातचीत करने लग गए। बातों २ में मैंने उनसे पूछा कि यह स्त्री कौन है। बूढ़े ने उत्तर दिया कि यह मेरी स्त्री है। मेरी दो और भी स्त्रियां हैं। उसने बताया कि मेरी आयु १०४ वर्ष की है। उसने अपने बचपन का वृतान्त बताते हुए कहा कि मैं छोटी आयु में बहुत कमजोर था और चल फिर नहीं सकता था। संयोगवश मुझे एक साधु मिला उसको मेरी हालत देखकर बहुत दुख हुआ। उसने मुझे सिम्बल वृक्ष की जड़ खाते रहने का आदेश दिया। मैंने इस वृक्ष की जड़ को काटकर छाया में सुखा और कूटकर कपड़े में छान लिया और उसमें मधु मिलाकर एक से डेढ़ तोला प्रतिदिन प्रातः समय खाने लग गया और इस

को दो वर्ष तक खाता रहा, जिससे मेरी शारीरिक और मानसिक शक्ति बहुत बढ़ गई और मैं अपने शरीर में नई जवानी और ताकत प्रतीत करने लग गया और अब तक इस दवा को हर रोज खा रहा हूं। मेरे एक लड़के की आयु ५० वर्ष की है। वह भी इस दवा को दो वर्ष तक खाता रहा जिससे उसकी दाढ़ी के सफेद बाल जड़ों से काले हो गए और वह भी ताकतवर हो गया।

पाकिस्तान के प्रसिद्ध स्वर्गीय हकीम मुजफ्फर हुसैन ऐवान अपनी पुस्तक किताब-उल-अदविया (यूनानी मेटेरिया मेडिका) में सिम्बल के लाभ इस प्रकार लिखते हैं। सिम्बल की ताजा जड़ गाजर की भांति नर्म होती है। यह गरम तर, मर्दाना, शारीरिक और मानसिक शक्ति को बढ़ाती है। वीर्य बहुत अधिक मात्रा में पैदा करती और पतले वीर्य को गाढ़ा बनाती हैं। शीघ्रपतन को दूर करने का इसमें विशेष गुण है और संभोग के शौकीन के लिए सर्वश्रेष्ठ दवा है। ताकत की कोई ऐसी दवा नहीं है जिसमें इसको न डाला जाता हो। इसको निरन्तर खाते रहने से मनुष्य मोटा ताजा हो जाता है बुढापे में जवान बना रहता है और ७०-८० वर्ष की आयु में नई शादी कर सकता है। शरीर में जठराग्नि को बढ़ाती है। इसको निरन्तर खाते रहने से बूढ़े मनुष्य भी जवान बन जाते हैं और सफेद बाल जड़ों से काले हो जाते हैं इसकी मात्रा ६ माशा से १ तोला है। इसका पाउडर मधु या खांड में मिलाकर या पानी से दिन में एक दो बार खा सकते हैं।

नपुंसकता के लिए सरल योग

(1) ढ़ाक का १ बीज, तिल व शक्कर के साथ रोजाना सेवन से

शक्ति बढ़ती है। चालीस दिन तक ब्रह्मचर्य का पालन करें।

(2) शंखपुष्पी, रतनजोत हरी थोड़ी काली मिर्च व कच्ची खांड के साथ ठण्डाई की भाँति गर्मी के दिनों में पीसकर सेवन करने से वीर्य वृद्धि होती है।

(3) गोखरू दोनों तरह का (छोटा बड़ा), शतावर, वानरी, नागबला, अतिबला। इनका चूर्ण बनाकर गाय के दूध में बूरा मिलाकर सेवन करने से वीर्य की वृद्धि होती है। परन्तु कब्ज नहीं होनी चाहिए।

(4) जामुन के हरे पत्ते (कौंपल) दस बारीक पीसकर प्रातः ताजा पानी से दस दिन तक सेवन करने से पेशाब में शुगर का जाना रुक जाता है।

(5) वेलपत्र १ तोला बारीक करके नित्य एक मास तक सेवन करने से भी धातु का जाना रुक जाता है।

(6) सफेद प्याज का रस ८ ग्राम, अदरक का रस ६ ग्राम और घी ३ ग्राम—इन चारों को मिलाकर दो मास तक सेवन करने से नामर्द भी मर्द हो जाता है। परीक्षित है।

(7) प्याज का रस ६ ग्राम, घी चार ग्राम और शहद ३ ग्राम मिलाकर आधा किलो गरम दूध के साथ दो माह खाने से खूब वीर्य बढ़ता है और नपुंसकता को आराम हो जाता है।

(8) प्याज का रस ६ ग्राम, घी ४ ग्राम और शहद ३ ग्राम—इनको मिलाकर सवेरे शाम पियें और सोते समय २ ग्राम शतावर और २४ ग्राम मिश्री डालकर औटाया हुआ दूध पीजिए, अपूर्व चमत्कार दिखाई देगा। नामर्दी का रोग मिट जाएगा। परीक्षित है।

(9) मोचरस का चूर्ण ६ ग्राम, और मिश्री ४८ ग्राम। इन दोनों

को गाय के दूध में मिलाकर लगातार २-३ महीने तक पीने से स्वप्नदोष दूर होकर वीर्य खूब बढ़ता है। परीक्षित है।

कोंच के वीचों का चूर्ण ६ ग्राम, तालमखानों के बीजों का चूर्ण ६ ग्राम, और मिश्री १२ ग्राम। इन तीनों को मिलाकर फाँकने से और ऊपर से धारोष्ण दूध पीने से बल वीर्य बढ़ता है और वीर्य कम नहीं होता। यह उत्तम वाजीकरण योग है।

१२ ग्राम बिदारीकन्द को मिलाकर पीसकर लुगदी बना लीजिए। इसे मुंह में रखकर ऊपर से १२ ग्राम मिश्री मिला कर दूध पीने से खूब बल वीर्य बढ़ता है। साल दो साल लगातार सेवन करने से बूढ़े भी जवान हो सकते हैं।

धातु पुष्टि खीर

नपुंसकता और वीर्य-रोगों के शिकार युवकों के लिए एक चमत्कारी औषधि

खुराक की खुराक और दवा की दवा

धोई उड़द की छाल, सिल पर जल के साथ पीस लीजिए और फिर कड़ाही में घी डालकर भून लीजिए। जब लाल हो जाये तो उतार लीजिए। पीछे औटते दूध में इस भूनी हुई दाल को छोड़कर, मन्दी आग से पकाइये। जब खीर-सी हो जाए उसमें मिश्री पीसकर मिला दीजिए और चांदी या काँसी की थाली में परोस कर थोड़ी सी सवेरे खाइए। यह गरिष्ठ और भारी है। ज्यों ज्यों पचती जाए खुराक बढ़ाते जाइये। इस खीर के ४० दिन तक लगातार खाने से बल वीर्य बढ़ता है और शरीर पुष्ट होता है।

सेमल की मसीहाई

सेमल के पेड़ की छाल के २४ ग्राम रस में, २४ ग्राम मिश्री मिलाकर खाने से सात दिन में वीर्य का समुद्र बन जाता है। यह एक अद्‌भुत योग है।

बिदारीकन्द का चूर्ण

बिदारी कन्द के चूर्ण को घी, दूध और गूलर के रस के साथ पीने से बूढ़ा भी जवान हो जाता है।

बिदारी कन्द को कूट-पीसकर छान लीजिए। इसमें से १२ ग्राम चूर्ण को गूलर के स्वरस में मिलाइए और चाट लीजिये। ऊपर से दूध में घी मिलाकर पीजिए इस योग से अद्‌भूत चमत्कार देखने में आयेगा यानी नामर्द मर्द हो जाएगा। और मर्द सेवन करे तो उसका कहना ही क्या है।

आमलों की मसीहाई

वह योग जिससे धातु के रोग नष्ट होकर, बल-पुरुषार्थ बढ़ता है

आमले कूट-पीस कर छान लीजिये। फिर आमलों का स्वरस निकाल कर, सूखे हुए आमलों के चूर्ण को डुबो दीजिए और सूखने दीजिए। इस तरह सात दिन ताजा आमलों का रस निकाल-निकाल कर चूर्ण को भिगोइए और सुखाइए। यह सात भावनाएं हुई। इस सूखे हुए चूर्ण में से बलाबल अनुसार १२ ग्राम या २४ ग्राम चूर्ण को १२ ग्राम घी और ६ ग्राम शहद में मिलाकर चाटिये और ऊपर से २५० ग्राम दूध पीजिए।

मात्रा—इसकी मात्रा ३६ ग्राम है।

गुण—इस योग से धातु के रोग नष्ट होकर खूब बल वीर्य बढ़ता है ।

परहेज—गरम, चरपरे, खट्टे, नमकीन पदार्थ अधिक न खाइयेगा ।

बिदारीकन्द का चूर्ण

सूखा विदारीकन्द लाकर कूट पीसकर छान लीजिए। ताजा विदारीकन्द लाकर, उसे सिल पर पीसकर, कपड़े में निचोड़ कर, रस निकाल लीजिए। रस इतना हो, जितने में सूखे विदारीकन्द का चूर्ण डूब जाए। उस रस में विदारीकन्द के चूर्ण को डुबो दीजिए और सुखा लीजिए। अगले दिन फिर ताजा विदारीकन्द का रस निकालकर, उसमें सूखे हुए बिदारीकन्द के चूर्ण को डुबोकर सुखा लीजिए। इस तरह सात दिन तक कीजिए, फिर भली-भांति सुखा लीजिए। इस भावना दिए हुए चूर्ण में से १२ ग्राम चूर्ण लेकर, ६ ग्राम घी और ६ ग्राम शहद में मिलाकर चाटिए।

इस नुस्खे से धातु रोग दूर होकर खूब बल पुरुषार्थ बढ़ता है।

धातु-पुष्ट चूर्ण

जिसके प्रयोग से बेइन्तहा बलवीर्य बढ़ता है

द्रव्य तथा निर्माण विधि—

गोखरू, तालमखाने, शतावर, कौंच के बीजों की गिरी, बड़ी खिरंटी और गंगरेन। इन सबको बराबर वचन में लेकर कूट पीस और छानकर चूर्ण बना लीजिए।

सेवन विधि—प्रातः ६ ग्राम से लेकर १२ ग्राम चूर्ण फांककर ऊपर से गर्म दूध पी लीजिए।

गुण—बल वीर्य बढ़ाने के लिए एक अद्‌भुत औषधि है।'

हस्त मैथुन से पैदा हुई नपुंसकता का एक अनोखा इलाज

यह नुस्खा उन युवकों के लिये है जो कि हस्तमैथुन की बुरी आदत से अपना सब कुछ लुटा बैठे हों, जादू का-सा काम करता है।

सूखे सिंघाड़े और मखाने की ठुर्री, दोनों को बराबर-बराबर लेकर कूट पीस और छान लीजिए। मात्रा ६ ग्राम की है। हर मात्रा में बराबर की पिसी हुई मिश्री मिलाकर खाने से और ऊपर से गाय का धारोष्ण दूध ढाई सौ ग्राम पीने से निश्चय ही धातु बढ़ती है और धातु गाढ़ी होती है। जो तीन मास सेवन करेंगे उनकी नामर्दी भी दूर हो जाएगी और शक्ति भी खूब बढ जायेगी।

एक धातु पुष्ट करने वाला अद्वितीय टोटका

भुने हुए चनों की दाल ६ ग्राम और बादाम ६ ग्राम, दोनों को मिलाकर सुबह शाम खाने से निश्चय ही वीर्य पुष्ट होता है।

नोट—ज्यों-ज्यों पचने लगे मात्रा बढ़ाते जायें लेकिन अति न करें।

(२)

चिलगोजों की मींगी तीन ग्राम और मुनक्का ६ ग्राम। दोनों को रात के समय जल में भिगो दीजिये और प्रातः चीनी मिलाकर खाइये। इस नुस्खे के कुछ दिनों के प्रयोग से नामर्दी दूर होकर वीर्य पुष्ट हो जाता है।

(३) ऊँटकटारे की जड़ को छील २० ग्राम लेकर कुचल लीजिये और एक कपड़े में बांधकर पोटली बना लीजिये। बाद में आधा किलो दूध में आधा किलो पानी मिलाकर कड़ाही में चढ़ा दीजिये। नीचे मन्दी आग जलने दीजिये। अब कड़ाही में उपरोक्त पोटली इस प्रकार लटका दीजिये कि पोटली दूध के भीतर रहे। औटते दूध में दो छुहारे भी डाल दीजिए। जब पानी जलकर दूध मात्र रह जाए, पोटली को अलग कर दीजिए और मिश्री मिलाकर दूध पी लीजिए। इस योग के ४० दिन सेवन करने से धातु खूब ही पुष्ट होती है।

(४)

७८ ग्राम असगन्ध कूट छानकर एक किलो दूध में डालकर औटाइये। जब औट जाये तो बारीक पिसी हुई मिश्री मिला कर प्रातः सायं सेवन कीजिए वीर्य और बल बेहद बढ़ेगा।

खूब औटे हुए दूध का खोया बन जाएगा। उस खोये में से केवल २४ ग्राम की मात्रा सवेरे और २४ ग्राम की मात्रा सायं सेवन करनी चाहिए।

खरबूजे के बीजों की मींगी ६ ग्राम और मिश्री ६ ग्राम मिलाकर खाने से २-३ मास में शरीर खूब पुष्ट होता है। गरीबों के लिए यह बड़ी अच्छी दवा है।

धातु पुष्ट बर्फी

द्रव्य तथा निर्माण विधि—

खरबूजे की मींगी	१२० ग्राम
सफेद मूसली	१२० "
पेठा	१२० "

घृतकुमारी के पट्ठे — २ नग
कबाब चीनी — ६ ग्राम

इन सबको तैयार कर लीजिए। घृतकुमारो का गूदा निकाल कर मथ लीजिए। पेठे और घृतकुमारी को घी में भून लीजिए। फिर आधा किलो मिश्री की चाशनी बनाकर उसमें १२५ ग्राम खोआ और इन सब चीजों को मिला दीजिए पीछे कतली कर रख दीजिए।

मात्रा—१२ ग्राम।

यह नुस्खा उत्तम प्रकार का है। पित्त प्रकृति या गरम मिजाज वालों को तो अमृत ही है। गिरते हुए वीर्य को तत्काल रोक देता है और उसे खूब पुष्ट करता है। इसे गरमी के मौसम में भी प्रयोग कर सकते हैं।

माजून मुक्कवी बाह

गरम मिजाज या पित्त प्रकृति वालों के लिए अनुपम भेंट

द्रव्य तथा निर्माण विधि—

आधा किलो लहसन लाकर ४ किलो दूध में डाल दीजिए और आग पर मन्दाग्नि से औटाइये। जब सारा दूध जल जाए, उस लहसन मिले खोये को आधा किलो घी में भूनिए। फिर उतार कर शहद में माजून बना लीजिए। इसका सेवन करने से गरम मिजाज या पित्त प्रकृति वालों का वीर्य खूब पुष्ट और बलवान होता है। फालिज और लकवे वालों को भी यह माजन खूब गुण करती है।

अपना बलाबल देखकर इसकी मात्रा नियत कर लीजिए।

बाजीकरण शक्ति वर्धक पाक

इस पाक को एक महाशय शरद ऋतु में बड़े २ धनियों तथा प्रतिष्ठित जनों के लिए बनाया करते थे और उन्हें यह पाक प्रति वर्ष चार पाँच सौ किलो बनाना पड़ता था, क्योंकि यह पाक बाजीकरण शक्ति बढ़ाने में अकसीर प्रभाव प्रदर्शक हैं।

योग—दारचीनी, केशर, कालीमिर्च, पिप्पली, कुलिंजन, सोंठ, बहमन श्वेत, तोदरी दोनों, लौंग जावित्री, जीरक श्याम, जीरक श्वेत, कपूर कचरी, छड़ीला बालछड़ प्रत्येक २०-२० ग्राम। तज, शकाकुल छोटी इलायची के बीज, शतावर प्रत्येक २०-२० ग्राम। तज, शकाकुल, छोटी इलायची के बीज शतावर प्रत्येक ३० ग्राम। बादाम की गिरी छिली हुई ६०० ग्राम द्राक्ष (किशमिश) अखरोट की मींगी सौ-सौ ग्राम, नारियल की गिरी पिस्ते की गिरी, आटा प्रत्येक २ सौ-२ सौ ग्राम। श्वेत तिल २ सौ ग्राम, मधु विशुद्ध १ किलो बीकानेरी मिश्री १ किलो, घी १ किलो। प्रसिद्ध विधि विधि से पाक बनालें।

मात्रा—२० से ४० ग्राम तक।

गुण—बाजीकरण, शक्तिवर्धक, हृदय तथा मस्तिष्क, यकृत वृक्कों की शक्तिदायक, वीर्योत्पादक, पाचक, रंग को सुन्दर बनाने वाला, जोड़ों की पीड़ा तथा कई एक कफ जनित रोगों को दूर कर देता है।

सूचना—जिस पुरुष की प्रकृति गरम हो उसके लिए यह पाक अधिक लाभदायक नहीं। उसके लिए निम्नलिखित पाक बनाये।

स्वादिष्ट पाक

यह पाक चित को आनन्द देता तथा प्रमेह को दूर करता है स्तम्भक तथा बाजीकरण शक्तिवर्धक है। कुछ दिन सेवन करने से खोई हुई शक्ति पुन: लौट आती है।

योग—शकाकुल मिश्री सालिब मिश्री, बहमन श्वेत, बहमन रक्त, तोदरी दोनों, तुख्म हालों, तुख्म बालगू सिंघाड़े का आटा कमरकस प्रत्येक दस-दस ग्राम। बादाम। बादाम की मींगी ५० ग्राम, कद्दू की मींगी ३० ग्राम, बनारसी आमले का मुरब्बा ५० ग्राम, मिश्री सब औषधियों से द्विगुण।

विधि—मिश्री को पकाकर इसमें पहिले मुरब्बे घोटकर मिलालें और फिर सब औषधियाँ सम्मिलित करदें।

मात्रा—१० से २० ग्राम तक।

सूचना—यदि हो सके तो इस पाक में मोती ५ ग्राम, अम्बर ३ ग्राम चांदी के वर्क १ दफ्तरी भी मिला दें। इससे इसकी शक्ति और भी अधिक बढ़ जाएगी।

शीघ्रपतन नाशक बाजीकरण पाक

यह एक अत्यन्त वाजीकरण पाक है इसके अतिरिक्त प्रमेह स्वप्नदोष तथा शीघ्रपतन को दूर करके वीर्य को खूब गाढ़ा बना देता है। खोई हुई शक्ति को पुन: लाना यौवन की उमंगें तथा तरंग उत्पन्न करना इसका पहिला काम है। हमारी फार्मेसी में प्रतिवर्ष हजारों रुपये का बिकता है।

योग—गोखरू दक्षिणी आधा किलो सूक्ष्म पीसकर कपड़-छन कर दूध में डालकर अग्नि पर रखकर खोया कर लें। जब खोया तैयार हो जाय तब निम्नलिखित औषधियाँ मिलाकर तैयार कर लें।

जायफल, जावित्री, लौंग, तेजपात, छोटी इलायची के बीज रूमी मस्तगी, श्वेत मूसली प्रत्येक १० ग्राम। इन सब औषधियों को सूक्ष्म कूट पीस कपड़छन करलें। फिर खोये को आधा किलो घी में भून लें। जब कुछ लाल सा हो जाये तब नीचे उतारकर औषधियां मिला दें और २ किलो मिश्री की चाशनी बनाकर उसमें खोया मिलादें। ५ ग्राम केशर को थोड़ से पानी के साथ खरल में सूक्ष्म घोट कर मिला दें। पाक बन जाएगा।

मात्रा— २० से ४० ग्राम तक। जो महाशय सेवन करेंगे वह प्रसन्न हो जायेंगे।

बाजीकरण रसायन

यह औषधि पाचनशक्ति को अति तीव्र करती है और बाजीकरण शक्ति में इतनी वृद्धि करती है कि उसको देखकर रोगी को आश्चर्य होता है। अपितु इसके ४० दिवस के अनवरत सेवन से वृद्ध युवा दिखाई देने लगता है। आप इस औषधि को सेवन करने से पहिले अपने शरीर को तोल लें और फिर ४० दिन के अनवरत सेवन के पश्चात शरीर पुनः तोलकर देखें तो आश्चर्यजनक परिवर्तन प्रतीत होगा।

एक प्रसिद्ध तथा विख्यात फार्मेसी में यह दवा सहस्रों रुपयों की प्रतिवर्ष बिकती है। यदि आपको उस फार्मेसी के नाम से परिचित करा दिया जाये तो निःसन्देह आप फूले न समायें। परन्तु हम किसी के व्यापार को हानि पहुंचाना चाहते हैं।

योग—शिंगरफ भस्म शुद्ध, १० ग्राम, उत्कृष्ट फौलाद भस्म ५० ग्राम मृग शृंग भस्म १० ग्राम कुक्कुटाण्डत्वक भस्म २० ग्राम प्रवाल भस्म १० ग्राम सब औषधियों को कंघी (महाबला)

बूटो के ६०० ग्राम रस में खरल करें। जब नितांत सूक्ष्म चूर्ण बन जाये तब शीशी में सुरक्षित रखें।

मात्रा —२ रत्ती प्रातः २ रत्ती सायं मक्खन अथवा मलाई में खिलाया करें।

बाजीकरण शक्ति बढ़ाने तथा पुरुषत्व प्राप्त करने के लिए

स्वप्रस्तावित अमीराना योग

यह योग बहुत बहुमूल्य पदार्थों से बनता है अतः विशेषकर धनिकों के काम की वस्तु है। जिसको भगवान ने धन वैभव प्रदान किया है, वह अवश्य बनाकर सेवन करें। ईश्वर ने चाहा तो कुछ दिनों के सेवन मात्र से ही वस्तुतः अपने शरीर तथा शक्ति में प्रबल परिवर्तन पायेंगे। घी दूध जितना खायेंगे सब पचकर शरीर पुष्ट बन जायेगा। यह अत्यन्त प्रभाव प्रदर्शक औषधि है।

योग—सिंगरफ भस्म, स्वर्ण भस्म, अकृत्रिम मोती, विशुद्ध कस्तूरी, अम्बर अशहब, केशर उत्तम प्रत्येक १०-१० ग्राम। सब औषधियों को पान के रस में खरल करें। जब घोटते २ आधा किलो पान का रस प्रविष्ट हो जाये तबसुखाकरसुरक्षित रखें।

मात्रा—एक रत्ती प्रातः एक रत्ती सांयकाल मलाई में लपेट कर खिलायें और ऊपर से उष्ण दूध पिलायें। दिन प्रतिदिन उत्तमांग पुष्ट होकर बाजीकरण शक्ति आशा से अधिक बढ़ जायेगी। स्वर्ण भस्म तथा शिगरफ भस्म बनाने की विधि नीचे पढ़ें और उस विधि से बनालें।

कस्तूरी आदि बटी

बहुधा इस प्रकार की औषधियाँ ऐसी हुआ करती हैं कि

उन्हें जब तक सेवन करते रहो शरीर में बल और शक्ति का अनुभव होता रहता है और औषधि छोड़ देने के कुछ दिन बाद फिर वही पूर्वावस्था उत्पन्न हो जाती है, किन्तु इन गोलियों में यह विशेषता है कि इनका गुण चिरस्थाई होता है। इसके सेवन से हृदय, मस्तिष्क, आमाशय और यकृत तथा वृक्कों की दुर्बलता धीरे २ दूर होकर पुरुषत्व शक्ति में आश्चर्यजनक वृद्धि हो जाती है। विशेषता यह है कि प्रमेह और स्वप्नदोष के रोगियों को हानि की बजाय लाभ पहुंचाती है।

योग—रजत भस्म ३० ग्राम, स्वर्ण भस्म १० ग्राम, कस्तूरी नेपाली २० ग्राम, केशर कशमीरी ४० ग्राम, छोटी इलायची के बीज ५० ग्राम जायफल ६० ग्राम, बन्सलोचन असली ७० ग्राम जावित्री ८० ग्राम। सबसे पहले केशर को सूक्ष्म पीसकर फिर कस्तूरी मिलाकर खरल करें, तदपश्चात भस्में और उक्त औषधियों का सूक्ष्म चूर्ण मिलाकर तीन दिन तक बकरी के दूध में खरल करें उसके बाद ३ दिन तक पानी रस में खरल करके दो-दो रत्ती की गोलियाँ बना लें।

मात्रा—प्रातः सायं एक-एक गोली १५ ग्राम मधु में ६ ग्राम पान का रस मिलाकर इस अनुपान से सेवन करायें। ऊपर से आधा किलो तक दूध पिलाना चाहिए। भोजन में भी मक्खन आदि पौष्टिक पदार्थ खाना आवश्यक है। वीर्य की अल्पता, प्रमेह और नपुंसकता के लिए असीम लाभदायक सिद्ध होती है।

पीपल की मसीहाई

"इलाजुलगुर्बा" का एक प्रसिद्ध योग

जो कि

वीर्य पुष्ट करने के अलावा और कई भीतरी रोगों को भी नष्ट करता है

द्रव्य तथा निर्माण विधि—

एक किलो पीपल लाकर दो किलो दूध में औटाइये जब दूध सूख जाए, पीपलों को सुखा लीजिए। सूखने पर पीस छानकर लीजिए। इसमें से बलाबलनुसार मात्रा लेकर, उसमें ६ गुनी मिश्री मिलाकर खाइये और ऊपर से दूध पी लीजिए। इसका सेवन करने से शरीर बलवान होता है। "इलाजुलगुर्बा" में तो लिखा है—२० माशा पीपलों के चूर्ण में दस तोला मिश्री मिलाकर खाओ और दूध पीजिए पर हमने पीपल के ३-४ माशे चूर्ण में ६ गुनी मिश्री मिलाकर रोगियों को शुरू कराया और ६ माशा तक ले गए। कई रोगियों को दो महीने में ही खासा फायदा हुआ। वीर्य पुष्ट होने के अलावा कई भीतरी रोग भी नष्ट हो गए।

अथवा

२५० ग्राम पीपल को दो किलो दूध में औटाइये। जब आधा किलो दूध बाकी रह जाए, तब पीपल को निकाल कर सुखा लीजिए, सुखाइये और पीस छान लीजिए। उस पीपल के दूध का खोया बना लीजिए। पीछे पीपल के पिसे-छने चूर्ण और खोये को घी में भून लीजिए। फिर दो किलो चीनी की चाशनी में चूर्ण और खोये को डालकर बर्फी बना लीजिए।

मात्रा—१२ ग्राम ।

अनुपान—मिश्री मिला दूध ।

नोट :—पीपलों के चूर्ण के बराबर मिश्री मिलाकर ६ ग्राम की मात्रा में फाँकने और ऊपर से दूध पिलाने से भी बेहद बल-वीर्य बढ़ते देखा है ।

धांतु पुष्ट चूर्ण

धातु पुष्ट करने के लिए एक उत्तम किन्तु गरीबी नुस्खा

द्रव्य तथा निर्माण विधि—

बबूल की कच्ची फली छाया में सुखाई हुई	६० ग्राम
मौलश्री की सूखी छाल	३६ ,,
शतावर	६० ,,
मोचरस	६० ,,

इन सबको कूट पीसकर छान लीजिए और चूर्ण में २१६ ग्राम मिश्री खूब बारीक पीसकर मिला दीजिए ।

सेवन विधि—पाँच ग्राम यह चूर्ण खा कर ऊपर से दूध पीजिये ।

कैसा भी पतला वीर्य क्यों न हो इस चमत्कारी औषधि से गाढ़ा हो जाएगा । गरीबों के लिए तो सच मानिये यह अदभुत औषधि तोहफा ए-जवानी है ।

धातु पुष्ट चूर्ण का एक और अनुपम योग

जिसके केवल चालीस दिन के सेवन से आप इसका अदभुत चमत्कार देख सकते हैं

द्रव्य तथा निर्माण विधि—

बड़ के पेड़ की कौंपलें	३ ग्राम
गूलर के पेड़ की छाल	३ ,,
मिश्री	६ ,,

तीनों को सिल पर पीसकर लुगदी-सी बना लीजिए और दो-तीन बार में खा लीजिए। ऊपर से दूध पी लीजिए। चालीस दिन के प्रयोग से अदभुत चमत्कार दिखाई देगा। इस योग से पतला वीर्य खूब गाढ़ा होता है।

धातु पुष्ट चूर्ण का एक और अत्योत्तम योग

चीनियां गोंद और बहुफली ६-६ ग्राम, कूट पीसकर छान लीजिए। यह एक मात्रा है। इसको फांक कर ऊपर से दूध पी लो। ४० दिन तक प्रयोग कीजिए और भगवत लीला देखिए। ताकत का समुद्र ठाठें मारने लगेगा। परीक्षित है।

वीर्य को गाढ़ा करने वाला तथा शीघ्र पतन के रोग को दूर करने वाला एक अनुपम योग

इमली के अच्छे साफ बीज लेकर एक किलो तोलकर पानी में चार दिन तक भीगने दीजिए। पीछे निकालकर उनके काले-काले छिलके दूर कर दीजिए और बीजों को सुखा लीजिए सूखने पर कूट पीस और छानकर महीन चूर्ण के बराबर मिश्री मिलाकर रख दीजिए। इसमें से ६ चने के बराबर चूर्ण चालीस दिन तक खाने से वीर्य गाढ़ा होगा और जल्दी स्खलित होने का रोग शान्त हो जाएगा।

एक अत्यन्त सस्ता व सुगम योग

कौंच के कच्चे बीज लाकर छाया में सुखा लीजिए। सूखने पर महीन पीसकर तथा छानकर रख लीजिए। इसमें से ६ ग्राम

से लेकर १२ ग्राम तक चूर्ण गाय के दूध में डालकर औटाइये और पक जाने पर पी लीजिए। इसके सेवन से वीर्य गाढ़ा होता है।

कौंच की फली जंगल में बहुत मिलती है।

इस नुस्खा को गरीबों के लिए वरदान ही समझिएगा।

गेंदे की मसीहाई

नामर्द को मर्द बनाने वाली एक अदभुत सुगम औषधि

गेंदे के बीज ४ ग्राम और मिश्री ४ ग्राम। इन दोनों को पीसकर कुछ दिन खाने से वीर्य खूब गाढ़ा हो जाता है। ज्यों-ज्यों बर्दाश्त होता जाए मात्रा बढ़ाते चले जाइए। "इलाजुल-वर्गा" में २० ग्राम बीज और २० ग्राम मिश्री की एक मात्रा लिखी है।

धातु पुष्ट चूर्ण

द्रव्य तथा निर्माण विधि—

समन्दर-शोष, तालमखाने के बीज और तुख्म-रिहाँ (काली तुलसी के बीज) २४-२४ ग्राम कूट पीसकर छान लो। इसमें से ६ ग्राम से लेकर १० ग्राम तक चूर्ण प्रातःकाल कोरे कलेजे खाइये और ऊपर से धारोष्ण दूध पीजिए। इसके सेवन से गाढा वीर्य खूब बढता है। ६० दिन के सेवन से अच्छा लाभ होता है।

(२)

ढाक के पेड़ की छाल।

ढाक का गोंद।

गूलर की छाल।
गूलर का गोंद।
सेमल की मूसली।
सेमल का गोंद।
भुने चने और बबूल का गोंद।

इन सबको ३६-३६ ग्राम लेकर कूट पीसकर छान लीजिए। इसमें से चार से छः ग्राम तक चूर्ण, सवेरे शाम खाकर, गाय का दूध पीने से निश्चय ही धातु गाढ़ी होती है।

वह औषधि कम से कम एक मास तक खानी चाहिए।

धातु पुष्ट वटी

नामर्दी दूर करने के लिए अदभुत गोलियाँ

द्रव्य तथा निर्माण विधि—

ताजे सूखे केंचुए १२० ग्राम, अजवायन २४० ग्राम। इनको कूट पीसकर ४८० ग्राम गुड़ में मिलाकर १२-१२ ग्राम की गोलियाँ बना लीजिए। इन गोलियों के २१ दिन तक खाने से मर्दाना ताकत पैदा होकर नामर्द भी मर्द बन जाता है।

मात्रा—एक गोली हर रोज सवेरे धारोष्ण दूध के साथ लीजिए।

(२)

कसौंधी की छाल ४८ ग्राम, महीन पीसकर शहद में मिलाकर, १२-१२ ग्राम की गोलियाँ बना लीजिए।

मात्रा—तीन या साढ़े तीन गोलियां। पहले एक गोली से शुरू कीजिए। एक गोली खाकर ऊपर से ढाई सौ ग्राम दूध पीजिए।

इस गोली के सेवन से पतली से पतली धातु गाढ़ी हो जाती है।

मुर्गी के अन्डों का हलवा

जिसके ४८ दिन खाने से शरीर खूब पुष्ट और बलवान हो जाता है

मुर्गी के एक अण्डे की जर्दी,
बताशे तीन नग,
घी ३६ ग्राम।

तीनों को मिलाकर कोयलों की आग पर पकाइए और अच्छी तरह से हिलाते रहिए। जब पक जाये तो शीतल करके खा लीजिये।

४० दिन खाने से शरीर खूब पुष्ट और बलवान हो जाता है। जो लोग अण्डे खाते हैं, वह हलुआ अवश्य खाकर देखें।

घी अपनी इच्छानुसार थोड़ा भी डाल सकते हैं।
और खूब बूढ़े भी जवान हो सकते हैं!

मुक्कवी बाह खोआ

नामर्द को मर्द बनाने वाला एक अदभुत योग

गोखरू १३॥ ग्राम और काले तिल १३॥ ग्राम—इन दोनों को कूस पीसकर और कपड़छन करके एक किलो दूध में डालकर औटाइये। जब खोआ-सा हो जाए, खा लीजिए। इसी तरह रोज बनाइये और रोज खाइये। इस नुस्खे के ४१ दिन खाने और कोई तिला लगाने से बिल्कुल नाकारा नामर्द भी मर्द हो जाता है।

सन्यासी तिनका

नामर्दी की अदभुत चिकित्सा

सफेद चिरमटी ढाई सौ ग्राम, खिरनी के बीज ढाई सौ ग्राम, और लौंग ढाई सौ ग्राम। इन तीनों को महीन कूट पीसकर सात कपरौटी की हुई आतिशो शीशी में भर लीजिए और फताल यन्त्र से तेल निकाल कर शीशी में रख लोजिए। इसमें से एक सींक, पान में लगाकर रोज खाने से, २१ दिन में नामर्द भी मर्द हो जाता है।

नोट—इसकी एक सींक खाने वाले को ऊपर से आध घण्टे बाद एक छटांक घी खाना जरूरी है। अगर रोगी दो सींक खाए तो फिर आध पाव घी खाना जरूरी है।

धातु पुष्ट चूर्ण के चार अनुपम योग

(१)

लोहागार १२ ग्राम, सोंठ ६ ग्राम और सालम मिश्री ६ ग्राम। इन दोनों को कूट पीसकर रख लीजिए। इसमें से ३-४ या ६ रत्ती चूर्ण खाने और गो-दुग्ध मीठा करके पीने से धातु और बल वीर्य खूब बढ़ता है।

(२)

सोंठ, तालमखाना, ईसबगोल, श्याम मूसली, शतावर, पीपर और मुलेहठी। इन सबको बराबर-बराबर कूट पीसकर छान लीजिए। फिर बराबर की पिसी हुई मिश्री मिलाकर रख दो। इसमें से १२ ग्राम चूर्ण गाय के दूध के साथ पीने से प्रमेह, खांसी और श्वांस आदि रोग दूर होकर वीर्य खूब बढ़ता है।

(३)

पुराने सेमल का सुखाया हुआ मूसला ६ ग्राम बारीक पीस

कर ६ माशे चीनी मिलाकर रोज खाइए और दूध पीजिए। ४० दिन में खूब वीर्य बढ़ेगा।

मात्रा—जवानों के लिए १८ ग्राम तक है।

नोट—सफेद मूसली और बराबर का सेमल का मूसला लेकर कूट-पीस और छान लीजिए। फिर चूर्ण के वजन के बराबर मिश्री पीसकर मिला दीजिए।

मात्रा—१२ ग्राम से २४ ग्राम तक।

अनुपान—दूध।

यह नुस्खा रति शक्ति बढ़ाने में अपूर्व है।

(४)

सिरस के बीज ३ ग्राम और ढाक के बीज ३ ग्राम। इनको कट पीस और छानकर ६ ग्राम मिश्री मिलाकर फांकिए। इसके सेवन से बल-वीर्य खूब बढ़ता है।

नपुंसकता पर शास्त्रीय औषधियाँ

धातु-पुष्टिकर चूर्ण

शतावर।
गोखरू।
कौंच के बीजों की गिरी।
तालमखाने के बीज।
सेमर की मूसली।
बटियारा के बीज।
गुलसकरी—हरेक ८४-८४ ग्राम।

इन सब दवाओं को कूट पीस और छान कर वजन कीजिये, जितना चूर्ण हो उतनी ही मिश्री पीसकर मिला दीजिए और चौड़े मुँह की शीशी में भरकर रख लीजिए।

इस चूर्ण का सेवन करने से पतले से पतला वीर्य गाढ़ा और बलवान हो जाता है। धातु पुष्ट करने में यह दवा अव्वल दर्जे की है। इसको यदि कोई आदमी ५-६ महीने तक लगातार सेवन करता रहे तो उसकी शक्ति अत्यधिक बढ़ जाती है। पर दस बीस दिन में यह फल नहीं हो सकता। कम से कम साठ दिन तक तो सेवन करना चाहिए। वीर्य कैसा ही पतला और कमजोर क्यों न हो, इस दवा के प्रयोग से अवश्य गाढ़ा और पुष्ट हो जाता है। पहले इसे ३-४ महीने खाकर उसके बाद मदनानन्द चूर्ण खाना चाहिए।

सेवन विधि—१२ ग्राम चूर्ण को मुख में रखकर, ऊपर से गाय का धारोष्ण दूध पीना चाहिए। दवा दोनों समय सवेरे-शाम खानी चाहिए। स्त्री संग से परहेज रखना अत्यावश्यक है।

नोट—गोखरू बड़ा लेना चहिए, शतावर पश्चिमी लेना चाहिए। सेमल की मूसली पुरानी न हो, कौंच के बीजों की गिरी निकालकर ८४-८४ ग्राम लेनी चाहिए। सब दवाओं को अलग २ कूट कर छान लेना चाहिए और फिर ८४-८४ ग्राम तोलकर मिला लेना चाहिए।

मदनानन्द चूर्ण

सक्काकुल मिश्री, सलम मिश्री, श्याम मूसली, शतावर प्रत्येक ४८-४८ ग्राम, बहमन सुर्ख, बहमन सफेद, तोदरी छोटी, तोदरी बड़ी—प्रत्येक २४-२४ ग्राम, सुखारी के बीज, इन्द्रजौ, जावित्री, जायफल, सोंठ।

कुलीजन – प्रत्येक १२-१२ ग्राम।

निर्माण विधि—इन सब दवाओं को अलग-अलग कूट पोस और छान कर ४८-४८, २४-२४ और १२-१२ ग्राम तोल कर मिलाइये।

सेवन विधि—इस की मात्रा ६ ग्राम की है। एक मात्रा में १२ ग्राम शहद मिलाकर चाट लोजिये। ऊपर से मिश्री मिला दूध पी लीजिए। यदि मौसम गर्मी का हो तो दूध के साथ दवा न खाकर अर्क गाजुबाँ में मिश्री मिलाकर उस से दवा खानी चाहिए।

रोग नाश—इस मदनानन्द चूर्ण का सेवन करने से धातु की क्षीणता और नामर्दी जाती रहती है तथा वीर्य में स्तम्भन शक्ति आती है। इस चूर्ण की जितनी तारीफ करें थोड़ी है। अगर स्त्री संग से परहेज करके छः महीने तक यह चूर्ण खा लिया जाये तो फिर कहना ही क्या।

बानरी चूर्ण

कौंच के बीजों की गिरी, तालमखाने के बीज, सफेद, मूसली, उटंगन के बीज, मोचरस, ऊँटकटारे की जड़ की छाल, बीज बन्द, बहुफली, कमरकस, शतावर, समन्दर शोष।

सूखे सिंघाड़े—हरेक ३६-३६ ग्राम।

बनाने की विधि—इन सबको महीन कूट पीस कर छान लीजिये। इस चूर्ण का सेवन करने से थोड़े दिनों का प्रमेह या धातु क्षीणता आदि नष्ट होकर, धातु खूब पुष्ट होती है। यह चूर्ण कभी फेल नहीं होता।

सेवन विधि—इसकी मात्रा ड़ेढ़ ग्राम से छः ग्राम तक है। हर मात्रा में, मात्रा से आधी पिसो हुई मिश्री मिलाकर, खाने और गाय का धारोष्ण दूध पीने से लाभ होता है। सवेरे-शाम

दोनों समय सेवन करना चाहिए।

किशमिशादि मोदक

किशमिश ४८० ग्राम, श्याम मूसली, सफेद मूसली, सालभ मिश्री, समन्दर सोख, मोचरस, बादाम को मींगी, शतावर, हरेक २४-२४ ग्राम, कुलींजन ६ ग्राम, मिश्री १ किलो।

बनाने की तरकोब—किशमिश बादाम और मिश्री को अलग रखिए। और बाकी सब दवाओं को अलग। किशमिश को पानी में धोकर कांटे वगैरा निकाल कर, साफ कर लोजिए और सुखा लीजिए। बादामों को पानी में धोकर, जरा उबाल कर चाक से कतर लोजिये। मूसली प्रभृति सातों दवाओं को कूट पीसकर छान लीजिए। मिश्री को कलईदार कढ़ाई में रख कर थोड़ा सा अन्दाज का पानी डालकर, गाढ़ी २ चासनी बना लीजिए। जब लड्डुओं के लायक चासनी हो जाए। उतार कर नाचे रख लीजिए। जब कुछ ठंडी हो जाए, उसमें दवाओं का चर्ण जो कि तैयार रक्खा है। तथा किशमिश और बादाम सब डाल कर मिला दोजिए और तीस-तीस ग्राम के लड्डू बनाकर चिकने पात्र में रख दीजिए।

सेवन विधि—सवेरे शाम एक एक लड्डू खाकर, ऊपर से मिश्री मिला कर दूध पीने से वीर्य खूब पुष्ट होता है और शरीर तैयार होता है। जाड़े में खाने योग्य चीज है।

हरशशांक चूर्ण

शुद्ध आमलासार गंधक ६० ग्राम, सेमर की जड़ का चूर्ण ६० ग्राम, दोनों को पीस छान कर एकत्र कर लीजिए। फिर इसमें सेमर की छाल के स्वरस को तीन भावनाएं देकर,

छाया में सुखा लीजिये और बोतल में काग लगा कर रख दीजिए।

सेवन विधि - इसकी मात्रा एक ग्राम से डेढ़ ग्राम तक है। इसकी एक मात्रा खाकर ऊपर से दूध पीने से पुरुष तीन-चार मास में घोड़े के समान शक्ति प्राप्त कर लेता है। इसके सेवन करने से बूढ़ा भी जवान की तरह हृष्ट-पुष्ट और बलिष्ठ हो जाता है। इस चूर्ण की जितनी तारीफ की जाए थोड़ी है।

माषादि मोदक

छिले हुए उड़दों का चूर्ण,
गेहूं का सत्त (निशास्ता)
जौ का सत्त—हरेक ३६० ग्राम,
सांठी के चावलों का चूर्ण १८० ग्राम
छोटी पीपर (शोधी हुई) साठ ग्राम,
घी १ किलो, एक सौ बीस ग्राम,
चीनी सवा दो किलो,

बनाने की विधि—पहले चीनी को छोड़कर बाकी चीजें घी में मन्दी आग पर भून लीजिये। जब चूर्ण लाल हो जाय और सुगन्ध आने लगे, उतार लीजिये। फिर चीनी की चाशनी गाढ़ी गाढ़ी बना लीजिये। जब लड्डुओं लायक चाशनी हो जाए, उसमें भुना हुआ चूर्ण डाल दीजिए। ऊपर से बादाम, पिस्ते और किशमिश आदि मेवे ढाई-ढाई सौ ग्राम कतर कर डाल दीजिए और साठ-साठ ग्राम के लड्डू बना लीजिए। एक-एक लड्डू खाकर दूध पीने से बेइन्तहा बल-वीर्य बढ़ता है और धातु पुष्ट होती है और अव्वल दर्जे की रति शक्ति बढ़ाने वाली चीज है।

बानरी गुटिका

कौंच के बीजों की गिरी सवा किलो लेकर कूट पीसकर छान लीजिये। फिर इस चूर्ण को गाय के दूध में बेसन की तरह सान लीजिए और पकौड़ी बनाने लायक ढीला गाढा रख लीजिए। कढ़ाई में घी डाल कर मन्द आग पर चढ़ाइये और उसमें पकौड़ियाँ तैयार कर लीजिये। उधर मिश्री की गाढ़ी २ चाशनी बना कर तैयार रखिए। पकोडियों के तैयार होते ही चाशनी में डाल दीजिये। जब पकौड़ियां खूब चाशनी पी लें। तो शहद से भरे एक बर्तन में उनको रख दीजिए और ऊपर से मुँह बांध दीजिये।

सेवन विधि—जवान के लिये मात्रा २४ ग्राम है। बलाबल अनुसार मात्रा घटा बढ़ा लीजिए। सवेरे शाम एक-एक मात्रा खाने से परले सिरे का नपुंसक भी पुरुषत्व लाभ करता है। प्रथम श्रेणी की बाजीकरण दवा है।

कामिनी मदमज्जन मोदक

शतावर, कौंच के बीजों की गिरी, तालमखाने के बीज, मुलेहठी छिली हुई, नागौरी असगन्ध, नागबला की जड़ की छाल, अतिबला की जड़ की छाल, प्रत्येक साठ-साठ ग्राम, गाय का दूध पाँच किलो, चीनी ढ़ाई किलो, शुद्ध देशी घी आधा किलो।

बनाने की विधि—पहले दूध के ऊपर की सातों चीजों को कूट पीस कर छान लीजिए इसके बाद दूध को मन्दाग्नि पर औटाइये। जब दूध चौथाई जल जाये, उसमें दवाओं के चूर्ण को डालकर कलछी मे बराबर चलाते रहिए। जब खोया हो जाये नीचे उतार लीजिये।

कढाई साफ करके उसमें आधा किलो घी डालकर पकाइये, उसमें दवाओं के मिले मावे को डालकर मन्दी आग पर भूनिए। जब सुगन्ध आने लगे, खोये पर सुर्खी आ जाये, पर जले नहीं तब उतार लीजिए।

चीनी की चाशनी गाढ़ी-२ तैयार कर लीजिए। जब चाशनी तैयार हो जाए,उसमें खोया जो भुना रक्खा है डाल दीजिये और खूब चलाकर उतार लीजिए। १२५ ग्राम बादाम, १२५ ग्राम पिस्ता, १२५ ग्राम चिलगोजा, और १२५ ग्राम किशमिश—जो कि पहले से ही कतरे तैयार हों मिला दीजिए और साठ-२ ग्राम के लड्डू वना लीजिए।

सेवन विधि—सवेरे शाम एक २ लड्डू खाकर, ऊपर से गाय का मीठा मिला दूध पीजिए।

जाड़े के तीन महीने इनका सेवन करने से इतना बल-पुरुषार्थ बढ़ता है, जिसकी हद नहीं। कितने ही दिनों का नामर्द मर्द वन जाता है।

महा पुष्टिक योग

नये बिनौलों की गिरी, बादाम की गिरी, उड़द की धुली दाल प्रत्येक ६० ग्राम। काले तिल ३६ ग्राम। शतावर, सफेद मूसली, असगन्ध, कौंच के बीजों की गिरी, तालमखाना, गोखरू दक्खिनी, बीज बन्द, सालभ मिश्री, सकाकुल मिश्री, बहमन सुर्ख, मीठा कूट, मुलहठी, कीकर का गोंद, दालचीनी, जायफल, अकरकरहा, लौंग, छोटी इलायची—प्रत्येक १२-१३ ग्राम।

केशर ६ ग्राम।

बनाने की विधि—(१) पहले बिनौले की गिरी, बादाम की गिरी, उड़द की दाल और तिल को सिल पर पीसकर अलग-२ पिट्ठी बना लीजिए।

(२) फिर शतावर से छोटी इलायची तक की दवाओं को कूट-पीसकर कपड़े में छान लीजिए।

(३) केशर को गुलाबजल में घोट लीजिए।

(४) चारों तरह की पिट्ठियों को २५० ग्राम घी में भून लीजिए।

(५) फिर सब दवाओं से दूना एक किलो देशी बूरा की चाशनी बना लीजिए। चाशनी में भुनी हुई पिट्ठियों को मिला दीजिए। और खूब घोटिए। इसके बाद सब दवाओं का चूर्ण और केशर भी मिला दीजिए। फिर चाशनी जमाकर बरफी काट लीजिए तो घी से चुपड़ी थालों में उसे फैला दीजिए और टुकड़ियां काट लीजिए या २४-२४ ग्राम के लड्डू बना लीजिए।

सेवन विधि—इस पाक की मात्रा २४ ग्राम की है। एक लड्डू या २४ ग्राम पाक खाकर, ऊपर धारोष्ण दूध या चीनी मिला हुआ औटा हुआ दूध पीजिए। यह पाक अत्यन्त पुष्टि-कारक, वीर्यवर्द्धक, बलकारक और काम दीपक है।

वीर्य वर्द्धक मोदक

(क) निशास्ता एक किलो एक सौ पच्चीस ग्राम।
खोया एक किलो एक सौ पच्चीस ग्राम।
घी एक किलो एक सौ पच्चीस ग्राम।
मिश्री—दो किलो ५०० ग्राम।
(ख) बादाम की गिरी १२० ग्राम।
चिलगोजे की गिरी ६० ग्राम।
पिस्ता ६० ग्राम कद्दू की मींगी २४ ग्राम।
नए बिनौलों की मींगी २४ ग्राम।

(ग) दाल चीनी, सकाकुल मिश्री, सालभ मिश्री, सफेद मूसली, शतावर, कौंच के बीजों की गिरी, चिलमिली के बीज, बहमन सफेद, बहमन सुर्ख। प्रत्येक २४-२४ ग्राम।

सोंठ ६० ग्राम। अगर, तगर, कुलींजन, मीठा कूट, काली मिर्च, कपूर कचरी—प्रत्येक १२-१२ ग्राम।

छोटी इलायची के बीज, बड़ी इलायची के बीज—प्रत्येक ६ ग्राम।

निर्माण विधि—(१) (क) की बादाम की गिरी वगैरह पाँचों चीजों को सिलपर अलग २ पीसकर पिट्ठी बना लीजिए।

(२) (ख) की दालचीनी वगैरह दवाओं को कूट-पीसकर कपड़ में छान लीजिए।

(३) (क) के गेहूं के सत और खोए को घी में भून लीजिए।

(४) मिश्री की चाशनी बनाकर, उसमें भुना हुआ निशास्ता, खोया पिट्ठी और दवाओं के चूर्ण मिलाकर ३६-३६ ग्राम के लड्डू बना लीजिए।

सेवन विधि—सवेरे शाम एक २ लड्डू, गाय के दूध के साथ खाने से शरीर पुष्ट होता, बल वीर्य बढ़ता और दिल दिमाग में ताकत आती है। यह एक अत्यन्त हृदय-बाजीकरण मोदक है।

———

सातवां अध्याय

उपदंश

वैद्यक नाम—उपदंश

युनानी नाम—आतशक

अंग्रेजी नाम—सिफलस (Syphillis)

प्रसिद्ध नाम—गरमी, फिरंग

आतशक भयानक रोगों में से एक है और यह वेश्याओं तथा बदकार औरतों के साथ सम्भोग करने से लग जाता है। इस रोग में सम्भोग करने के कुछ दिन के बाद इन्द्री पर छोटी सी फुंसी पैदा हो जाती है जो कि जल्द ही फैलकर व्रण (जख्म) बन जाती है आतशक नर और मादा दो प्रकार का होता है। नर का प्रभाव इन्द्री पर होता है। मादा का प्रभाव रक्त पर होता है, जो शरीर पर फूट निकलता है। इसका प्रथम घाव मामूली होता है लेकिन यदि इसकी चिकित्सा में लापरवाही बरती जाये या देर की जाये तो यह रोग पीढ़ियों तक पीछा नहीं छोड़ता। इसके प्रथम श्रेणी के घाव इन्द्री पर होते हैं और दूसरी श्रेणी में शरीर पर काले दाग तथा तांबे के रंग की फुंसियां और धीरे २ घाव भी हो जाते हैं। तीसरी श्रेणी में आतशक का प्रभाव हड्डियों में चला जाता है और बड़े २ घाव कोढ़ियों के समान हो जाते हैं तथा नाक की हड्डी गल जाती है। यदि आतशक के कीटाणु दिमाग पर आक्रमण करें तो रोगी को अधरंग हो जाता है और अन्त में रोगी मृत्यु को प्राप्त हो जाता है। इस लिए इस रोग के इलाज में कभी भी

लापरवाही नहीं करनी चाहिए और जरा से लक्षण दिखाई देने पर फौरन पूर्ण इलाज करवा लेना चाहिए।

चिकित्सा

मुण्डी और गिलोय बराबर लेकर कूट पीस छानकर संध्या सवेरे चार चार ग्राम की मात्रा से, शहद में मिलाकर शीतल जल के साथ बराबर, नियमपूर्वक सेवन करने से उपदंश वात-रक्त, कोढ़ और पारे के विकार दूर हो जाते हैं।

मुण्डी और उशवा—दोनों का काढ़ा बनाकर और उसमें शहद डालकर पीने से उपदन्श और पारे के विकार नष्ट हो जाते हैं।

नोट—मुण्डी और उशवा का अर्क भभके से खींचकर २४ ग्राम अर्क में ६ ग्राम शहद मिलाकर पीने से उपदन्श आदि नष्ट हो जाते हैं।

कड़वे नीम की एक पाव छाल लाकर पानी से धो लीजिये और उसे एक मिट्टी के बर्तन में रख दीजिये। ऊपर से खौलता हुआ पानी एक किलो उस पर डालकर मुंह ढक दीजिए और रात भर रखा रहने दीजिये। सवेरे उसमें से ४८ ग्राम पानी पीजिए। लगातार १५ दिन तक इस तरह का बनाया जल पीने से उपदंश, बाघी, बूद और चट्टे तथा प्रमेह रोग नष्ट हो जाते है। अनेक बार एक सप्ताह में आराम हो जाता है। इसका सेवन करते समय घी, चीनी और गेहूं की रोटी के सिवा और कुछ न खाना चाहिए।

तरबूज का एक चौकोर टुकड़ा काट कर उसमें २५० ग्राम चीनी भरकर उसको बन्द करके रात के समय ओस में रख

दीजिए। सवेरे ही उसका पानी पीनें से इन्द्रिय के चट्टे, फुंसी और पेशाब की जलन मिट जाती है।

त्रिफला, नीला थोथा, और उशबा बराबर २ लेकर एक सौ नींबुओं के रस में लोहे के बर्तन में रखकर खरल कीजिये। जब गाढ़ा हो जाए, चने समान गोलियां बना लीजिए। एक गोली पानी के साथ, रोज निगल जाने से, उपदन्श को आराम हो जाता है।

नोट—साथ साथ घावों को त्रिफले के काढे के साथ धोइये इसके बाद कनेर की जड़ घिसकर घावों पर लगा दीजिए। निश्चय ही उपदन्श नष्ट हो जाएगा।

अगर उपदंश की वजह से शरीर पर फोड़े फुंसी हो जायें तो मुण्डी, पित्तपापड़ा, उशबा और चिरायता ६-६ ग्राम भिगो दीजिए। और सवेरे ही छानकर मिश्री मिला कर पीजिये।

मेंहदी के पत्तों का रस ४८ ग्राम निकाल कर उसमें २४ ग्राम मिश्री मिला कर १०-१२ दिन तक पोने से आतशक या गरमी का दाह शान्त हो जाता है।

आठवाँ अध्याय

सूजाक

प्रसिद्ध नाम—सुजाक
वैद्यक नाम—मूत्रकृच्छ
तिब्बी नाम—कुरहा मुजरा उलकुजैब
डाक्टरी नाम—गनोरिया

रोग विवरण

यह रोग भी आतशक की भाँति गंदा स्त्रियों के साथ सम्भोग करने से पैदा होता है। इसमें सम्भोग के कुछ दिन बाद रोगी के पेशाब में जलन होनी शुरू हो जाती है। पेशाब करते समय इतनी अधिक जलन और चुभन होती है कि रोगी सचमुच कराहता है और पेशाब करने से घबराता है। कुछ दिन बाद इन्द्री में से हर समय पीप निकलनी शुरू हो जाती है। कभी-२ पेशाब के साथ खून भी आ जाता है। ज्यों ज्यों यह रोग पुराना होता जाता है, पीड़ा और जलन घटती जाती और पीप बहती रहती है। यदि यह पीप रोगी की आँखों पर लग जाये तो उसके अंधा होने का डर रहता है। इसलिए इस रोग के जरा से लक्षण दिखाई देने के साथ ही इसका उचित और पूर्ण इलाज करा लेना चाहिए।

सुगम योग

चिकित्सा—६ ग्राम कलमी शोरा, और ६ ग्राम बड़ी इलायची के बीज, दोनों को मिलाकर, लाल साठी चावलों के

धोवन साथ, सात दिन सेवन करने से सुजाक को आराम हो जाता है।

सहजने का गोंद १२ ग्राम, गाय की २५० ग्राम दही में मिलाकर केवल ११ दिन तक खाने से सुजाक को आराम हो जाता है।

सवेरे शाम तीन-तीन रत्ती भुनी फिटकरी शहद में खाने से पुराना सोजाक को निश्चय ही आराम हो जाता है।

त्रिफले के पानी में चने भिगो कर नित्य सवेरे खाने से सोजाक दूर हो जाता है।

राल और शक्कर बराबर बराबर लेकर पीस लीजिये। इसमें से तीन-तीन ग्राम चूर्ण सवेरे शाम खाने से सोजाक की पीप आनी बन्द हो जाती है।

बबूल की कोंपल एक १२ ग्राम और गोखरू १२ ग्राम—दोनों का रस निकाल कर और जरा सी चीनी मिलाकर पीजिये सोजाक नष्ट हो जायेगा।

दो रत्ती गन्दा बिरोजा गुड़ में मिला कर खाने से और ऊपर से पानी पीने से सोजाक का रोग मिट जाता है।

७ ग्राम जवाखार, गाय की दही में पीने से, सोजाक को आराम हो जाता है।

सवेरे ही वटवृक्ष का दूध दो बताशे भर कर खाइये। तीन दिन में सोजाक मिट जायेगा।

केले के खम्बे का रस निकाल कर पोने से सोजाक को आराम हो जाता है।

सोजाक पर विशेषातिविशेष योग

नवीन मूत्रकृच्छ का प्रथम विशेष योग

फिटकरी १२० ग्राम, कलमी शोरा ६० ग्राम। फिटकरी को सूक्ष्म पीसकर इसमें से आधी किसी मिट्टी के कूजे के भीतर डालें और इस पर कलमी शोरा बारीक पिसा हुआ डालें। फिर दूसरी बार शेष बची हुई फिटकरी को शोरे पर डालकर कूजे के मुख को कपड़मिट्टी करके दस किलो उपलों की आग दें। ठण्डा होने पर कूजे में से पत्थर की भाँति जमी हुई श्वेत औषधि निकाल लें और सूक्ष्म पीसकर शीशी में सुरक्षित रखें। मात्रा १ से २ ग्राम तक दूध की लस्सी से दिन में दो बार दें। नवीन मूत्रकृच्छ के लिए बड़ा ही लाभदायक और अमूल्य योग है। प्रभु की कृपा से केवल एक सप्ताह के भीतर ही स्वास्थ्य लाभ होकर इस घोर व्याधि से मुक्ति प्राप्त हो जाती है।

ऐसा ही एक और योग

योग—शोरा कलमी २५ ग्राम, जल २५ ग्राम। दोनों को किसी लोहे की कड़ाही में डालकर भलीभाँति दहकते हुए अंगारों पर रखें। जब खौलने लगे तो १ ग्राम रूमी मस्तगी सूक्ष्म पिसी हुई डाल दें। सारा जल सूखने पर श्वेत रंग की औषधि रह जायेगी। इसको बारीक पीसकर काम में लायें। मात्रा—१ ग्राम प्रातः बताशों के शर्बत से दिया करें। मूत्र की जलन और नये मूत्रकृच्छ को असीम लाभप्रद है। अधिक से अधिक एक सप्ताह तक सेवन कर लेना पर्याप्त है।

अकसीर मूत्रकृच्छ (विशेष योग)

योग—रीठे का छिलका १० ग्राम, बंसलोचन २० ग्राम,

इलायची छोटी के बीज १० ग्राम, घर पर बनाया हुआ सत गिलोय ५ ग्राम, विशुद्ध चन्दन का तैल २५ ग्राम।

विधि—सब औषधियों को भलीभांति अलग अलग सूक्ष्म पीसकर मिलायें और फिर चन्दन का तैल मिलाकर इतना खरल करें कि गोलियां बांधने के योग्य हो जाये। फिर गोलियां चने के परिमाण की बनाकर सुरक्षित रखें।

प्रयोग विधि—दो गोली प्रातः दो गोली सायं ४ बजे के समय शर्बत बजूरी अथवा दूध की लस्सी अथवा ताजे जल से ऋतु का विचार करके सेवन कराते रहें। प्रभु की कृपा से इस औषधि द्वारा इस दुष्ट रोग की जड़ें कट जायेंगी और फिर आयु भर न होगा। लगभग पन्द्रह, बीस दिन सेवन करना पर्याप्त है। यह योग रोग की प्रारम्भिक अवस्था और उसके बाद की दूसरी अवस्था में (जब रोग को कुछ लाभ हो) भी समान लाभप्रद है।

यह योग एक यूनानी हकीम द्वारा प्रदत्त योगों में से एक है। मैं आपको हार्दिक धन्यवाद देता हूं।

सूचना—चन्दन का तैल मैसूरी असली किसी विश्वासपात्र औषधालय से लेना चाहिए अन्यथा साधारण व्यापारियों से क्रय किये हुए तेल से लाभ की थोड़ी आशा है।

आश्चर्यजनक योग

योग—गन्धक आमलासार १ ग्राम, जन्तियाना २ ग्राम, सूर्यतापी शिलाजीत ४० ग्राम, खीरे तथा ककड़ी की मींगो अधकुटी ५ ग्राम।

विधि—सब औषधियों को एक कलईदार पात्र में डालकर ऊपर से ७०० ग्राम पानी डालें और चूल्हे पर रखकर क्वाथ करें। जब लगभग १०० ग्राम शेष रहे तब उतार कर, कपड़े में से

छानकर ३५ ग्राम विशुद्ध मधु मिलाकर पिला दें। प्रभु की कृपा से एकही दिन में स्वास्थ्य लाभ हो जायेगा। इस अनूठी औषधि के साथ दोनों समय गेहूं की रोटी देशी घी के साथ खायें और कोई चीज न खायें।

गोखरू, शिलाजीत, तालमखाना, बट जटा और चन्दन चूर्ण को तैयार कर लेवें। इसको धारोष्ण गोदुग्ध के साथ सेवन कराने से सूजाक में फायदा होता है। राल, माजूफल, सफेद कत्था, गुर्च का सत्त और शीतल चीनी को समभाग लेकर चूर्ण तैयार कर लेवें। इसको धारोष्ण दूध अथवा चन्दनासव के साथ सेवन कराने से लाभ होता है। प्रमेह मिहिर तैल से भी सूजाक में बहुत ज्यादा लाभ होता है।

रसौत, गुलाब और त्रिफला को रात को भिगो देने के पश्चात सुबह में पिचकारी देने से सूजन, जलन, तथा जखम अच्छा हो जाता है। पिचकारी लगाते समय बहुत धीरे २ धार देना उचित है। एसिड बोरिक एवं परमैंगनेट आफ पोटास की भी पिचकारी से लाभ होता है।

नीम की पत्ती, बकायन की पत्ती, चमेली की पत्ती, मेंहदी की पत्ती और त्रिफला को पानी में भिगोकर काढ़ा बना लेने के पश्चात पिचकारी लगाने से अन्दर का जख्म शीघ्रही भर जाता है तथा सूजन एवं पेशाब रुकने आदि में भी लाभ पहुंचाता है।

सूजाक पर महात्मा प्रयोग—सफेद जीरा, फिटकरी, शीतल

चीनी सफेद कत्था, कपूर, रूमीमस्गी, चन्दन चूर्ण, जवाखार, गुर्च का सत, गुलाब का फूल, त्रिफला, हल्दी और कलमी शोरा प्रत्येक एक २ तोला लेवें। प्रथम दिन आँवले के रस में, दूसरे दिन सौंप के अर्क में और तीसरे दिन बबूल की तरल गोंद में घोटकर एक तोला बंगभस्म, एक तोला स्वर्ण माक्षिक भस्म तथा २।। तोले मधु मिलाकर दो रत्ती प्रमाण गोलियाँ तैयार कर लेवें। यह बहुत ही उत्तम दवा है। इससे सूजाक रोग में केवल एक सप्ताह में ही फायदा नजर आता है। अनुपान—धारोष्ण दूध अथवा शंखपुष्पी की जड़ का स्वरस।

नपुंसकता और सुजाक रोग पर तो पेटण्ट दवा की कठिन भरमार देखने में आती है। डा० रामकृष्ण शर्मा द्वारा लिखित एक दवा देखिये—

पपरिया कत्था ३।। तोला, सफेद इलायचीदाना १ तोला, बालसम कोपाइवा ६ माशे और तैल चन्दन दो माशे को एकत्र कर चूर्ण तैयार कर लेवें। एक तोले का दाम २। रु० है और लागत लगभग छः आने हैं। इस दवा का अनुपान दूध है।

हब्बे सूजाक—खतमी का बीज एक भाग, ककड़ी के बीज की गिरी एक भाग, खुरफा का बीज आधा भाग खसखस का बीज आधा भाग और खीरा का बीज दो भाग (कुछ ईसबगोल भी है) ईसबघोल के लुआब से उक्त दवाओं के चूर्ण का एक एक माशा प्रमाणगोली तैयारकर शीतलजल के साथ सेवन करानें

से प्रथमावस्था में लाभ होता है। लेकिन लखनऊ के पेटेन्ट कर्त्ता ओं का कथन है कि इससे सूजाक जड़ से आराम हो जाता है। (डाक्टर रामकृष्ण वर्मा।)

महात्मा प्रयोग—सूजाक में बिरोजे का तेल, चन्दन का तैल और राल को मिलाकर तीन माशे मात्रा में सेवन कराने से लाभ होता है। मगर हाँ, चन्दन तेल और बिरोजा तेल के प्रयोग के साथ २ रोगी की पाचन शक्ति के और गठिया वात रोग से सावधान रहना परमावश्यक है। इस रोग में हल्का बलकारक पथ्य देना चाहिए।

पथ्यापथ्य—लाल मिर्च, गर्म मसाला तथा किसी भी उत्ते-जक वस्तु को नहीं खाना चाहिए। स्त्री प्रसंग से बिल्कुल अलग रहना नितान्त जरूरी है।

॥ समाप्त ॥

हिन्दी अंग्रेजी पत्र-व्यवहार

लेखक—के. सी. माथुर

इस युग में पत्र व्यवहार जीवन का प्रमुख अंग बन चुका है दफ्तरों में, नौकरी के लिये एवं व्यापार आदि हर स्थान पर अच्छा पत्र-व्यवहार आना आवश्यक है। यह पुस्तक हिन्दी व अंग्रेजी दोनों भाषाओं में प्रत्येक प्रकार के अच्छे पत्र लिखने का ज्ञान सिखाती है। इस पुस्तक की सहायता से हर प्रकार के पत्र लिखने में सहायता मिलती है और तरीका भी आता है। विद्यार्थियों, क्लर्कों व आम जनता के लिए उपयोगी है।

मूल्य ४-०० रुपये

हिन्दी इंगलिश ग्रामर

बिना व्याकरण के भाषा का ज्ञान नहीं होता है। इंगलिश भाषा की कठिन ग्रामर को बड़े ही सरल ढंग से इस पुस्तक में समझाया गया है। इसको पढ़कर आप इंगलिश की व्याकरण सम्बन्धी भूलों से हमेशा के लिए छुटकारा पा सकते हैं।

मूल्य केवल ४-०० रुपये मात्र

कमला कढ़ाई कशीदाकारी

—कमला बी. ए.

क्रिरोशिया, क्रासस्टिच तथा सादा कढ़ाई तीनों प्रकार की कशीदाकारी सीखने के लिए यह एक ही पुस्तक पर्याप्त होगी। इसकी सहायता से चद्दरें, मेज पोश, पेटीकोट तथा अन्यान्य प्रकार की सारी चीजें आपके घर पर ही बन सकेंगी। दहेज में देने तथा लड़कियों को पारितोषिक में देने के लिए अत्यन्त उपयोगी है।

मूल्य ८-०० रुपया

सचित्र रेडियो गाइड

रेडियो के सिद्धान्त, बिजली के सिद्धान्त, रेडियो की सामग्री और उससे हर प्रकार के रिसीवर बनाना, ट्रांजिस्टर रेडियो तैयार करना, रेडियो में पैदा हुए दोषों को ठीक करना, नये रेडियो सैट तैयार करना व खराब रेडियो को सुधारना अनेकों चित्रों द्वारा सम्पूर्ण रूप में समझाया गया है। अपना रेडियो घर में ही बनाइये। मूल्य ८.०० रुपये

वर्कशाप गाइड

इस पुस्तक में इन्जीनियरिंग वर्कशाप कारखाने में होने वाले सारे काम यानि खराद, मिलिंग, वैल्डिंग, टांका लगाना, ढलाई, धातुओं की किस्में, ताकत, पैमाईश, फिटिंग के काम मय चित्रों के समझाये गए हैं। यह किताब कारीगरों की जान और हुनरों की खान है जिसकी आजकल बड़ी जरूरत है।

मूल्य ६.०० रुपये

रंगाई, धुलाई व ड्राईक्लीनिंग

इस किताब में ड्राईक्लीनिंग मशीन व हाथ द्वारा ऊनी सूती व हर तरह के कपड़ों के धोने का पूरा २ विवरण है। धुलाई करना, प्रेस करना, कपड़ा अनेक तरह के रंग में रंगना आदि सरलता से लिखा गया है जिससे आप भी बड़ी आसानी से सीख सकते हैं। धोबियों के बड़े काम की किताब है इसकी सहायता से प्रत्येक व्यक्ति स्वयं अपने सूती ऊनी कपड़ों को ड्राईक्लीनिंग कर सकता है।

मूल्य ४.०० रुपये

साबुन तेल शिक्षा

—एस. आर. तस्कीन

हर प्रकार के साबुन और खुशबूदार तेल बनाकर बिक्री करें तथा घर पर काम में लावें। बाजारू तेल जिनमें आजकल मिट्टी के तेल की मिलावट आ रही है जो बालों को अत्यन्त हानिकारक है उनसे सदैव को छुटकारा प्राप्त कीजिए।

मूल्य ३-५०

सिलाई कटाई शिक्षा

—मास्टर केशोराम

आजकल के नये-नये फैशन के कपड़ों की कटाई, छंटाई, सिलाई जानने के लिए यह पुस्तक अत्यन्त उपयोगी है। इसकी सहायता से आप हर फैशन के हर तरह के कपड़े सी सकते हैं। इसमें कपड़ा काटने, सीने और नाप लेने की तरकीबें चित्रों सहित समझायी गयी हैं। इस पुस्तक की सहायता से आप घर घर ही हर किस्म के कपड़े तैयार कर सकते हैं। दर्जियों के लिए तो यह पुस्तक अव्वल दर्जे की है। मूल्य ५-०० रुपये

अचार, चटनी, मुरब्बे बनाना

इस पुस्तक में सभी प्रकार के सैकड़ों अचार, चटनी, मुरब्बे बनाने का काम विस्तार से बड़ी सरल भाषा में बतलाया गया है। आम, नीबू, मिर्च अन्य सब्जियां आदि के अचार डालना आम, आँवला, गुलकन्द, सेव, हरड,बेलगिरी आदि के मुरब्बे बनाना, सैकड़ों तरह की चटनी बनाना आदि बतलाया गया है प्रत्येक स्त्री, प्रत्येक परिवार के लिए बड़ी उपयोगी पुस्तक है।

मूल्य ३-५०

बड़ा इन्द्रजाल (सचित्र)

यदि आज तक आपको असली इन्द्रजाल की पुस्तक नहीं मिली है तो आप हमारे यहाँ से असली और पुराने छापे की पुस्तक मंगवायें। यह मनुष्य, पशु और पक्षियों को मोहित करना, भैरव की चौकी रखना, सर्प और बिच्छू का विष उतारना भूत प्रेत को वश में करना, मुकदमे में विजय पाना, सबके सामने अन्तर्ध्यान हो जाना, बिना दीपक उजाला करना, जल में पत्थर तैराना, कटे सिर से बात चीत करना आदि ऐसी सैकड़ों वातों से भरपूर है। मूल्य ५.०० रुपये

बृहद इन्द्रजाल—कौतुक रत्न भण्डार
इन्द्रजाल विद्या का पूर्ण खान मूल्य ६.०० रुपये

सभी प्रकार से उत्तम अन्य पुस्तकें

आसाम बंगाल का जादू	२.००
चीन बंगाल का जादू	२.००
सचित्र करामात	३.५०
मिश्र का जादू	३.५०
कामरूप देश का जादू	२.००
ताश का जादू	१.५०
कौवा तन्त्र	५.००
उल्लू तन्त्र	५.००

हर प्रकार की पुस्तकें मंगाने का पता

रतन एण्ड को० बुकसेलर्स, दरियागंज नई दिल्ली-६